शिवोम् वाणी

पंचम् खण्ड

स्वामी शिवोम् तीर्थ

PhotoScan by Google Photos

शिवोम् वाणी

पंचम खण्ड

स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम्- वाणी

(पंचम खण्ड)

प्रकाशक

स्वामी शिवोम् तीर्थ

श्री विष्णुतीर्थ साधना सेवा न्यास

१२/३ ओल्ड पलासिया, इन्दौर (म.प्र.)

प्रथम संस्करण

३० जनवरी १९९४

प्रति- ३०००

फोटो टाइपसेटिंग

स्टार कम्प्यूटर एण्ड ग्राफिक्स ४/१, नयापुरा इन्दौर

मुद्रक अनय प्राफिक्स

इन्दौर

मूल्य २०/- रुपये

दो शब्द

पूज्य श्री सदगुरु देव महाराज के अन्तस से स्वयं स्फूर्त्त "शिवोम् वाणी" के पंचम खंड पर 'दो शब्द' लिखने का गुरुत्तर भार मुझे सौंपा गया है। वास्तव में 'शिवोम् वाणी' वेदवाणी के समकक्ष साक्षात् शिव वाणी है। मैं अकिंचन, अल्प बुद्धि सूर्य को दीपक दिखलाने जैसा प्रयत्न ही कर सकता हूं। एक वर्ष के अल्पकाल में 'शिवोम् वाणी' का पंचम खंड शक्तिपात परम्परा के दीक्षित पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इतने काव्य पदों का इतने अल्प काल में सृजन कर देना आल्हादिनी शक्ति की कृपा का ही प्रतिफल है।

शक्तिपात परंपरा पर अनेक रचनओं द्वारा साहित्य सृजन करना और उसके साथ ही साधकों को आध्यात्मिकता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाने वाले 'शिवोम् वाणी' के पाँच खंडों का सृजन कर देना किसी सामान्य जन का कार्य नहीं, अपितु एक शक्तिपाताचार्य संत के अन्तस से आल्हादिनी शक्ति के विभिन्न रूपों का प्रस्फुटन है।

श्रीमद गुरुदेव महाराज वर्तमान में उन सात महात्माओं की श्रेणी में अपना स्थान बना चुके हैं। जिन्होंने अध्यात्म के क्षेत्र में अनेक काव्य- ग्रंथों की रचना की थी। यदि हम संत शिरोमणि सूरदास, प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास तथा मीराबाई की रचनाओं को भक्ति की संज्ञा देते हैं तो 'शिवोम्-वाणी' गुरु-शक्ति से ओत-प्रोत है। 'शिवोम्- वाणी' में सूरदास का दैन्य भाव, मीरा की अपने प्रियतम गिरधर गोपाल से मिलने की छटपटाहट, तुलसी के भक्ति, विनाया एवां सामार्पणा भावा याात्र, तत्र, समर्वत्रटदर्शनीस है । शिवोम् - वाणी के भक्ति पदों में कबीर की पाचावाडाना मस्ती के साथ मधुर सूफी अंदाज की झलक भी है।

शक्तिपात परंपरा के साधकों के लिए तो 'शिवोम् - वाणी" के पद मंत्रवत् ही हैं इनका जितनी बार भी पठन किया जाए, गायन, श्रवण,

चिन्तन, मनन किया जाए साधकों को उनसे उतना ही अधिक आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त शक्तिपात की साधन प्रणाली को समझ कर अनुभव करने में सहायता मिलेगी तथा अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने में सहयोगी होंगे।

'शिवोम वाणी' के पाठक की चित्त शक्ति पर गुरु शक्ति निस्संदेह ऐसी चोट करेगी कि वह अपने जीवन को एकदम परिवर्तित अनुभव करेगा और उसकी त्रुटियों में सुधार होना प्रारंभ हो जाएगा तथा कर्तापन के भाव को त्यागकर ईश्वरीय शक्ति की क्रियाओं का प्रत्यक्ष अनुभव करने लगेगा। दीक्षित साधक, गुरु भाई एवं शिष्यों से ऐसी आशा करता हूं कि वे 'शिवोम्-वाणी' को हृदयंगम कर अपने साधन पथ पर अग्रसर होकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करेंगे- क्योंकि मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता, जीवन का प्रतिपल द्रुत गति से बीत रहा है। इस अमूल्य अवसर को हाथ से न निकलने दें। इति शुभम्।

योगश्री की पीठ आश्रम

ऋषिकेश (हिमालय)

अनुक्रमणिका

मेरे गुरुदेव

१.विष्णु तीर्थ प्रभु	१
२.जागो, जागो, जागो	२
३.मैं तो तीर्थहिं	३
४.तीर्थ वही जो निर्मल कर दे	३

गुरु महिमा

१.गुरुदेव कृपा करना	४
२.कोई मो को गुरु मारग बतलावे	५
३.मन लागा श्री गुरु चरनन में	६
४.सद्गुरूदेव तुम्हीं हो	६
५.गुरुदेव असीम कृपा	७
६. गुरु बिन बिरथाथ	८
७. मुझे सतिगुरु लिए	८
८.आज घर गंगा	९
९.गुरुदेव की मुझ पर	१०
१०. राम नाम धन पायो	११
११. गुरू किरिपा वर्षा	१२
१२.हे मेरे गुरुदेव।	१३
१३.न टूटे, न टूटे माला	१४
१४.गुरु से नेह लगा	१४

विनय

१.मैं विषयन	१५
२.नाम तेरा	१६
३.केशव लीजो	१७
४.नैया मोरी टूटी	१८

५.प्रभुजी ! मेरी ओर निहारो	१८
६.तुम छुपते रहते	१९
७.मेरा बीतत जाए	२०
८.मैं तो	२०
९.गुरुदेव मुझ रंग	२१
१०.राम तेरी लीला	२२
११.प्रभु तुम मन में	२२
१२.हरि तुम दर्शन दीजो	२३
१३.हे प्रभु तेरे सिवा	२४
१४.अपना बनाओ	२४
१५.मेरी बिगड़ी बनाओ	२५
१६.छुट जाए दाग	२६
१७.मैं तेरा ही	२६
१८.अपना बनाया	२७
१९.प्रभु मैं कैसे	२८
२०.प्रभु आओ	२८
२१.मैं घुंघट ओढ़े बैठी	२९
२२.भगवान बुला लो	३०
२३.तुम पतवार चलावो	३०
२४.अब तेरा एक सहारा	३१
२५.मोह नहीं पीछा	३१
२६.प्रभु मेरा घूँघट	३२
२७.मेरी टेर सुनो	३३
२८.हे माँ अन्तर- जोत	३३
२९.केशव जगत में	३४
३०.प्रभु भला- बुरा	३५
३१.मेरे अक तुम हो	३५

३२.मैं रहा फिरता ही	३६
३३.प्रभु मैं तुम को	३७

हनुमानजी

१.जय जय हे करुणा	३८
२.हनुमान तुम जागो	३९
३.हे पवन पुत्र तुम	४१

वैराग्य

१.मन उपराम हुआ	४२

वेदान्त

१.अनत अपार सागर	४२
२.हौं आतम राम	४३

समझावन

१.भाई तोहे	४४
२.जब प्रेम पंथ	४५
३.है मानुष का जनम हुआ	४५
४.राम कृपा अपने	४६
५.काहे भजत न	४७
६.तू राम से	४७
७.कुछ भी किया	४८
८.तेरा पल पल	४८
९.तू जाग में क्यों	४९
१०.जाग बावरी	५०
११.जब राम तेरा	५०
१२.अन्तर तेरे होत	५१
१३.जगत में राम चरण	५२
१४.तेरी दो दिन की	५३
१५.जब प्रेम का नाता	५३

कृष्ण

१.श्याम तू ने	५४
२.हरे कृष्ण बोल	५५
३.हे सलोने	५६

प्रेम

१.प्रभु ने प्रेम रंग	५७
२.मैं राम जी	५८
३.हरि तुम नयनन	५८
४.आन मिलो सजना	५९
५.प्रभु मैं बीच	५९
६.प्रभुजी ! कब तक	६०
७.मैं तो जगत	६१

वियोग

१.श्याम बिन	६२
२.वियोगिन तुम बिन	६३
३.जीव तेरी	६३
४.तन विरहा	६४
५.मैं राह निहारूं	६४
६.मेरे मन की तार	६५
७.जगत कला के कारण मोहे	६६
८.हे प्रभु तेरे सिवा	६७
९.प्रभु प्रकट	६८
१०.प्रभु! मेरी उमरिया	६८
११.राम तूने लीला	६९

प्रार्थना

१.प्रभु जी !	७०
२.यह जीवन है	७०

प्रकीर्ण

१.कामना पूरी होत नहीं	७१
२.मनवा ऐसे बने	७२
३.मोहे कोई राम का	७२
४.नदिया देखे	७३
५.प्रभु अनंत माया	७३
६.जब चिंता मन	७४
७.कण कण में व्यापक	७४
८.रंगारंग यह जगत	७५
९.जगत में भीड़ ही	७६
१०.जब भूख लगे है	७६
११.तू सिमरत राम है	७७
१२.जग भी है बंधन	७७
१३.भारत से हूं दूर	७८
१४.मैं फिसलता	७९
१५.जो प्रियतम साथ	७९
१६.भटक-भटक मैं	८०
१७.वन पर्वत और झरने	८१
१८.वासना जगत है	८२
१९.बिना दर्शन मैं	८२
२०.नयना देखे	८३
२१.प्राणों का पंछी	८४
२२.जो जन हैं होते	८४
२३.पतित हुआ	८५

२४.मोहे मिठा लागे	८६

मन

१.मेरो मन जग	८६
२.मेरा प्रियतम कण	८७
३.जो मन में मेरे लागी	८८
४.जब लगि नाम जपे	८८
५.जा मन लागे	८९
६.मनवा !	९०
७.मेरो मन !	९०
८.जगत में दुख	९१
९.मन से लड़ते	९२
१०.राम मोह	९३
११.मेरो मन	९४
१२.मैं मन के हाथों	९४

उर्दू

१.बढ़े जा रहे हैं	९५
२.होकर निराश	९६
३.तेरी सूरत देख	९७
४.तू आता नहीं	९८
५.मैं करता	९८

६.प्रभु तुमने	९९
७.तेरा खयाल	१००

पंजाबी

१.हे मेरे मालिका	१००
२.मेरे हाल तेवी	१०१
३.नी मैं की करां	१०२
४.जिस दिल विच	१०२
५.दिल्बर न किदरे	१०३
६.कौन गली माही	१०४
७.औगन भरया है पिण्डा	१०५
८.एह मन्न के	१०६

अन्त का पश्चाताप

१.अवसर यह भी	१०७
२.मैं मृत्यु	१०८
३.क्या मैं करूं	१०९
४.जो जल नदिया	१०९
५.उमर ऐसी आ गई	११०
६.जब मैं होता	१११
७.चलने की बारी	१११

८.मैं लंगड़ा लंगड़ा	११२
९.मैं लड़त लड़त	११३
१०.जिस देह में अब	११४
११.अब बुलावा आ गया	११४
१२.अब किस को	११५

विविध

१.दिन आता है	११६
२.माया फेर	११७
३.मैं करत प्रतीक्षा	११८
४.मैं कब की रही	११९
५.जब नाम हुआ	११९
६.ऐसा क्या मुझ	१२०
७.पीव मोरे !	१२१
८.प्रभु तुम आय	१२१
९.हरे कृष्ण बोल	१२२
१०.जगत में सब	१२३
११.प्रभु में तुम को कैसे	१२४
१२.कण कण में व्यापक	१२४
१३.केशव जगत ने	१२५
१४.जगत की भीड़	१२५

१५.तू सिमरत राम	१२६
१६.हे मानुष जनम हुआ	१२७
१७.जब भूख लगे है	१२७

मेरे गुरुदेव

(१)

१. विष्णु तीर्थ प्रभु तीर्थ स्वरूपा, गुरुदेव हे स्वामी ।
विनय करत हूं याचक बन कर, कृपा करो हे स्वामी ॥
२. दृष्टिपात संकल्प मात्र से, तारे शिष्य अनेकों ।
शक्ति उन की कर के जाग्रत, किया पार हे स्वामी ।।
३. रचना कर के ग्रन्थ अनेकों, मार्ग प्रेम दिखलाया ।
प्रेम स्वरूप अनन्ता सद्गुरु, दयावान हे स्वामी ॥
४. शरण तुम्हारी ले विश्वासा, जीव जो सन्मुख आता ।
खाली हाथ नहीं वह जाता, जग रक्षक हे स्वामी ।।
५.मैं अज्ञानी बालक तेरा, शरण तुम्हारी आया ।
मुझ पर भी उपकार हे देवा, करो पार हे स्वामी ॥
६. गुरु तत्व तुम में परकाशित, गुरु- अनुग्रह करते ।
भाँति भाँति की लीला अन्तर, होती देव हे स्वामी ॥
७. होवत दिव्य मौन परकाशित, शिष्य अनुग्रह पाता ।
कृत्य कृत्य होता है जीवन, शक्तिमान हे स्वामी ॥
८. स्वयं सिद्ध साधन हो देते, शिष्य वर्ग के ताईं ।
दयावान हो हम जीवों पर, विज्ञानी हे स्वामी ॥
९. तीर्थ शिवोम् शरण में आया, पीर हरो गुरुदेवा ।
प्राप्त हो आतम लाभ मुझे भी, अन्तर्यामी स्वामी ॥

(२)

१. जागो, जागो, जागो हे विष्णु तीर्थ तुम जागो ।

हो दयावान, हो क्षमावान, हो क्रियाशील तुम जागो ॥

२. कुण्डलिनी रूप तुम्हीं तो हो, जो विद्यमान सब ही में है ।

तुम जाग उठो, तुम जाग उठो, हो क्रियाशील तुम जागो ॥

३. तुम लेत उबार हो जीवों को, भव सागर में जो डूब रहे । तुम करो अनुग्रह दुखियों पर, हो क्रियाशील तुम जागो ॥

४. तुमरे संकल्प से जाग्रत हो, है शक्ति दिव्य क्रिया करती ।

तुम निर्मल शक्ति के स्वामी, हो क्रियाशील तुम जागो ।

५. मैं घूमा फिरा जगत सारा, पर ठौर मिली न कहीं मुझे ।

अब आया तुमरे द्वारे हूं, हो क्रियाशील तुम जागो ॥

६. मन में मेरे अभिमान भरा, करता उपदेश की मैं बातें ।

पर अन्तर में तम छाय रहा हो क्रियाशील तुम जागो ।।

७. अब तो अहंकार गलित मेरा, जब आया शरण तुम्हारी ।

मैं पापी, मूढ़, हठी, दम्भी, हो क्रियाशील तुम जागो ॥

८. कर दो लीला मुझ में परगट अपने बल कुछ न कर पाता ।

अब केवल तुमरे आश्रित हूँ, हो क्रियाशील तुम जागो ॥

९. तुमरी किरिपा सुखदायक है, करती है क्षीण विकारों को ।

होता आनंद प्रकट मन में, हो क्रियाशील तुम जागो ॥

१०.है तोर्थ शिवोम् पड़ा चरणी, मुझ दीन हीन पर कृपा करो।

मन में हो दिव्य रूप परगट हो क्रियाशील तुम जागो।।

(३)

१. मैं तो तीर्थहि शरण गहूं।

विष्णु पाए सुखी हुई जाऊं, मन आनन्द लहूं॥

२. तीर्थ है मेरा मनहिं माहीं, विष्णु सन्मुख मोरे।

विष्णु तीर्थ को पाए आनन्दित, मन संतुष्ट रहूँ॥

३. विष्णु हो जाग्रत अन्तर में, तीर्थ स्वरूप बने वह।

विष्णु तीर्थ ही क्रिया करत है, देखत मगन रहूं॥

४, तीर्थ शिवोम् सुनो गुरुदेवा, मन के माहीं विराजो।

तीर्थ रूप हो विष्णु तीर्थ तुम, तुमरी शरण गहूं॥

(४)

१. तीर्थ वही जो निर्मल कर दे, विष्णु ईश्वर नाम है

विष्णु तीर्थ को तीर्थ बनाना, ईश्वर का ही काम है।

२. अन्तर शक्ति तीर्थ स्वरूपा, मन मलीनता दूर करे।

विष्णु ईश्वर है आधारा, तीर्थ उसी का नाम है॥

३. विष्णु तीर्थ अन्तर में जाग्रत, कर्मों को निर्मूल करें।

मन निर्मलता पाता तब ही, मन में चेतन धाम है॥

४. विष्णु तीर्थ की क्रियाशीलता, वह ही आराधन करती।

मन निर्मल हो, क्षीण वासना, यह ही उस का काम है |

५.तम को दूर करे गुरुदेवा, अन्तर में परकाश करे ।

विष्णु तीर्थ ही गुरुदेव है, चेतनता ही काम है ॥

६.विष्णु तीर्थ की किरिपा होती, मन उपराम तभी होता ।

अन्तर्मुख करता जीवों को, विष्णु तीरथ धाम है ॥

७.जितना शिष्य समर्पित होता, विष्णु तीर्थ कृपा करते ।

अधिकाधिक वह क्रियाशील हो, क्रियाशीलता काम है ॥

८.तीर्थ शिवोम् शरण में आया, मुझ पर गुरुवर कृपा करो ।

अन्तर मां शक्ति परवाहित तीरथ धाम है ॥

गुरु महिमा

(१)

१. गुरुदेव कृपा करना मुझ पर, कहीं मुझ को छोड़ नहीं देना ।

मैं जैसा कैसा तेरा हूं, मन से न मुझे भुला देना ।

२. अज्ञानी चंचल बालक मैं, हूं मैं प्रमाद से भरा हुआ ।

पर मन है तुमरे चरणों में, कहीं दूर न मुझे हटा देना ।।

३. मैं सारे जग में भटक फिरा, अब आया शरण तुम्हारी हूं ।

मुझ अशरण, दीन, मूढ़-मन को, किरपा से नहीं हटा देना ॥

४. अब तुमरा एक सहारा है, तुम दीन दयाल दया सागर ।

बस ऐसी कृपा रहे मुझ पर, मन से न कहीं हटा देना ।

५. यदि तुम ने छोड़ दिया मुझ को, फिर दूजी ठौर नहीं कोई ।

बालक का हाथ रहो पकड़े, न अपना हाथ हटा लेना ॥

६. जैसा भी मुझ को रखोगे, हूँ हर्षित उसी अवस्था में ।

मारो या तारो जो चाहो, पर ध्यान से नहीं हटा देना ॥

७. हूँ जनम जनम का पापी मैं, पर अब भी संभल नहीं पाता ।

तुमरी शक्ति से क्षीण कर्म, अपनी शक्ति न हटा लेना ।।

८. है तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणी, बस लाज तुम्हारे हाथों में । गुरु मात-पिता स्वामी तुम हो, चरणों से नहीं हटा देना ।।

(२)

१. कोई मो को गुरु मारग बतलावै, राम नाम चित्त भावै ॥

२. राम नाम कहता जग सारा, कोई राम न जाने ।

राम प्रकट कर हिरदय माहीं, दीपक हाथ धरावै ॥

३. पग पग ढूंढत राम जगत में, अन्तर खोजत नाहीं ।

अन्दर ही कर राम प्रकाशित, संशय सकल मिटावै ॥

४. तीर्थ शिवोम् है माया झूठी, झूठा सर्व पसारा ।

दर्शन राम किए बिन अन्दर, तृष्णा नहीं नसावै ॥

(३)

१. मन लागा श्री गुरु चरनन में।

गुरु चरनन बिन भावे कुछ न, लाग रहा गुरु शरनन में।

२. माया झूठी, जगत पसारा, मन में भाव न दूजा।

तृष्णा छूटी, सहज समाया, तृष्णा श्रीगुरु चरनन में |

३. सभी देवन में गुरु समाया, गुरु बिना न दूजा।

गुरु व्यापक है, सकल जगत में, जगत गुरु चरनन में॥

४. जहां देखों तहां गुरु दीखत है, गुरु बिन नाहीं दूजा।

गुरु व्यापक है कण कण माही, मनवा श्रीगुरु ही चरनन में।।

५.विष्णु तीर्थ रूप जग सारा, गुरु ही सर्व समाना।

तीर्थ शिवोम् दशा भई ऐसी, मन लागा गुरु चरनन में।।

(४)

१.सद्गुरु देव तुम्हीं हो मालिक, आया शरण तुम्हारी हूं।

कृपावंत ! मैं याचक बन कर, चरणीं पड़ा तुम्हारी हूँ।

२.मात पिता और सखा सुआमी, तुम ही सब कुछ हो मेरे।

कृपा मांगने तुमरी गुरुवर, आया शरण तुम्हारी हूँ।

३.तत्व गुरु बिन नाहीं ईश्वर, तत्व गुरु विस्तार करे।

गुरुदेव जग पालन करता, आया शरण तुम्हारी हूं॥

४.तुम ही सकल जगत के कारण, कण कण में तुम व्यापक हो ।

इच्छा बिना न पत्ता हिलता, आया शरण तुम्हारी हूं ॥

५.जीवों में हो प्रकट प्रकाशित, तुम्हीं दान जीवन करते ।

सभी क्रियाएं तुमरी प्रभुजी, आया शरण तुम्हारी हूं ॥

६.मैं अज्ञानी बालक तेरा, मूढ़ बना जग विषयों में ।

तुम्हीं बचावनहार हो केवल, आया शरण तुम्हारी हूं ॥

७. हो परकाशित मेरे अन्दर, मन मेरा निर्मल कर दो।

डूबा रहूं भाव में तुमरे, आया शरण तुम्हारी हूं ॥

८. विष्णु तीर्थ प्रभु मेरे गुरुवर, दया दृष्टि मुझ पर तुमरी ।

तीर्थ शिवोम् खड़ा है द्वारे, आया शरण तुम्हारी हूं ॥

(५)

१. गुरुदेव असीम कृपा कर के, मोहे चाकर अपना रख लीजो ।

धन की कुछ चाह नहीं मुझ को, बस अपना दास बना लीजो ।

२. बाहर का ज्ञान विलुप्त रहे, पर भूलूं न मैं नाम तेरा ।

धन तेरा चेतन नाम ही है, वह ही धन दान मुझे दीजो ।।

३. दुनिया चाहे पागल कह ले, पर ध्यान न छोडू मैं तेरा ।

यह मन का भाव रहे हर दम, चरणों से नहीं हटा दीजो ।।

४. जग डगर में मैं भूला भटका, कोई भी मीत नहीं पाया ।

अब शरण में तुमरी आया हूं, चरणों में शरण मुझे दीजो ।।

५.है तीर्थ शिवोम् गुरु शरणी, हो दया दृष्टि मुझ पर ऐसी ।

मैं सदा सदा ही बना रहूं, सेवा अपनी में रख लीजो ।।

(६)

१. गुरु बिन बिरथा ज्ञान सभी ।

गुरुदेव ही ज्ञान प्रदाता, साधन व्यर्थ सभी ॥

२. साधन से हंकार उपजता, मन मलीन है होता ।

गुरु कृपा ही एक है साधन, बाकी व्यर्थ सभी ॥

३. गुरुदेव ही जाग्रत होते, गुरुदेव साधन करते ।

गुरुदेव के आश्रित रहना, व्यर्थ न जात कभी ॥

४. गुरु मारग कल्याण करत है, गुरु मारग ही पार करे ।

गुरु शरणागत हो जा प्राणी, नैया पार अभी ॥

५. तीर्थ शिवोम् शरण गुरुदेवा, जो भी तुमरी आता ।

तुमरे द्वारे खाली हाथो, जाता नहीं कभी ॥

(७)

१. मुझे सतिगुरु लिए बचाए, नहीं तो जाय रही थी ।

बही जात थी भवजल माहीं, डूबी जाय रही थी ॥

२. गुरु के हाथ दियो बच पाई, बांह पकड़ कर काढ़ा ।

सतगुरु ने उपकार ही कीना, नहीं तो जाय रही थी ।

३. सतिगुरु जीवन बदल दियो है, काग से हंस भई मैं ।

सतगुणी मेरा जीव बनो है, तम गुण गाय रही थी ॥

४. मोह लोभ भ्रम जारै दीनो, मो को निर्मल कीनो ।

दुख है बदल गया सुख माहीं, तृष्णा खाय रही थी ॥

५.अज्ञानी बन भटक रही थी, ज्ञान का दीप जलाया ।

शक्ति जाग्रत की मेरे अंदर, तम में जाय रही थी ।

६. तीर्थ शिवोम् हे दीन दयाला, कृपा करत जीवों पर ।

विषय वासना दूर हुई है, नहीं विषय रस पाय रही थी ॥

(८)

१. आज घर गंगा प्रकट भई ।

मन की प्यास बुझाय लैहों, आतम तृपत भई ॥

२. अन्तर मारग साधन खुल गये, शब्द अनेकों जागे ।

द्रष्टा भाव प्रकट मन माही, चरणी राम पई ॥

३. गुरु गंगा दीखत परवाहित, दिव्य क्रिया है करती ।

पाप राशि संचित मन अंदर, निर्मल जात भई ॥

४. मन में श्रद्धा प्रेम समर्पण, प्रकट हुए सारे ही ।

पराभक्ति का रूप प्रकाशित, मन आनंद भई ॥

५.नित्य ही स्नान करत ता माहीं, मल मल ता में न्हाऊं ।

जैसे न्हाऊं, करत है निर्मल, जात पवित्र भई ॥

६. अहंकार आवरण क्षीण है, होत क्रियाओं माहीं ।

आशा ममता क्षीण हुई, तृष्णा रहित भई ।

७. गंगा वेग के साथ बढ़त है, वेग क्रियाओं का भी ।

सत रज तम को शान्त करे तब, सूक्षम जात भई ॥

८. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर की, अन्तर्मुख यह कीनी ।

विषयातीत आनंद प्रकट अब, मन भ्रम शान्त भई ॥

(९)

१.गुरुदेव की मुझ पर कृपा हुई, जगदम्बा अन्तर में जाग्रत ।

है करती क्रिया अलौकिक वह, है दिव्य नाद अन्तर जाग्रत ॥

२.आनन्द का अनुभव होता है, और चिन्ता मुक्त हुआ मनवा ।

हैं होते कर्म नाश सब ही, है स्वयं सिद्ध साधन जाग्रत ॥

३. विज्ञानी गुरु की किरपा से, है अनुभव युक्त ज्ञान होता ।।

अज्ञान का परदा मन से हटा, है ज्ञान हुआ मन में जाग्रत ॥

४. कभी रोना, हँसना, गाना है, तन झूलत है झूले की तरह. ।

बिन पुरुषारथ के ही अब तो है दिव्य क्रिया अन्तर जाग्रत ॥

५. मन में आनंद छलकता है, कुछ करना शेष नहीं अब तो ।

जो होता है, होने देना, अब भाव हुआ ऐसा जाग्रत ॥

६.है दृष्टा भाव उदय मन में, परिवर्तित मेरा जीवन है ।

करता का भाव विलीन हुआ, और चेतन भाव हुआ जाग्रत ।।

७. चंचलता-जड़ता भाग गए, चैतन्य हुआ मेरा मनवा ।

अब शोक मोह और चिन्ता क्या, निर्भयता भाव हुआ जाग्रत ॥

८. अब ज्योति दर्शन होते हैं, परकाश अनेकों दिखते हैं ।

जग मिथ्या सिद्ध हुआ मन में, और सत्य का भाव हुआ जाग्रत ॥

९. हैं राग रंग होते अन्तर, हैं दिव्य भाव परगट होते ।

मन की मलीनता दूर हुई, और निर्मल भाव हुआ जाग्रत ।

१०.मैं सीमाओं के बंधन में, था रोता और तड़पता था ।

अब सीमा मुक्त हुआ मनवा, है भाव अनन्त हुआ जाग्रत ॥

११. मैं खोजत रहा तीर्थों में, पर राम नजर न आया कहीं ।

जब किरिपा गुरु की प्रकट हुई, तब अन्तर भाव हुआ जाग्रत ॥

१२. प्रभु विष्णु तीर्थ की कृपा हुई, अब तीर्थ शिवोम् आनन्दित है ।

अब राम ही राम दिखे जग में, गुरुभाव हुआ अन्तर जाग्रत ॥

(१०)

१. राम नाम धन पायो मैंने, हरि मारग अपनायो ।

भोग वासना त्याग जगत की, राम नाम गुण गायो ।

२. राम नाम दीनो मेरे सतिगुरु कृपा अमोलक कीनी ।

भाव भक्ति से हिरदय मेरा, आनंद अनोखा पायो ।

३. राम नाम वस्तु अनूठी, सतिगुरु विना न मिलती।

कृपा होय तो नाम चेतना, अन्तर माही जगायो ।।

४. राम नाम की नाव है पकड़ी, सतिगुरु नाविक बनया ।

भवसागर के पार मैं उतरुं, भय मन दूर भगायो ।

५. सतिगुरु अब मेरा रखवाला, चिन्ता सोक सब त्यागा ।

मन का संशय दूर हुआ अब मन आनंद मनायो ॥

६. विष्णु तीर्त प्रभु किरिया कीनी, जनम सफल अब मेरा ।

तीर्थ शिवोम् गुरु अपनायो, मन भ्रम दूर हटायो ॥

(११)

१. गुरु किरिपा वर्षा हुई मो पर, भीग गया तन सारा ।

मन की तृष्णा दूर हुई सब, अहंकार को मारा ।

२. मन निर्मलता पाई मैंने, दूर हुआ अंधयारा ।

मस्त हुआ है, मनवा ऐसा, बही ज्ञान की धारा ॥

३. गुरु शक्ति की क्रिया अलौकिक, घट में होत निरन्तर ।

बना रहत है, गुरु अन्तर में, अन्तर ज्ञान है जागा ॥

४. नाद अनेक, प्रकाश आलोकित, रहता मन के माही ।

दिव्य भाव भक्ति के जाग्रत, होवत अनंद अपारा ॥

गुरुदेव सन्मुख अन्तर में, पलभर दून होवत ।

ऐसा सुख है पाया मैं ने, कहत सुनत नहीं आता ॥

६. विष्णु तीर्थ किरपा भई तुमरी, अन्तर सुख मैं पाया।

माया तृष्णा दूर भई है हुआ आनंद अपारा।

७. तीर्थ शिवोम् तुम्हारी, किरिपा, प्रभुजी मुझ पर होवे।

डूबत रहूं अनंद निरन्तर, हो जावे निस्तारा॥

(१२)

१. हे मेरे गुरुदेव, चरणों में मुझे रख लीजिए।

आई शरण में हूं प्रभु, लौटा मुझे न दीजिए।

२. जगत भोगों की नहीं है, चाह मेरे मन में कुछ।

अपने चरण की सेविका ही, बस मुझे रख लीजिए।

३. बाहर जगत का ज्ञान मुझ में, हो न हो, कुछ गम नहीं।

नाम तेरा, ध्यान ही, मुझ पर कृपा कर दीजिए।

४, भटकी मैं सारे जगत में, हैं पूछता कोई नहीं।

अब सहारा ही तेरा, ठुकरा कहीं न दीजिए।।

५. तन में जब तक जान है, सेवक तुम्हारा ही रहूं।

मेरे हृदय की दशा, मेरे प्रभु कर दीजिए।

६. व्याकुल जगत में फिर रहा पर राम न पाया कहीं।

पकड़ी शरण है अब तेरी, मुझ को शरण में लीजिए।

७. शिवोम् आयी शरण में, चरणों में लेकर यह विनय।

नाव डूबी जा रही है, पार उस को कीजिए।

(१३)

१. न टूटे, न टूटे माला, नाम गुरु गुण गान की।

जगत हटा कर, गुरु चरणों में, गुरु चरणों में जान की।

२. गुरु चरणों से निकली गंगा, यमुना गुरु चरण बहती।

गोदावरी भी वहीं निवासित, कारण निर्मल ज्ञान की॥

३. गुरु साधन, अभ्यास करत जो, करता गुरु आज्ञा पालन।

वही जीव मुक्ति है पाता, जीवन में सुख ज्ञान की॥

४. गुरु अभिमुख जो होत नहीं है, जीवन में सुख दुख पाता।

आनन्दित होता जग में वह, फेरत माला ज्ञान की॥

५. विष्णु तीर्थ प्रभु पूरण स्वामी, घट घट के तुम अन्तर्यामी।

शरण तुम्हारी में जो आता, पाता शक्ति राम की॥

६. तीर्थ शिवोम् याचक वन आया, करो कृपा हे सदगुरुदेवा।

लीला देखूं अन्तर तुमरी, क्रिया शीलता राम की॥

(१४)

१. गुरु से नेह लगा रे भाई. गुरु समर्पित हो जा तू।

गुरु सेवा मारग अपना कर, गुरु मय रूप हुआ जा तू॥

२.ध्यान धरे गुरु मूरत का तू. सद्गुरु देव की शरण गहे।

मंत्र समान गुरु उपदेशा, गुरु समर्पित हो जा तू॥

३.गुरु सम देव नहीं दूजा है, पूजा नहीं है सेवा सम।

जीवन गुरुसेवा मय कर ले, गुरु समर्पित हो जा तू ॥

४. गुरु शक्ति का ही प्रकाश है, धारण जीवन किए रहा।

५.गुरु शक्ति ही क्रिया करत है, गुरु समर्पित हो जा तू ॥

ब्रह्मा विष्णु शंकर शेषा, सब देवों में गुरु महेशा ।

६.सब देवन में गुरु प्रकाशित, गुरु समर्पित हो जा तू ।।

सारे जग में गुरु विराजे, कण कण गुरु शक्ति व्यापक ।

गुरु कृपा अनुभव करवाती, गुरु समर्पित हो जा तू ॥

७. तीर्थ शिवोम् सुनो हे जीवा, पारब्रह्म से भी पर है।

उपजावे विलीन वह करता, गुरु समर्पित होजा तू ॥

विनय

(१)

१. मैं विषयन माहों पड़ी ।

भोग-वासना छोड़त नाही, जग के माहीं गड़ी ।।

२. जगत कामना मोहे नचावत, नाचत नाचत थाकी ।

अभी वासना तृप्त भई न, नाचत नाच पड़ी ॥

३.मनवा तृष्णाओं में भीगा, तुमरो ध्यान न आवत ।

सुख के कारण, दुख के माही, नित ही रहत पड़ी ॥

४.हो निराश जगत भोगों से, शरण तुम्हारी आई।

दया करो, मुझ को अपना लो, चरणी आन पड़ी ।।

५.तुमरा हाथ पकड़ न पाऊं, तुम ही मुझे सम्भालो ।

अक्षम बनी पिया बिन अब तो, द्वारे आन खड़ी ॥

६. भजन - भाव न ध्यान बने कुछ, पुरुषारथ कुछ नाहीं ।

तुम ही कृपा करो मेरे प्रभुजी, आस लगाए खड़ी ॥

७. डगर डगर भटकत मतवाली, ठौर न कोई सूझत ।

तुमरे बिन प्रभु प्रियतम मोरे, हूँ मैं द्वार खड़ी ॥

८. विष्णु तीर्थ प्रभु किरिया तुमरी, प्रियतम प्यारा पाऊं ।

तीर्थ शिवोम् अनुग्रह कीजो, पी के संग खड़ी ॥

(२)

१. नाम तेरा हिरदय मुख माहीं, मन आनन्दित बना रहे ।

नैनन हरदम तुम्हें निहारूं, एक तार में लगा रहे ।।

२. कर्म करूं तुझ को न भूलूं, तुम सों मनवा जुड़ा रहे ।

मन में तेरा ध्यान निरन्तर, ऐसा मनवा बना रहे ॥

३. मेरी लाज तुम्हारे पाहीं, मारो चाहे या तारो ।

तीर्थ शिवोम् अर्ज यह मेरी, चरणों में मन बना रहे ॥

(३)

१. केशव लीजो मोहे उबार ।

ठौर ठौर हौं भटकत भटकत, आई तेरे द्वार ॥

२. जगत खोज के मैं थक हारी, अपना कोई मीत न पाया ।

अन्तिम तुमरे द्वारे आई, करती तुम्हें पुकार ॥

३. तुमरे बिन अपना नहीं कोई, स्वारथ में सब ही कोई ।

ठोक बजा कर देखा जग को, मिला नहीं आधार ।।

४. तुझे छोड़ मैं जाऊं किधर को, और ठिकाना है नाहीं ।

मेरे एक अधार तुम्ही हो, कर लो अंगीकार ।।

५.विष्णु तीर्थ प्रभु किरिया कीनी, द्वार तुम्हार दिखाया ।

चरण तुम्हारे पकड़े मैंने, करो मेरा उद्धार ॥

६. तुम ही मेरे ईश महेश्वर, करुणासागर स्वामी ।

अपना रूप दिखाओ प्रभुजी, डूब रही मंझधार ॥

७. तीर्थ शिवोम् शरण में स्वामी, दया सिंधु अन्तर्यामी ।

अब मैं द्वारे आन पड़ी हूं, हो मुझ पर उपकार ॥

(४)

१: नैया मोरी टूटी फूटी, बोझ लदा है भारी ।

है पतवार भी टूटा जाता, मन से भी हूं हारी ॥

२. डूबतं जात रही मझधारहिं, आगे बढ़ न पाती ।

आंधी उठत है बहु भयानक, दुखिया जग की मारी ॥

३. अब पतवार संभालो प्रभु जी, तुमी बचावान हारे ।

तुमरी शरण पड़ी है दुखिया, हर लो विपदा भारी |

४. तीर्थ शिवोम् जगत मन सागर, नैया जीव बना है ।

५. कृपा बिना न पार पड़त है, जीव रहे मझधारी ॥

(५)

१. प्रभुजी ! मेरी ओर निहारो ।

कब की रस्ता देख रही हूं, मोहे काहे न तारो ॥

२. निर्मल चित्त बनी अधिकारी, कृपा प्रापत न मोहे ।

तुमरी कृपा बिना प्रभु मोरे, होत नहीं उद्धारों ॥

३. तज अभिमान जगत के सारे, शरण तुम्हारी आई ।

अब तो करो स्वीकार प्रभुजी, बेड़ा पार उतारो ॥

४. यश-अपयश की चिन्ता छोड़ी, जगत के नाते त्यागे ।

तुम बिन कौन है मेरा स्वामी, अब तो मोहे उबारो ।।

५.मैं मतवाली प्रेम तेरे की, और नहीं कुछ आशा ।

अपना दर्श दिखाओ प्रियतम, आन पड़ी हूं द्वारे ॥

६.तीर्थ शिवोम् अनुग्रह तेरा, पार करो प्रभु मोहे ।

अब तो एक तुम्हारी आशा, ठुकरा दो या तारो ॥

(६)

१. तुम छुपते रहते, मैं खोजत खोजत फिरता ।

तुम को तो तरस नहीं है, मैं हूं अकुलाता फिरता ॥

२. तुम छुपे हुए क्यों हो, यह जान नहीं मैं पाऊं ।

तेरे दर्शन बिन मेरा, मन डूबत डूबत जाता ॥

३. मन तेरी आशाओं में है तड़पे नित्य निरन्तर ।

पर तुम को खोज न पाऊं, है बुझा बुझा मन रहता ॥

४.मैं कैसे तुम को पाऊं, मैं खोजूं तुम्हें कहाँ पर ।

यह भेद है अपरम्पारा, समझा न मुझ से जाता ॥

५.आओ प्रियतम अब आओ, शिवोम् पुकारत तो को ।

किरिपा कर दर्शन दीजो, अब मो से रहा न जाता ॥

(७)

१. मेरा बीतत जाए जुबना, सजना आन मिलो ।

मन धीरज अब न राखे, अब न देर करो ॥

२. राह निहारत बैठी तुमरा, आस लगी मन में तेरी ।

खोए गए कहां मेरे प्रियतम, अब तो वेग करो ॥

३. निकलत जाए जीवन मेरा, होत निराशा भारी ।

मन में समझ यह न आवत, कौन उपाय करो ।।

४. तुम तो मेरे पास सदा ही, मैं ही देख न पाती ।

परदा देयो हटाय नयनन सों, कुछ उपकार करो ॥

५. सदा-सदा मैं शरण तिहारी, तीर्थं शिवोम् पुकारे ।

मेरे सन्मुख प्रकट प्रकाशित हो कर दया करो |

(८)

१.मैं तो प्रियतम राह निहारूं ।

ताकत ताकत सूजे नयनां, हिरदय माहीं पुकारू ।।

२. कब का बिछुड़ा प्रियतम मेरा, पता भी कोई नाहीं ।

करत प्रतीक्षा, धीरज टूटा, किस से जाय विचारूं ॥

३.आओ प्रियतम, देर हुई है, किए सिंगार हूँ बैठी ।

हिरदय तड़प बियोग में उठता, कैसे तुम्हें पुकारूं ॥

४.मेरी भूल हुई जो मैंने, तुम्हें भुलाया मन से

अब तो जग की ठोकर खा कर, जग का भार उतारूं ॥

५.करो कृपा हे मेरे स्वामी, दया के सागर तुम हो ।

मेरी भूल क्षमा मेरे प्रियतम, कब की राह निहारूं ॥

६. विष्णु तीर्थ प्रभु किरिया कीजो, प्रियतम मोहे मिला दो ।

तुम जानत प्रियतम का मारग, तुम पर अर्ज गुजारूं ॥

७. तीर्थ शिवोम् प्रियतम बिन दुखिया, किस को जा के पूछूं ।

प्रियतम का घर कौन बतावे, मैं प्रियतम को देखूं ॥

(९)

१. गुरुदेव मुझे रंग दो, अंदर बाहर रंग दो ।

मन मेरा भी रंग दो, तन मेरा भी रंग दो ॥

२. रंग फैला प्रभु का है, सारा जग रंगा रहा ।

रंगीन प्रभु भी है, रंगीन मुझे कर दो ॥

३. यह रंग निराला है, सब जीव रंगे इस में ।

पर रंग न वह जानें, यह व्यक्त मुझे कर दो ||

४. जिस रंग प्रभु दीखें, वह रंग दिखे मुझे को

मैं रंग रंगा दीखूं, मुझे रंग रंगा कर दो ॥

५. शिवओम् रंगा ऐसा, अब रंगा रंग दीखे ।

सब रंग रंगा रंग है, सब रंगा रंग कर दो ॥

(१०)

१. राम तेरी लीला अजब अनोखी ।

कैसा जगत बनाया तू ने, एक से एक अनोखी ॥

२. भाँति भाँति के जीव बनाए, वन पर्वत अति सुन्दर ।

देख देख मन अचरण होता, लीला तुमरी पेखी ॥

३. कण कण में व्यापक होकर भी, गुप्त बना बैठा तू ।

कैसे खोजूं, कैसे देखूं, आवत नहीं तू देखी ॥

४. करता हर्ता, भर्ता हो कर, निःकर्मी बन बैठा

मारग कोई सूझ न पाता, कैसे जानूं लेखी ॥

५. गुरु ही मेरा जानन हारा, गुरु मारग अपनाऊं ।

तो ही तेरी लीला समझं, आवे तब तू देखी ॥

६. जिस पर तेरी किरपा होवे, वह ही तुझ को जाने ।

वही जीव अधिकारी बनता, अनदेखी को देखी ॥

७. तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, करो अनुग्रह मो पर ।

माया दूर करो प्रभु अपनी, मैं देखूं अनदेखी ॥

(११)

१. प्रभु तुम मन में धारो नाहीं मेरे अवगुण हैं बेअन्ता ।

जैसे माया तेरी अनन्ता, तैसे अवगुण मोर अनन्ता ॥

२. गुण अवगुण मन में सब व्यापे, तुम देखो नहीं देहा ।

गुण अवगुण माया के परदे, अन्तर माहीं अनन्ता ॥

३. इक पाथर मोरी में लागे, इक चढ़त है उच्च अटरिया ।

पाथर तो बस पाथर ही है, त्यों आतम बना अनन्ता ॥
४. गुण अवगुण मैं जानत नाहीं, तुमरों गुण हीं जानूं ।
तुमरी कृपा भये जो मो पर, सीमित बनूं अनन्ता ॥
५.तीर्थ शिवोम् अब मोहे निहारो, अवगुण मोर न देखो ।
मोर तोर छोड़ जब दीजो, बंधन मुक्त अनन्ता ॥

(१२)

१. हरि तुम दर्शन दीजो आए, या मोहे अपने पास बुलाए ।
अपने बल मैं आ न पाऊं, कृपा तेरी हो जाए ॥
२. भेज संदेशा हुई बावरी, न कोई सुननेहारा ।
टेर सुनो प्रभु मोरी अब तो, जिया मोर अकुलाए ।
३. बंधन छोड़ जगत न पाती, ऐसी हुई असहाय ।
लीजो पास बुलाए प्रियतम, या दर्शन दीजो आए ।
४. जगत भोग में जकड़ रही हूं, मो पह सहा न जाए।
अब तो कृपा करो मोरे प्रभुजी, बंधन देयो छुड़ाए ||
विष्णु तीर्थ बिन तुमरी किरिपा, प्रियतम सुनत है नाहीं
प्रियतम देयो दिखाय अन्तर, भव बंधन कट जाए ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आई, कठिनाई सुलझा दो
प्रियतम दर्शन मुझे करा दो, अन्तर पीड़ा जाए ॥

(१३)

१. हे प्रभु तेरे सिवा, जीवन कोई जीवन नहीं ।
जीवन तो तेरे साथ है, तुम साथ न, जीवन नहीं ॥
२. जग तो किनारे रह गया, और कामनायें मन में की।
तुमरे बिना नाहीं सुहावे, तुम बिना जीवन नहीं ॥
३. था चला दुनिया बनाने, तुम को पीछे मैं हटा।
पर बना दुनिया न पाया, तुम बिना जीवन नहीं ॥
४. अब तुम्हारे ही लिए है, है तड़पता दिल मेरा ।
तुम हो हटाया सामने फिर, तुम बिना जीवन नहीं ॥
५. तुम नहीं जो साथ मेरे, बुझ मेरा जाता है मन ।
मन को प्रकाशित तुम करो, तेरे बिना जीवन नहीं ॥
६. आ गया तेरी शरण में, जगत सारा छोड़कर
मेरा सुख तुम ही प्रभु हो, तुम बिना जीवन नहीं ।
७. शिवओम् चरणों में पड़ा, मुझ को न ठुकरा दीजिए ।
तुम से ही मन की रोशनी, तुम बिना जीवन नहीं ॥

(१४)

१. अपना बनाओ मुझ को, अपना बनाओ जी ।
पापी पड़ा है शरण में, अपना बनाओ जी ॥
२. जिस को बनाया अपना तेरा ही हो गया वह ।
मुझ पर कृपा नहीं क्यों, अपना बनाओ जी ॥
३. अपना नहीं बनाया, तो भी तो मैं तेरा हूं ।

फिर क्यों नहीं मैं अपना, अपना बनाओ जी ॥

४.अपने लिए तो अपना, दूजे लिए भी अपना ।

फिर कौन अपना नाही, अपना बनाओ जी ॥

५.मैं आ गया शरण में, तेरी शरण है अपनी ।

अपना बनाओ मुझ को, अपना बनाओ जी ॥

६. शिवोम् है चरण, मैं मांगता नहीं कुछ ।

अपने मेरे हो जाओ, अपना बनाओ जी ॥

(१५)

१. मेरी बिगड़ी बनाओ आए प्रभु ।

मैं रही पुकारत होय दुखी, तुम करो अनुग्रह आए प्रभु ॥

२. जग दावानल में धधक रही, मन को है चैन नहीं पल भर ।

इक तुम हो, दूसरे को नाहीं, दुख मन का हर लो आए प्रभु ।।

३. मन विषयन माही भटक रहा, है सीख भी सुनत नहीं कोई ।

किस के आगे दुखड़ा रोऊं, मन को समझाओ आए प्रभु ॥

४. अब तो हिरदय है तड़प रहा, तुमरे वियोग की अग्नि में ।

तुमरे बिन चैन नहीं मन में, तुम दर्शन दीजो आए प्रभु ॥

५. हो तुम ही तो करुणा सागर है नहीं जगत में सुख मिलता।

मुझ पर भी वर्षा हो प्रियतम, बरसा दो सुख तुम आए प्रभु ॥

६. मैं तीर्थ शिवोम् पुकार रही, हूं दीन हीन प्रभु चरणों में।

मुझ दुखियारी की अरज सुनो, कर पार मुझे भी आय प्रभु ।।

(१६)

१. छुट जाए दाग चुनरिया का, गुरु ऐसा कुछ कर दीजो ।
पी घर जाते लाज लगत है, दाग छुड़ा तुम दीजो ॥
२. चुनरी मेरी मैल भरी है, पी का घर उज्जवल है ?
चुनरी साफ, मैं पी घर जाऊं, यह उपकार करीजो !
३. मन मलीन, प्रभु के घर माहीं, जीव न जाय सकत है।
मन मलीनता दूर हो मेरी, प्रभु उन्मुख कर दीजो ॥
४. भजन भाव जो कुछ भी कीनो, मैं मैं करती हारी ।
मैं मैं से मननिर्मल नाही, मन को शुद्ध करीजो ॥
५. तुमरी कृपा बिना गुरु देवा, मन निर्मलता नाहीं ।
चुनरी दाग है जावत नाहीं, तुम ही कृपा करीजो ॥
६. जागृत शक्ति हो जल रूपा, साधन साबुन मेरा ।
मल मल धोऊं दाग छुट जाए, **ऐसी** कृपा करीजो ।।
७. तीर्थ शिवोम् चुनरी है मैली, कृपा ही एक सहारा ।
दयावान हो क्षमा शील तुम, अवगुण मन न धरीजो ||

(१७)

१.मैं तेरा ही दास कहाए रहूं ।
सिमरूं नाम जपूं दिन राती, तुमरो ही गुण गाए रहूं ॥
२. तुम ही मेरे प्राण अधारा, दूजे मन न जाए।
तुमरे चरणों में ही प्रियतम, मन अपने को टिकाए रहूं ॥
३. जग में तुम को कण-कण देखूं, तुम सर्वत्र समाना ।

बाहर जग में अन्तर मन में, तुमरे दर्शन पाए रहूं ॥
४. मन में सदा ही मैं आनन्दित, सुखी रहे मेरा मनवा ।
जगत वासना भावत नाहीं, राम नाम गुण गाए रहूं ॥
५. तीर्थ शिवोम् शरण में राखो, ठुकरा नाहीं दीजो |
पल-पल क्षण-क्षण तुमरो सिमरन, तुमरो ही यश गाए रहूं ॥

(१८)

१. अपना बनाया मुझ को, अपना बना के रखना ।
इस मूढ़ नासमझ को, अपना बना के रखना ॥
२. मैं आया तेरे द्वारे, कुछ मांगने को प्रभु जी ।
तुम ने बनाया अपना, अपना बना के रखना ॥
३. जग में नहीं है कोई, जिस को मैं कहूं है अपना ।
इक तुम ही मेरे अपने, अपना बना के रखना ॥
४. अब तेरा इक सहारा, और तेरा ही भरोसा ।
कहीं टूट यह न जाये, अपना बना के रखना ।।
५. तेरी करूं मैं पूजा, तेरा ही नाम सिमरूं ।
तेरी करूं मैं सेवा, अपना बना के रखना ॥
६. तुझ को तो है अनेकों, अपना बनाया तू ने ।
पर मेरा एक तू है, अपना बना के रखना ॥
७. शिवोम् की विनय है, मुझ को भुला न देना ।
मैं भी न भूलूं तुझ को, अपना बना के रखना ।।

(१९)

१. प्रभु मैं कैसे तुम्हें मनाऊं ।
साधन भी तुम ही बतला दो, तेरे मन को भाऊं ॥
२. अल्प बुद्धि कुछ समझ न पाती, कठिन है मारग तेरा ।
कैसे चलू में पूछू किससे, मैं कुछ जान न पाऊं ॥
३. जप तप संयम जो कुछ संभव, सब कुछ किया है मैं ने।
पर तुम तो हो रीझत नाहीं, कैसे तुम को पाऊं ॥
४. ज्ञान का संचय, सतसंगत में, श्रम है बहुत उठाया।
किसी भान्ति तुम नहीं पसीजे, कैसे तुम्हें रिझाऊं ॥
५. तीर्थ शिवोम् प्रभु प्रियतम मेरे, अब तुम ही मुझे बताओ
मारग जिस को अपना कर मैं, अपना तुम्हें बनाऊं ॥

(२०)

१. प्रभु आओ न आओ तेरी मौज है,
मैं तो तेरे ही नाम की माला जपूं
मन रहता है लीन तुझी में, तुझ को ही नित गाया करूं ॥
२. जिस पथ पह तेरा जाना हो, उस पथ पर ध्यान रहे हरदम ।
हैं भाव ही मेरे पुष्प बने, तेरे चरणों पह चढ़ाया करूं ।।
३. यदि तेरा आना इधर कभी, नैनों का नीर है जल मेरा ।
मन के आसन पर पधरा कर, चरणों को मैं पखराया करूं ॥
४. मन भावों की माला मेरी, स्वीकार करो, पहनाऊं तुम्हें ।

मेरे है पास नहीं कुछ भी, चरणों में प्रेम चढ़ाया करूँ।
५. है याद तुम्हारी पास मेरे, जो हरदम मन में बनी हुई।
अब याद का एक सहारा है, चरणों में याद चढ़ाया करूं॥
६. यह तीर्थ शिवोम् प्रभु सुन लो, मैं दासी तेरे प्रेम की हूँ।
तुम पास बुलाओ, ठुकरा दो, चरणों पह भाव चढ़ाया करूं॥

(२१)

१. मैं घुंघट ओढ़े बैठी, पीव न दीखत मो को
अखियां ही मैं ने मूंदी, पीव न दीखत मो को॥
२. जतन अनेकों कर-कर हारी, घुंघट हटत न मो सो
जब तक मुंह पर परदा डाला, पीव न दीखत मो को||
३. काह करू जा उठ जाए घुंघट, सूझ पड़त न कुछ
जब तक कृपा पीव की नाही, पीव न दीखत मो को॥
४. अब तो कृपा करो मेरे प्रियतम, मैं सरका न पाती।
देयो हटाए घुंघट मोरा, पीव न दीखत मो को॥
५. तीर्थ शिवोम् हटाओ परदा, यह माया है तोरी।
मैं तो यूं ही उलझी इस में, पीव न दीखत मो को

(२२)

१.भगवन बुला लो मुझ को, रो रो तुम्हें पुकारूं ।
दर्शन तेरे लई मैं, तेरी ही राह निहारूँ ।।
२.जग में कोई न अपना, दुखड़ा सुने जो मेरा ।
बस तुम ही एक ऐसे, दुखड़ा सुने जो मेरा ॥
३.स्वारथ भरा जगत में, कोई किसे न सुनता ।
तुम ही हो सुनने हारे, जिस से तुम्हें पुकारूँ ॥
४. जग में न चाह दूजी, तेरे दर्श की लागी ।
दर्शन दो मेरे प्रभु जी, दूजा किसे पुकारूं ॥
५. लागे है मन न मेरा, कहीं पर, किसी भी सुख में
तुम ही तो मेरे सुख हो, तुम को ही मैं पुकारूं ॥
६.शिवोम् अब सुनो तो, किरपा करो, बुला लो ।
जग में बहुत दुखी हूं, कर बांध कर पुकारूं ॥

(२३)

१. तुम पतवार चलावो श्याम ।
दिन भर वंशी बजात रहत हो कोई नहीं है काम ॥
२. भक्त तुम्हारा रहा निहारे, दुखी बहुत मन माहीं ।
पार करो प्रभु नैया हमरी, करो नहीं विश्राम ॥
३. वंशी बजावत, नाचत, गावत है यह काम तिहारो ।

अब तो टेर सुनो भक्तन की, आए तेरे गाम ॥

४. जाय कहां ? किस को जा पूछें ? तुम सा दूसरा नाहीं ।

अब तो नाचन, गावन त्यागो, नाम दान दो धाम ॥

तीर्थ शिवोम् पड़ी चरणों में, अब के मुझ उबारो ।

दूजी आशा नाहीं मुझ को, एक भरोसो श्याम ॥

(२४)

१. अब तेरा एक सहारा है, नैया को पार लगा दीजो ।

अपना बल है कोई नाही, तुम अपना मुझे बना लीजो ||

२. मैं तुम को भूला बैठा हूं, मारग न सूझ रहा मुझ को ।

अब एक भरोसा तेरा है, इनकार मुझे तुम न कीजो ॥

३. तुम रहे विराज हो मन माहीं, मैं दूर समझता तुझे रहा ।

परगट हो अन्तर में अब तो, तुम मुझ को दर्श दिखा दीजो ।।

४. मैं बोगों विषयों में भटका, ओरउलझा जग के माहीं रहा ।

अब आया शरण तुम्हारी हूं, भोगों से मुझे बचा दीजो ।।

५. मैं भटकत भटकत थक हारा, पर ठौर मिली न कहीं मुझे ।

अब आया तुमरे द्वारे हूं, मुझ दीन को ठुकरा न दीजो ।।

६. शिवोम् पड़ा तुमरे चरणी, तुम ताम लो हाथ मेरा प्रियतम ।

अब सब कुछ मेरे एक तुम्हीं, मुझ दास को त्याग नहीं दीजो ॥

(२५)

१. मोह नहीं पीछा छोड़त मेरा ।

भटक भटक कर मैं थक हारी, परगट रूप घनेरा ॥

२. यह है मुझ को बहुत नचावत को वह, समझाया।
फिर भी कहत है नाचन को वह, समझाया बहुतेरा ॥
३. मोह पिशाच बना अति भारी, खेचत जग के ताईं।
नाना रूप धरे जग माहीं बनता मेरा तेरा ॥
४. मोह से बच मैं कैसे पाऊं, मारग कोई न सूझे ।
गुरु कृपा ही मारग मिलता,नहीं तो मेरा तेरा ॥
५. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरू कीजो, मोह से पिण्ड छुड़ाओ ।
नहीं तो अन्दर दैत्य बना यह दुख देता बहुतेरा ॥

(२६)

१. प्रभु मोरा घुंघट देयो हटाए ।
ता की मारी देख न पाती, न तुम सन्मुख आए ॥
२. अंधी बनी रही बैठी हूं, दीखत नाहीं कुछ भी ।
कैसे देखूं मुखड़ा तेरा, मुझ को समझ न आए ।
३. नाम रूप का परदा मो पर पड़ा है मन भरमाता ।
चेतन रूप तुम्हें न देखूं, जग ही दीखन आए ।
४. भौतिक दृष्टि चाहे जाए, अन्तर के पट खोलो ।
जगत भुलावा छूटत जाए, चेतन दृष्टि आए ।
५. तेरी किरिपा दृष्टि जिस पर, पापी भी तर जाता ।
मुझ पर भी हो ऐसी किरिपा, मन भ्रम दूर हटाए ।
६. पावन तेरे जल प्रवाह में, मल मल डुबकी लाऊं ।
ज्ञान हुआ अन्तर प्रकाशित, मन की तृष्णा जाए ।
७. हर दम नाम मैं सिमरूं तेरा, मन में भाव न दूजा ।

तेरे एक भरोसे प्रियतम, जीवन सुख को पाए।
८.तीर्थ शिवोम् कृपा हो मो पर घुंघट देयो हटाए।
सन्मुख देखूं प्रियतम मोरा, पी की सेज समाए।

(२७)

१. मेरी टेर सुनो प्रभु आए।
मेरे मन का दुख हर लीजो, कब की रही रिझाए।
२. तीर्थ शिवोम् हूं शरण तिहारी, मारो चाहे तारो।
चरण पड़ी हूं मेरे प्रियतम, नैनन नीर बहाए।
३. जगत बनावत दुखिया मो को, द्वार ठौर कछु नाहीं।
तुम बिन को नाहीं है मेरा, दुखड़ा जिसे सुनाए।
४. तुम तो बैठ मुरली बजावत, मस्त बने मन माहीं।
जाए किसे पुकारे अबला, मन का हाल सुनाए।
५. हे घन श्याम निहारो मुझ को, कब की ठाड़ी द्वारे।
तड़पत जाए जियड़ा मोरा, पी ही पीव सुनाए।
६. जमुना तीरे राह तकत हूं, कब आवे मेरा सजना।
मन तो दुविधाओं में डूबा धीरज क्यों मन पाए।
७. विनय शिवोम् करत मैं हारी, प्रभु सुनत है नाहीं।
जाय कहां पुकार करूं मैं, सूझे नहीं कोई॥

(२८)

१. हे माँ ! अन्तर जोत जगाओ।
अन्तर जोती सुख उपजावे, तम को मार भगाओ॥ २.

२.अन्तर होती तुमरी लीला, प्रकट होत मन माहीं ।
मनवा तो आनंद मनावे, अंतर नाद सुनाओ ॥
३. तुम कुण्डलिनी, तुम जगदम्बा, राधा शक्ति तुम हो।
करो अनुग्रह शरण पड़ा हूँ, गंगा प्रेम बहाओ ॥
४. मेरा अंतर हो परकाशित, प्रेम तेरा आलोकित ।
मोह शोक शंकाएँ भागें, ऐसा रूप दिखाओ ।
५.तेरी जोत से मेरी जोती, जले रहे आनन्दित ।
तुमरी कृपा दया पा जाऊं, दुख को दूर भगाओ ॥.
६. तुम विष्णु हो, तीर्थ स्वरूपा तीर्थ शिवोम् हे शरणीं ।
कृपा अब हे मां अम्बे, विपदा कष्ट मिटाओ ॥

(२९)

१. केशव जगत ने बहुत सतायो ।
बारम्बार उठा कर ऊंचे, फिर नीचे पटकायोः ॥
२. अपना स्वारथ सब ने कीनो, समय पड़े छिटकाए।
मीठा मीठा बन कर मोसे, अपना काम करायो ।।
३. जब मैं मन का दुखड़ा रोती, तब सुनता न कोई ।
उल्टे लांछन मुझे लगावें, मनवा बहुत दुखायो ॥
४. जब मैं तेरा नाम सुनाती, न कोई सुनने हारा।
पागल कह कर मुझे पुकारे, मूरख मुझे बनायो ॥
५. केशव तेरा जगत अनोखा, जो भी इस में आया ।
दुख ही पाया उस ने आ कर, दुख ही गले लगायो ॥

६. तीर्थ शिवोम् संभालो जग को, तू ने इसे बनाया ।
अजब अनोखी माया इसकी माया ने उपजायो ||

(३०)

१. प्रभु भला, बुरा, जैसा- कैसा, मैं तेरा हूँ मैं तेरा हूँ ।
मैं जाऊं छोड़ कहां तुझको, मैं तेरा हूँ, मैं तेरा हूं ।
२. यह जीवन नैया लहरों में, उतराती डूबत बढ़त रही ।
पतवार चलाओ, पार करो, मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं ॥
३. अपना बल मुझमें न कुछ भी, जा से मैं नैया पार करूं ।
अब एक सहारा तेरा है, मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं ॥
४. मेरा मुझ में न कुछ बाकी, जो कुछ भी है, सो है तेरा ।
तू है तेरा, मैं हूं तेरा, मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं ॥
५. यह तन मन सौंप दिया तुझको, मेरा मुझ में न शेष रहा।
अब तू ही तू है, तू ही तू, मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं ॥
६. दर तेरा ही मेरा घर है, तेरा घर यह मनवा है बना ।
न छोडूं तेरे दर को कभी, मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं ॥
७. है विनती करत शिवोम् रहा, अपने चरणों में रख लीजो।
दूजा दर मैं जानत नाहीं, मैं तेरा हूं, मैं तेरा हूं ॥

(३१)

१. मेरे एक तुम हो, तुम्हीं एक तुम हो ।
नहीं कोई दूजा, तुम्हीं एक तुम हो ॥

२. करूं क्या किसी को मैं अपना बना के।
नहीं जब है अपना, तुम्हीं एक तुम हो॥
३. है स्वारथ के साथी, जगत में सभी ही।
है स्वास्थ नहीं है, तुम्हीं एक तुम हो॥
४. करूं क्या भरोसा, फिसलते जगत पर।
तुम्ही एक चिर हो, तुम्हीं एक तुम हो।
५. नहीं होगा प्रापत, मुझे सुख जगत में।
कि सुख देने वाले, तुम्हीं एक तुम हो॥
६.जगत भासता है, कि सुन्दर मनोहर।
मगर एक सुन्दर, तुम्ही एक तुम हो॥
७. रहे साथ तुम मेरे, हरदम निरन्तर।
निभाते हो हरदम, तुम्हीं एक तुम हो।
८.कभी भूल जाऊं, तुम्हें भूल से मैं।
नहीं भूलते तुम, तुम्हीं एक तुम हो।
९. करो अब कृपा, हे मेरे प्यारे प्रियतम।
हो शिव ओम् के अब, तुम्हीं तुम एक हो।

(३२)

१.मैं रहा फिरता ही, फिरता अब भी हूं मैं फिर रहा।
वासनाओं के थपेड़े, खाता हूं मैं फिर रहा।

२.चैन पल भर का नहीं, जाता इधर से उधर मैं आराम का
अवसर नहीं, हूं भागता मैं फिर रहा ।
३. रास्ता मुझ को न सूझे, किस तरफ जाऊं कहां ।
भटक कर मैं रास्ता, भटका हुआ हूं फिर रहा ।
४.पूछती दुनिया मुझे है, किधर जाना है तुम्हें ।
क्या बताऊं किधर जाना, क्या पता बस फिर रहा ।
५. जीव भी ऐसा भटकता, इस जनम से उस जनम ।
आवागमन है छूटता न, जीव रहता फिर रहा ।।
६. गुरुदेव ही किरिपा करे, आवागमन छूटे तभी ।
जीव तो फिरता फिरे, है फिरता फिरता फिर रहा ।।
७. शिव ओम् अब गुरुदेव हे, बस भी करो फिरना मेरा ।
फिरते फिरते इस जगत, कब तलक फिरता ॥

(३३)

१. प्रभु मैं, तुम को कैसे पाऊं, कैसे विषय हटाऊं ।
भोगों से छुटकारा नाही, सम्मुख कैसे आऊं ॥
२. मनवा आशाओं में उलझा, मन से निकलत नाहीं ।
चंचल चपल बना है ऐसा, कैसे समझा पाऊं ॥
३. कैसे खोजूं, मैं आराधूं, कुछ भी सोच न पाता ।
क्या कह कर मैं तुम्हें पुकारूं, निश्चय कर न पाऊं ॥
४. माया मोह है ऐसा बंधन, कोई छूट नहीं पाता ।

तुमरी कृपा बिना न प्रभुजी, मैं छुटकारा पाऊं ॥

५. ज्ञान भक्ति न साधन संयम, न मैं ध्यान जमाऊं ।

फिर मैं क्योंकर अन्तर्मुख हो, तुमरा दर्शन पाऊं ॥

६. जब तक मनवा निर्मल नाहीं, प्रेम प्रकट हो कैसे।

जब तक मेरे प्रेम नहीं मन, किरिपा कैसे पाऊं ॥

मैं अज्ञानी बालक तेरा, बुद्धिहीन, प्रभु मोरे ।

कुछ करने की शक्ति नाहीं, कुछ कर कैसे पाऊं ॥

८. अहंकार पीछे है लागा, मन मलीन है मेरा ।

ऐसे करत पुकार मैं कैसे, कैसे तुम्हें मनाऊं ॥

९. घूम जगत में सभी ठिकाने, आया शरण तुम्हारी ।

अब तो लाज रखो मोरे स्वामी, कैसे हृदय दिखाऊं ॥

१०. अब मैं शरण तिहारी मुझको, केवल एक सहारा ।

तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणों में, कैसे मैं उठ पाऊं ॥

हनुमानजी

(१)

१.जय जय जय हे करुणा सागर, हनुमान जग स्वामी ।

घट घट माहीं तुमरा वासा, हर घट के तुम स्वामी ॥

२.शरण पड़े जीवों पर किरिपा, यही स्वभाव तुम्हारा ।

देत मिलाय राम सभन को, राम दूत हे स्वामी ॥

३. जाग्रत होते घट के भीतर, क्रिया अलौकिक करते ।
मन निर्मल करते जीवों का, दयावन्त हे स्वामी ॥
४. मन आनन्दित तुम हो करते, शरण पड़े भक्तों का ।
कर्म क्षीणता मानव पाता, तव किरिपा हे स्वामी ||
५.होते नहीं प्रकट न जब तक, राम दर्श नहीं होता ।
तुमरी किरिपा राम मिलें तब, कृपा करो हे स्वामी ॥
६. माता तुल्य स्वरूप तुम्हारा, प्रणतपाल सब ही के ।
करो अनुग्रह अनुग्रह मो पर भी अब, भगत पाल हे स्वामी ॥
७. कर उपकार मेरे पर प्रभुजी, गुरुदेवों के देवा ।
हो कर प्रकट प्रकाशित मुझ में, राम मिलोओ स्वामी ॥
८.तुमरे लिए कठिन न कुछ भी, अतुलित तुम बलधामा।
राम काज करने को आतुर, रहते तुम हो स्वामी ॥
९. हरण दुख ही राम काज है, अनथक तुम हो करते ।
जब तक राम काज है बाकी, नहीं आराम है स्वामी ॥
१०. दुष्ट दलन, भव भंजन तुमरा, काज सभी जग जाने ।
शरण पड़ा हूं तुमरी मैं भी, मुझ को तारो स्वामी ॥
११. तीर्थ शिवोम् विनय कर जोड़े, कृपा करो अब मो पर ।
द्वार तुम्हारे खड़ा हूं याचक, सुनिए हे प्रभु स्वामी ॥

(२)

१. हनुमान तुम जागो, जागो, पवन पुत्र जागो ।
मन की पीर हरो प्रभु मोरी, हनुमान तुम जागो ॥

२. कब से रहा जगावत तोहे, पर तुम नाहीं जागे ।
अब तो जाग उठो हनुमाना, पवन पुत्र तुम जागो ॥
३.चेतन शक्ति के तुम स्वामी, बीज रूप घट माहीं ।
तुमरे जागे कारज सिद्धि, पवन पुत्र तुम जागो ।
४. तुम सोए, जग दुख पाता है, जागे सुख अपनाता ।
जाग उठो, मन हो आनन्दित, पवन पुत्र तुम जागो ।।
५. राम कृष्ण शंकर तुम ही हो, तुम जगदम्बा सीता ।
जाग उठो, सब हों परकाशित, पवन पुत्र तुम जागो ॥
६. राग काज के रहते प्रभुजी, तुम कैसे सोए हो ।
राम काज निर्मलता मेरी, पवन पुत्र तुम जागो ॥
७. आपन रूप पछानो हनुमत, जगत के स्वामी तुम हो।
कर्ता, भर्ता, हरता तुम ही, पवन पुत्र तुम जागो ॥
८. निद्रा तेरी बहिर्मुखी है, अन्तर्मुखता जाग्रत ।
अन्तर्मुखता धारण कर के, पवन पुत्र तुम जागो ।।
९. मन में प्रकट होय हे स्वामी, मन आनन्दित कर दो।
परमारथ हो लाभ मुझे तब, पवन पुत्र तुम जागो ॥
१०. अन्तर नाड़ी तेरा पथ है, तीव्र वेग गति तेरी 1
षट् चक्रों का भेदन कर दो, पवन पुत्र तुम जागो ॥
११. गुरुदेव की नाईं तुम हो, करत कृपा जीवों पर ।
अपना विरद सम्भालों प्रभुजी, पवन पुत्र तुम जागो ॥
१२. तीर्थ शिवम् दया हनुमन्ता, विष्णु तीर्थ स्वरूपा ।
करो कृपा अब मो पर स्वामी, पवन पुत्र तुम जागो ॥

(३)

१. हे पवन पुत्र तुम प्राण रूप, मुझ में भी तुम्हीं प्रकाशित हो ।
संचालन करते प्राणों का, कुण्डलिनी रूप प्रकाशित हो ।
२. जब होता तुम में आन्दोलन, जग नाम रूप होता तब ही ।
हर जीव, वस्तु और दृश्य बने, कण-कण में तुम्हीं प्रकाशित हो ॥
३. कुण्डलिनी रूप में जाग्रत हो, मन निर्मल करते जीवों का।
अन्तर्मुख क्रियाशील होते, हर किरिया माहीं प्रकाशित
४. तुमरी किरिया किरिया के बिना, है जीव नहीं मुक्ति पाता ।
तुम राम रूप, हो शिव स्वरूप, तुम चेतन रूप प्रकाशित हो ॥
५. तुम अन्तर्मुखी प्रवाहित हो, तब करते क्षीण हो कर्मों को ।
तब राम दर्श मानव पाता. तब होते राम प्रकाशित हो ॥
६. जागो अब मेरे अन्तर में, हो कृपावन्त मुझ पर स्वामी ।
मन की मलीनता दूर तभी, अन्तर में राम प्रकाशित हो ॥
७. जब क्रियाशील होते तुम हो, तब लीला से मन सुख पाता ।
होता आनंद प्रकट तब ही, अन्तर आनंद प्रकाशित हो ।
८. संहार करो प्रभु दुष्टों का, जो कर्म रूप मन में बैठे।
तब होवत राम प्रकट मन में, दिव्यानंद प्रकाशित हो ।।
९. है तीर्थ शिवोम् की यह बिनती, तुम पवन पुत्र का रूप धरो ।
हो अन्तर्मुखी प्रवाहित तुम, मम आतम रूप प्रकाशित हो ॥

वैराग्य

(१)

१. मन उपराम हुआ भोगों से, काहे जग में जावे
विषयों में जब रस ही नाहीं,क्यों विषयन को धावे ॥
छूटी दुनिया, त्यागी माया, न करना, कुछ कहना ।
अब जग में कर्तव्य नहीं कुछ, काहे मन भरमावे ।।
३. पर अन्तर्मन की वृत्ति, विषय संजोए बैठी ।
कर खण्डित उपराम भावना, जग वापिस ले जावै ॥
४. विष है यह साधक ताईं, मन समझाएं रखें।
नहीं तो वापिस जग में मनवा, फिर तृष्णा लग जावें ।।
विष्णु तीर्थ प्रभु तुम्ही सम्भालो, मन से लड़ न पाता ।
जग- उपराम रहे मन मेरा, जगत में न भरमावे ।।
६. तीर्थ शिवोम् गुरु किरपा से, साधक सफल मनोरथ ।
अन्तर्वृत्ति रहे अखण्डित, जग में काहे जावे ॥

वेदान्त

(१)

१. अनत अपार सागर है दुनिया, दूर किनारा इस का है।
डूबत नाव रही मझधारे, और सहारा किस का है ।
२. डूबा दुःख में जग सारा ही, सुखी न दीखत कोई ।
क्या से क्या हो जाता क्षण में, होत इशारा तेरा है |
३. होता वही सुखी जग माहीं, शरण तुम्हारी जो होता ।

अन्तर पावत आनंद वही है, होत दुलारा तेरा है ॥
४. नहीं है पूछत किसी को कोई, जग की रीति चली आई।
पूजत होता सभी जगह, तेरे आकाश का तारा
५. तू व्यापक सर्वत्र समाना, न कोई देखत है तुझ को ।
कृपा तुम्हारी जो पावत है, करे नजारा तेरा है ॥
६. कण कण में मैं ढूंढत फिरता, मिला किनारा नहीं मुझे ।
कहां, किसे, जाय क्या पूछू नहीं ठिकाना तेरा है ॥
७. तीर्थ शिवोम् कृपा बिन तेरी, अन्त तुम्हारा मिला किसे
सद्गुरुदेव मिलाओ अब तो, प्रियतम रूप किनारा है ॥

(२)

१. हौं आतम राम विचारा
राग द्वेष मुझे कछु नाही, काम क्रोध निस्तारा ॥
२. राजा रंक सभन में एको, ब्रह्म व्यापक रहता ।
धन निर्धन का भेद नहीं है, आतम राम नयारा ॥
३. वेद पाठ है पण्डित करता, मूर्ख बना अंजाना ।
आत्म तत्व में भेद नहीं कुछ, अनुभव अपरम्पारा ॥
४. ब्रह्म समाया सब जीवन में, जीव सभी उस माहीं ।
एक अनेक बना है कैसा, फिर भी सब से न्यारा ॥
५. विष्णु तीर्थ प्रभु किरिपा कीनी, यह रहस्य प्रकटाया।
सब में एक ब्रह्म को देखूं, विश्व बना विस्तारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर की, जा से भेद यह पाया ।
आतम राम एक ही व्यापे, संशय का निस्तारा ॥

समझावन

(१)

१. भाई तोहे अजहूं समझ न आई, बार बार समझाई।

२. जग विषयन में तू लिपटाना, राम नाम से तू फिसलाना।

उमरिया तेरी बीतत जाए, तोहे समझ न आई ॥

३. समय गंवाए सोए खाए, दिन बीते मन को भरमाए।

कुछ भी सूख तू देख न पाया तोहे समझ न आई ॥

४. अहंकार में फूला फिरता, मद में तू है रहा मटकता।

मन अपने को गन्दा करता, तोहे समझ न आई ।।

क्रोध बड़ा ही अत्याचारी, तृष्णा देत है बुद्धि मारी।

इनमें भटका फिरे दीवाना, तोहे समझ न आई ।।

६. न समझे अपना बेगाना, गाए तू अपना ही गाना।

मन तेरे माया का परदा, तोहे समझ न आई ॥

७. जो कोई तुझ को समझाए, उल्टा उस का बुरा मनाए।

बना है तू ऐसा अभिमानी, तोहे समझ न आई ॥

८. विष्णु तीर्थ प्रभु की किरिपा, न होवेगी तुझ पर वर्षा।

जब तक मन न हो परभावित, तोहे समझ न आई ।।

९.अब भी थोड़ा समय है बाकी, तोहे समझ न आई ॥

(२)

१. जब प्रेम पंथ पर पांव धरा, फिर मन में सोच रही क्यों तू ।
सोचन का काम जगत का है आगे न बढ़त रही क्यों तू ॥
२. वह नजर मिलाए या नाहीं, प्रियतम का भाव पिया जाने ।
तू प्रेम का भाव बढ़ाती जा, लज्जा है करत रही क्यों तू ॥
३. सारा जग रूठ गया तुझ से, जग रूठन की परवाह न कर ।
इक राम नहीं रूठे तुझ से, जग चिन्ता करत रही क्यों तू ॥
४. तू सच्ची प्रेमी प्रियतम की, आगे ही कदम बढ़ाए जा ।
वापिस लौटन की सोच नहीं, मन में संकोच रही क्यों तू ॥
५.तेरे हिरदय में प्रेम विरह, अब नहीं बुझाए कभी बुझे ।
बस प्रेम विरह में जलती रह, जलने से रोक रही क्यों तू ॥
६. है तीर्थ शिवोम् हुई घायल, घावों को तू सहलाती रह ।
इन घावों में ही मस्ती है, मस्ती को भूल रही क्यों तू ॥

(३)

१. है मानुष जनम हुआ प्रापत, तुझे अवसर यह अनुपम दीनो ।
भव छूटन की तेरी बारी है, यह कृपा अपार प्रभु कीनो ।।
२. इस जोग तेरा मन था ही नहीं, पर प्रभु कृपा कर दे ही दिया ।
अब चूक न जाए यह अवसर उपकार प्रभु अनुपम कीनो ॥
३.मन तेरा जाय न भोगों में, बस लगा रहे हरि सिमरन ।

यह बात भुला न तू मन से, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ।।

४. भवसागर पार उतर जाना, यह ही कारज है प्रथम तेरा ।

हरि सिमरन पार लगाए तुझे, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ।

५. हरि सेवा समझ तू कर्म करे, और जीवों का उपकार करे ।

इस से ही नैया पार लगे, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ॥

६. है विनय शिवोम् प्रभु आगे, है वृथा न जाय जनम कहीं । '

प्रभु प्रेम मुझे अपना दीजो, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ॥

(४)

राम कृपा अपने पर चाहे, राम समर्पित हो जा तू ।

राम कृपालु, बड़े दयालु, राम शरणगत हो जा तू ।।

२. राम बिना नहीं कोई तेरा, राम सभी रिश्ते नाते ।

नाता जो भी चाहे रखले, राम समर्पित हो जा तू ॥

३. राम अधारा सब जग का है, राम प्रतिपालन करता ।

राम तेरा भी एक सहारा, राम समर्पित हो जा तू ॥

४. राम शरण जावे जब मन से, राम पुकार सुनत सब की ।

हस्तवरद वे देते सब को, राम समर्पित हो जा तू ॥

५. अन्तर राम करे परकाशित, राम चित्त निर्मल करता ।

राम ही हो मन में आलोकित, राम समर्पित हो जा तू ॥

(५)

१. काहे भजत न कृष्ण मुरारे ।

२. जिन की केवल कृपा दृष्टि ने, पतित अनेकों अब तक तारे

३. डूबत जात रहे भव सागर, बाँह पकड़ी कर लिए उबारे ।

४. पशु पक्षी और मानव दानव, जिस ने सभी समान उधारे ।

५. जगत जीव माया में डूबत, बिन परमार्थ विचारे ।

६. तीर्थ शिवोम् लाज् राखो हरि, पड़ा हूं चरण तुम्हारे ॥

(६)

१. तू राम से प्रेम न पाए रहा, जीवन को यूं ही गंवाए रहा।

तेरी उमरिया बीती जाए रही, तू विषयों में भरमाए रहा ॥

२. तू अपने मन में सोच जरा, यह मानुष देह अमोलक है ।

इस को तू यूं बरबाद न कर, जग के भोगों उलझाए रहा ||

३. सत कर्म नहीं तू करता है, प्रभु प्रेम में रस तुझ को नाहीं ।

मन तेरा निर्मल हो कैसे, तू संचित कर्म कराए रहा ॥

४. यह सार हीन जग है सारा, सब छूट यहीं रह जाएगा।

५. तू जग संचय में भीग रहा, कितना भी हूं समझाए रहा ।।

है राम ही केवल सार यहां, तू राम भजन में मन को लगा ।

इस में ही सच्चा स्वारथ है, क्यों जग में यूं भरमाए रहा।

६.गुरु देव प्रभु की शरण गहो, वह ही मारग बतलाएगा।

गुरुदेव बिना मुक्ति नाही, गुरुमारग तू झुठलाए रहा ।

७. है तीर्थ शिवोम् रहा समझा, तू अब भी समझ मेरे भाई ।

सतकर्म, राम की भक्ति बिन, भव सागर न होए रहा ।

(७)

१. कुछ भी किया भजन न तू ने, जीवन बीते जात है |
संग चले न यह संसारा, सब कुछ यूं ही जात है ॥
२. लाख चौरासी भटकत भटकत, मानुष तन यह पाया है।
महिमा इस की समझ न पाया, यूं ही जीवन जात है।।
३. कौन पराया अपना तेरा, मन के ही सब हैं नाते ।
जिस को समझा तूने अपना साथ नहीं वह जात है ॥
४. विषय विलास में तू मन दीना, है यह सब दुख का कारण ।
तू सांस भरोसा पल भर नाहीं, निकल गया न आत है ॥
५. पाई पाई जोड़न ताईं, लोभ में रहा भुलाना तू ।
धन दौलत रह जात यहीं पर, अपने कर्म ही जात है ॥
६. तू क्यों नहीं है समझे भाई, तीर्थ शिवोम् है समझाए ।
काहे रीझा तू विषयन में, राम भजन न गात है ॥

(८)

१. तेरा पल पल घटता जाए, कर राम भजन दिनराती ।
राम भजन से क्यों घबरावत, काहे तू अलसाती ॥
राम भजन से मन निर्मल हो, आशा तृष्णा जाए ।
अन्तर होवत है परकाशित, बिना तेल और बाती ॥
३. गुरु कृपा से राम प्रकट हों, घट मे ही दर्शाए ।
राम की शक्ति हो आलोकित, मन निर्मलता लाती ॥
४. राम भजन है सुख का दाता, शोक मोह को मेटत

राम जगत का है रखवाला, मन से तृष्णा जाती ॥
५. तीर्थशिवोम् राम भज मनवा, भव जल तू तर जावे ।
राम भजन और राम की सेवा, राम से ही मिलवाती ॥

(९)

१. तू जग में क्यों भरमाए रह्या, पर राम नाम न बोले ।
तू मन को यूं उलझाए रह्या, तेरा मनवा हरदम डोले ॥
२. मन की गुत्थी उलझी तेरी, तू सुलझा नहीं पाता है।
तू और ही कसता जाए, पर मन की गांठ न खोले ॥
३. बिना विचारे कर्म तू करता, भले बुरे का ज्ञान नहीं है।
सच्चा झूठा देखे न तू, करता बिन ही तोले ।।
४. कर्म तेरे सब धर्म विरोधी, तु तनिक विवेक न करता ।
तू सेवा धर्म नहीं मन तेरा, कर्म हैं तेरे पोले ।
५. अब भी सम्भल तू मेरे भाई, जीवन तेरा तो सँवरे ।
नहीं तो जीवन बीता जाए, व्यर्थ जाए यह चोले ।।
६. राम भजन और सत्य कर्म कर, राग को दूर हटा तू ।
अन्तर मारग खुले तभी तो, मन अपने को धो ले ।।
७. तीर्थ शिवोम् है बीता जीवन, बाकी रहा, सम्भल तू ।
त्याग क्रोध लोभ और माया, चित जड़ गांठ तू खोले ||

(१०)

१. जाग बावरी तू क्यों सोवे, जागन बेला आया ।
तू है सोवत लम्बी ताने, पीव तेरा घर आया ॥
२. पी तेरा तोहे देखन आया, तेरी अखिया मूंदी।
अखियां खोल, पी सन्मुख तेरे, जो तेरे मन भाया ॥
३. तू है खोजत फिरती पी को, पी खोजत है तोहे ।
अब पी है तेरे घर आया, तम तेरे मन छाया ॥
४. तम को दूर हटा मेरी सजनी, साजन सन्मुख तेरे ।
तुझ को नाही दीखत प्रियतम, तेरा मन भरमाया ॥
५. तीर्थ शिवोम् प्रभु घट माही, कोई देखत नाहीं ।
अखियां खोले, घट में दीखत, जगहि प्रभु समाया ।।

(११)

१. जब राम तेरा रखवाला है, तब कौन बिगाड़ करे तेरा।
चिन्ता काहे करता है, अब कौन उजाड़ करे तेरा ॥
२. सुख दुख जो कुछ भी तू भोगे, कर्मों का खेल यह सारा है।
तू मन में राम भरोसा रख, तब कौन बिगाड़ करे तेरा ॥
३. मन राम तेरा निर्मल कर दे, फिर सुख दुख नहीं सताते हैं ।
जब जग की आशा छूट गई, तब कौन बिगाड़ करे तेरा ॥
४. तुम राम शक्ति की शरण गहो, चिन्ता तृष्णा त्यागो मन से
मन आशा तृष्णा रहित हुआ, तब कौन बिगाड़ करे तेरा ॥

जग से मन को जो तू मोड़े, चरण राम में उस को जोड़े।
मन जग की चिन्ता जो त्यागे, तब कौन बिगाड़ करे तेरा ॥

६. तेरे दुख का कारण यह है, तू राम को दूर समझता है ।
यदि राम करे अन्तर अनुभव, तब कौन बिगाड़ करे तेरा ॥ ७.
शिवोम् राम शरणागत हो, भय शोक मुक्त कर अपने को ।
यह मन में निश्चय हो जाए, कब कौन बिगाड़ करे तेरा ।।

(१२)

१. अन्तर तेरे होत निरन्तर, सुनत नहीं आवाज है ।
अहंकार में भूल रहा तू, बना फिरे महाराज है ।।
२. अन्तर के सुर बिगड़ रहे हैं, टूटे मन के तार हैं।
फिर भी गाए जात जगत में, टूटे सब ही साज़ हैं
३. जगत विषय में भटक रहा तू, भूला अपने राम को ।
मारी मति गई है तेरी, आवे तुझे न लाज है ।
४. जो करना, सो करत नहीं तू, भूले फिरे बेकार में तू ।
राम की सेवा कर ले प्यारे, यही तो तेरा काज है ।
५.पास तेरे धन नाम नहीं है, भोगों ताईं भटक रहा ।
जगत भोग की उठत निरन्तर, तेरे तन में खाज है ।
६.चैन तुझे पल भर न मिलता, मन हंकार भरे फिरता ।
निर्धन हो कर भी तू रखता, अपने सिर पर ताज है ।
७. तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, समय गंवा तू यूं न ही ।
राम नाम ही केवल जग में एको, रखने वाला लाज है ॥

(१३)

१.जगत में राम चरण सुखदाई, वही सर्वत्र समाई ।

जगत बिसारे राम चरण है, वही करत रखवाई ॥

२. राम चरण जो ध्यान धरत है, मन निर्मलता पाई ।

जगत राग का त्याग करत वह भवसागार तर जाई ।।

३. गहरा यह जल भवसागर है, उतरा पार न पाई ।

राम चरण ही नाव है ऐसी, भव जल देत तराई ।।

४. माया क्रोद मोह में उलझा, जीव जगत के माहीं ।

राम चरण उद्धार करत हैं, बंधन देत छुड़ाई ॥

५. अहंकार में डूबा मानव, उचित सोच न पाता ।

राम चरण ही औषध ऐसी, माया रोग हटाई ।।

६. मन में राम चरण धारण कर, राम चरण सेवा कर ले।

राम चरण ही मुक्त करत हैं, जन्म मरण हट जाई ॥

७. तीर्थ शिवोम् राम चरणों में, मन अपना थिर कर ले तू ।

हरत विपद सब राम चरण ही, राम चरण सुखदायी ।।

(१४)

१. तेरी दो दिन की जिन्दगानी है, तू भजन करत नाहीं काहे।

तू जीवन यूं ही बिताय दिया, तू सिमरन करत नाहीं काहे ।।

२. तू जनम अमोलक पाए रहा, पर सद् उपयोग नाही करत।

यह मानुष जनम है बीत चला, तू भजन करत नाहीं काहे ॥

३. तू विषयों में मन को दीनों, पर सुख भी हाथ नहीं आया।

तू मन में समझत क्यों नाहीं, तू भजन करत नाहीं काहे ॥

४. यह माया केवल छाया है, इसमें तू क्यों भरमाय रहा।

तू माया कोई साथ नहीं जाय, तू भजन करत नाहीं काहे ॥

५. जब सांस का पंछी उड़ जाय, फिर लौट नहीं वह आता है।

मिथ्या जीवन में मत भरमा, तू भजन करत नाहीं काहे ॥

६. तेरे सुख के संगी साथी है, है साथ नहीं दे पाएगा।

इन पर अभिमान नहीं कर तू, तू भजन करत नाहीं काहे ॥

७. तीर्थ शिवोम् राम गुण गाए, विषयातीत अवस्था पाए।

तेरा संग निभाए राम रहा तू, भजन करत नाहीं काहे ।।

(१५)

१. जब प्रेम का नाता तोड़ दिया, फिर दुःख को कौन भगाए भला।

जब जग से नाता जोड़ लिया, फिर मन समझाए कौन भला ॥

२. है प्रेम सकल सुख का कारण, प्रियतम को प्रेम ही पाता।

जब प्रेम नहीं तो कुछ भी नहीं, प्रेमी बिन पाए कौन भला ॥

३. यह जगत राग और द्वेष भरा फिर प्रेम रमे इस में कैसे ।

बिन प्रेम न मन निर्मल होता, इस को ठुकराए कौन भला ॥

४. है राम को पाने का मारग, मन प्रेम, हृदय को सरल बना ।

बिन प्रेम नहीं होते प्रापत, मुंह प्रेम से मोड़े कौन भला ।।

५.अभिमान किया पुरुषारथ का, पर राम मिले मुझ को न कहीं ।

जब प्रेम प्रभु का मारग है, मारग से हटाए कौन भला ॥

६. प्रभु विष्णु तीर्थ करुणासागर, हैं मार्ग प्रेम का दिखलाते ।

उन की किरिया से प्रेम प्रकट, किरिपा बिन पाए कौन भला ॥

७. तीरथ शिवोम् प्रभु चरणों में मन अपने प्रेम में भर दीजो ।

मन मस्त बना प्रेमी फिरता, फिर तुम्हें छुपाए कौन भला ॥

कृष्ण

(१)

१. श्याम तू ने वंशी मधुर बजाई ।

वंशी धुन घट माही बाजत, सुनत हृदय हर्षाई ॥

२. वंशी धुन, मन मस्त होत है, परगट नाद अनेकों ।

रंगा रंग है होत प्रकाशित, राधा दौड़ी आई ।।

३.राधा ही आराधन करती, धुन सुनती अन्तर में ।

बिन वंशी धुन अन्तर्माहीं, तृष्णा नहीं बुझाई ॥

४. वंशी से आनंद प्रकाशित, मन मस्ती में आता ।

वंशी धुन से निर्मलता हो, अहंकार मिट जाई ॥
५. वंशी से आलोक फैलता, होवत दिव्य क्रियाएं ।
परगट होवत भाव अनेकों, मन का तम मिट जाई ।।
६. श्याम तुम्हारी किरिंपा मुझ पर, वंशी मधुर सुनावो ।
मैं वंशी सुनती रह जाऊं, मन हर्षित हो जाई ॥
७. वंशी धुन है माया शक्ति, वही जगत उपजाती ।
परगट हो भक्तन मन माहीं, जगत सिमटता जाई ॥
८.क्रियाशील हो धुन वंशी की, कर्म शुद्ध वह करती ।
लीलाएं उस की है न्यारी, अनंद दियो बरसाई ॥
९.सद्गुरु किरिपा श्याम प्रकट हो मधुर वंशी धुन बाजे ।
जैसे वंशी वजत जात है, ज्ञान प्रकाशित होई ।।
१०.तीर्थ शिवोम् श्याम माधुरी, मन मोरा हर लेती ।
जगत ज्ञान मन से विलीन कर, श्याम रूप हुई जाई

(२)

१. हरे कृष्ण बोल मनवा, हरे कृष्ण बोल तू ।
राम सिमर ले प्यारे, हरे कृष्ण बोल तू ।।
२. बाहर लक्ष्य हटाय कर, अन्तर लक्ष्य तू देय ।
राम नाम हिरदय बसे, हरे कृष्ण बोल तू ।।
३. आया था हरि नाम को, लगा जगत के काज ।
हरि नाम मन देय कर, हरे कृष्ण बोल तू ॥
४. लूटा जाय जो तुझे, हरि नाम तू लूट ।
नहीं तो पछताना पड़े, हरे कृष्ण बोल तू ॥

५. मानव सोता तू रहा, जनम अकारथ कीन ।
राम नाम सन्मुख रहे, हरे कृष्ण बोल तू ।।
६. माया मरती न कभी, मरता सदा शरीर ।
आशा तृष्णा त्याग कर, हरे कृष्ण बोल तू ।।
७. मानुष तन तो पाया तूने, है दुर्लभ यह देह ।
ममता मैं तू क्यों रमा, हरे कृष्ण बोल तू ॥
८.जो आया थिर न रहा, गए अन्त तज देह ।
मनवा-जनम सुधार तू, हरे कृष्ण बोल तू ।।
९. विरला जाने भेद यह, माया छाया एक ।
तू मन इस में न लगा, हरे कृष्ण बोल तू ।।
१०.नहीं भरोसा देह का, जाय पल में एक ।
काहे जग मन देत है, हरे कृष्ण बोल तू ॥
११. बिनस जात सारा जगत, न विनसे इक राम ।
ता गति पावन के लिए, हरे कृष्ण बोल तू ॥
१२. तीर्थ शिवोम् कहत रहा, समझाय समझाय ।
आसक्ति का त्याग कर, हरे कृष्ण बोल तू ॥

(३)

१. हे सलोने श्याम सुन्दर, क्यों खड़े मुस्कात हो ।
तान वंशी की मधुर से, मन लुभाए जात हो ।
२. वंशी तेरी बेढ़ब निराली, तान जग उपजाए है ।

तान ही जग को समेटे, कैसा खेल रचात हो ।

३. लीलाओं घटनाओ को देखत, जात तुम मुस्कात हो ।

अपनी रचाई अपनी लीला, में रमे ही जात हो ।

४. तान ही जग में समाई, सारी घटना तान की ।

तान है कण में व्यापक, तान में मन भात हो ।

५. तान ही अन्तर्मुखी हो, जीव की विपदा हरे ।

तान देत मिलाए तुम से, तान सुनत सुनात हो ॥

६. हे प्रभु किरिपा करो अब, तान में मनवा लगे ।

शिव ओम् सुर में तान हो, तुर फिर कहीं न जात हो ।

प्रेम

(१)

१. प्रभु ने प्रेम रंग रंग दीनो।

अजब रंग है इस रंगने में, रंगा रंग कर दीनों ।

२. मस्ती मन में छाय रहत है, हृदय बना है प्रेमी ।

प्रेम रंग जग रंगा है दीखत, ऐसा रंग है कीनो ॥

३. मन विकार अब ठहर सकत न, प्रेम रंग मन माहीं ।

जगत टिके न अन्तर में अब रंग, अनूठा कीनो ॥

४. दुखिया जग में, सुखी भई, मैं हृदय रूप बदलाया।

प्रेम रंग में मनवा भीगा, प्रेम रंग कर दीनों ॥
५.जीव अछूता रंग से रहता, सुखी दुःखी होवत है
प्रभु प्रेम मस्त भई मैं, मनवा है रंग दीनो ॥
६.तीर्थं शिवोम् प्रभु रंग रंग्या, दूजा रंग न चढ़ई ।
विष्णु तीर्थ प्रभु किरपा ऐसी, वर्षा रंग की कीनो ॥

(२)

१.मैं राम जी की भगत कहाऊं ।
ध्यान धरूं, दिन रात उसी का राम ही के गुण गाऊं ॥
२. सेवा राम समझ कर कर्मा, राम की दास कहाऊं ।
राम ही मेरे प्राण अधारा, राम ही में चित्त लाऊं ॥
३. राम ही मेरे आगे पीछे, वही सम्भालन हारा
ऊठत, बैठत, हर दम मनवा, राम नाम सुख पाऊं ॥
४. तृष्णा मोहे राम नाम की, राम ही में मन लागा।
राम नाम बिन कछु न सुहावे, राम तजि अन्य न जाऊं ॥
५. तीर्थ शिवोम् राम मन रंग्या, राम का रंग अनूठा ।
राम-नाम की लटक है लागी, राम ही आनंद मनाऊं ॥

(३)

१. हरि तुम नयनन माहीं समाय, फिर भी नजर न आए।
होकर भी समीप मेरे प्रियतम, फिर भी पकड़ न आए ।
२. मैं खोजत जग में प्रभु तुम को, पर मैं देख न पाती ।

हो कर नयनन, हिरदय अन्दर हो, तुम हाथ न आए ||

३. तुम को देखन वाले नयना, हैं अन्दर के नयना ।

अन्तर चक्षु खुले न तब तक, कहीं नजर न आए ।

४. बिन निर्मलता, अन्तर नयना, जीव के खुलत नहीं हैं ।

राम कृपा न होवे तब तक, निर्मलता नहीं आए ॥

विष्णु तीर्थ प्रभु मन निर्मलता, बिन किरिया नहीं होवत ।

तब ही अन्तर नयना खुलते, राम नजर में आए ।

६. तीर्थ शिवोम् कृपा करो मो पर, दया दृष्टि हो मुझ पर।

राम दर्श में पाऊं जग में, मन निर्मल हो जाए ।।

(४)

१. आन मिलो सजना मेरे प्रियतम, कब की राह निहारू ।

खड़ी द्वार पर करूं प्रतीक्षा, तुमरा राह निहारूं ॥

२. दिन पर दिन रातें भी बीती, तुम्हें तरस न आया।

हार सिंगार किए मैं हरदम, तुमरा राह निहारूं ॥

३. मन भी शुद्ध किए मैं हरदम, तुमरा राह निहारूं ।

सभी अकारथ, तुम न आए, तुमरा राह निहारूं ।।

४. किस को पूछू, कैसे खोजूं, तेरा मर्म बताए ।

किसे बताया नाहीं अब तक तुमरा राह निहारूं ।।

(५)

१. प्रभु मैं बीच चौराहे खड़ी ।

किधर जाऊं, मैं किस से पूछें, दुविधा बीच पड़ी ।।

२. जगत भोग सब छोड़े मैंने, प्रभु मारग अपनाया।
जगत अभी सब छोड़े मैंने, प्रभु मारग अपनाया ।।
३. निश्चय न कर मैं पाऊं कुछ, किधर कहां को जाऊं ।
मारग मुझे दिखाओ प्रियतम, शरणी आन पड़ी |
४. विष्णु तीर्थ प्रभु शरण तुम्हारी, कहां किधर को जाऊं ।
कुछ भी समझ न पाती मैं तो, मैं मझधार पड़ी ।
५. तीर्थ शिवोम् गुरु मारग ही, है कल्याण प्रदाता ।
नहीं तो नारी दुःख की मारी, जगत में रहत अड़ी।।

(६)

१. प्रभुजी ! कब तक पंथ निहारूं ।
अखियां थाकी, हिरदय टूटा, कब तक साज संवारू ॥
२. पल भर चैन पड़त न मो को, तन मन की सुध नाही
डूब रही मैं विरह जल में, कब तक धीरज धारूं ॥
३. पड़त समझ न मोहे कुछ भी, भाव तुम्हारा केवल ।
मारग जिससे प्रापत तुम हो, किस से जाय विचारूं ॥
४. फिरत फिरूं मैं बनी बावली, रूप कुरूप बनाए।
मन के भाव प्रकट किस आगे, किस के हृदय उघारू
५. विघ्न विरोध मन परभावित, यश-अप यश कुछ नाहीं ।
मेरी प्रीत केवल प्रियतम संग, प्रियतम राह निहारू ॥
६. कौन समय जब पीव मिलेगा, सेज पिया की जाऊ ।

सेज पिया सुख पाऊं कब मैं, अन्तर यही विचारूं ।

७. विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा करो अब, पी संदेश पहुंचा दो ।

तीर्थ शिवोम् प्रभु प्रियतम को, प्रतिपल हिरदय धारूं ।

(७)

१.मैं तो जगत प्रपंच में उलझी ।

विषय भोग में फंस गई ऐसी कोई बात न सुलझी ॥

२.भोग वासना मुझे बुलावत रही रिझावत मुझको ।

मैं आकर्षित ऐसी जग में, भोगों में ही उलझी ।

३. मैं भोली अबला नारी हूं, गई फिसलती जग में।

समझ आई कुछ कर न पाई, मिथ्या जग में उलझी ॥

४. जग में कोई सहारा नाहीं, सभी सहारे झूठे ।

एक सहारा तुम ही प्रभु जी, झूठ सहारे उलझी ॥

५. कोई मीत न पाया जग में, मीत कुमीत ही सारे

सांचा मीत तुम्हीं मेरे प्रियतम, रही कुमीत में उलझी ॥

६. विष्णु तीर्थ प्रभु कृपा करो अब, मारग ज्ञान दिखाओ ।

अब तक रत अज्ञान रही हूं, उलझी मैं तो उलझी ॥

७. तीर्थ शिवोम् जगत धोखा, मिथ्या यह संसारा ।

जग में कोई सार नहीं है, काहे को तू उलझी ॥

वियोग

(१)

१. श्याम बिन हिरदय तड़प रह्या ।
मन में पल भर चैन नहीं है, हर पल फड़क रह्या ॥
२. श्याम प्रकट हो, हृदय गगन में, वंशी बजावें ।
मधुर ऐसी आशा हर दम मेरी, मन है अटका रह्या ॥
३. श्याम प्रकट हो हिरदय माही, करता नृत्य अनेकों ।
ऐसी अभिलाभाषों में मनवा मेरा अटका रह्या ॥
४. बिन बादल, वर्षा, बरसावत, सूरज बिन परकाशा ।
फिर भी मन सूखा, अंधेरा, पावों भटक रह्या ॥
५. मारग नहीं सूझत मुझको, श्याम को कैसे पाऊं ।
सद्गुरु मारग नहीं दिखावे, पथ है भटक रह्या ॥
६. अन्तर श्याम प्रकट न जब तक मन विश्राम न पाता ।
गुरु कृपा से श्याम सुन्दर है, मन में प्रकट रह्या ॥
७. नाचो, गावो, वंशी बजावो, अनंद भये मेरे मनवा ।
नहीं तो जीवन व्यर्थ हुआ है, हिरदय तड़प रह्या ॥
८.तीर्थ शिवोम् लाज राखो अब, विनति यह चरणों में ।
आयु बीत रही है पल पल, मारग भटक रह्या।।

(२)

१.वियोगिन तुम बिन तड़प रही।
न जाने कब पीव मिलेगा, अखियां तरस गईं ।
मैं वैरागिन,जगत त्यागिन, मन में आस न दूजी ।
आन मिलो मेरे प्रियतम प्यारे, हिरदय पीर भई ॥
३. जप तप तीरथ भाव भी कीनी, मन का मीत न पाया।
साध संग और योग कमाया, मन में प्रीत लई ॥
४. अब तो प्रियतम तुमरी आशा, कृपा करो भगवन्ता ।
आशा टूट चली है मेरी प्रीतम मिलन गई ।
५. माया अपनी दूर हटाओ, करो कृपा अब मो पर ।
मैं दुखियारी बन बन भटकत, तेरे मिलन लई ॥
६. रहा सहारा पुरुषारथ का, वह भी टूटा जाता ।
आशाएँ सब बनी निराशा, प्रियतम जाए रही ॥
७. तीर्थ शिवोम् कठिन है मारग, बिरला इसको पाता ।
बिना समर्पण प्रभु मिले न, कितना यत्न करई ॥

(३)

१. जीव तेरी घटत उमरिया जावे।
तू समझत तेरी उमर बढ़त है, पल पल छीजत जावे ॥
२. देखत रहत जगत ताईं तू. मृत्यु ओर तू बढ़ता ।
देखत किधर, तू जात किधर है, ता ते गिरता जावे ॥
३. माया में तू गड़ता जाए, मृत्यु तुझे बुलाए।

मृत्यु का तू ध्यान तो, कर्म सुधरता जावे ॥
४. विष्णु तीर्थ प्रभु बुद्धि दीजो, मृत्यु सन्मुख मेरे।
सिमरन नाम, प्रभु की सेवा में जीवन कट जावे ||
५.तीर्थ शिवोम् कृपा कर मो पर, नाम न तेरा भूलूं ।
मनवा हर दम मृत्यु कारण, तत्पर बन रह जावे ॥

(४)

१. तन विरहा संगीत में डूबा, न कोई सुनने हारा।
अन्तर उठत है राग अनेकों, न कोई गावन हारा ॥
२. कौन वजावे साज यह बैठा, न कोई समझे जाने ।
या जाने किस का बिरहा है, या विरही मतवारा ।।
३. जग अनजान है इस गावन से, क्या कोई इस को जाने ।
जगत इसे मतवाला माने, पर वह खुद मतवारा ।।
४.मैं जानूं या मेरा प्रियतम, भेद यह अजब अनोखा ।
भेद सदा यह भेद ही रहता, न कोई जानन हारा ।।
५.मैं रसलीन ध्वनि अन्तर में, दूजा नाहीं जाने ।
जगत से क्या है लेना-देना, जग क्या जानन हारा ॥
६. विष्णु तीर्थ प्रभु तुम जानत हो, है यह भेद अनोखा ।
तीर्थ शिवोम् यह नाद निरन्तर, कोई जाने मतवारा ।।

(५)

मैं राह निहारू, पलक न झपकूं, श्याम निकस नहीं जावे ।
अपलक ताक रही मेरे सजना, अवसर चूक न जावे ।।
२. रहत खड़ी चौराह माही, श्याम किधर से आवे ।

मन मेरा अकलाए रहा है, प्रियतम निकस न जावे ।।

३. खड़ी खड़ी मैं आहें भरती, नयनन नीर बहाऊं । |

प्रियतम मेरा रीझत नाहीं, कहीं निकस न जावे ॥

४. हिरदय मेरा हरदम तड़पत, पल भर चैन न आवे ।

मन में शंका यही बनी है, प्रियतम निकस न जावे ।।

५. मैं प्रभु विष्णु तीर्थ के चरणी, श्याम मुझे मिलवा दो।

तुम तो अवगत श्याम सुन्दर से, कहीं निकस न जावे ।।

६. तीर्थ शिवोम् धीरज मोहे देजो, कब तक राह निहारूं ।

जब तक मेरा प्यारा प्रियतम, मुझे न गले लगावे ॥

(६)

१. मेरे मन की तार प्रभु चरणों में कैसे लग पावे ।

भूल प्रभु को तार आकर्षित, जग की ओर हुई जावे ।।

२. तार बेतार हुआ है, ऐसा, तार से तार न मिल पावे।

तार लगे फिर प्रभु से कैसे, तार बिना प्रभु क्यों पावे ॥

३. तार मिलावे सद्गुरु प्यारा, भेद तार का वह जाने ।

सदगुरु कृपा करे तब ही तो, तार से तार भी जुड़ जावे ॥

४. विष्णु तीर्थ प्रभु तार मिलावो, सुर बेताल हुआ हूं मैं ।

तुमरी कृपा बिना न मेरा, जीवन सुन्दर बन पावे ॥

५. असुर बना में सुर भूला हूं, जीवन सुर में आत नाहीं ।

अब तो तार मिलावो सुर में, जीवन सुरमय हो जावे ॥

६. तीर्थ शिवोम् प्रभु के सुरमें, मेरा मन भी तुम कर दो

मन की तार हरि चरणों में, लग जावे प्रभु लग जावे ।।

(७)

१. जगत कलह के कारण मोहे, प्रभु का विरह सताया।
जगत ने अपना रूप दिखायो, अभिमुख प्रभु कराया ॥
२. माया जगत रूप उलझावे, माया मुक्त करावे ।
जब तक माया रूप प्रकट न, जीव न मुक्त कहाया ॥
३. जगत प्रभु की लीला दीखत, मनवा मुक्त कहावे ।
जब लीला माया बन जावे, सीमित तभी कराया ।।
४. जगत दुख रूप न अनुभव, जब तक जीव न करता ।
तब तक माया में ही उलझा, बंधन नही छुड़ाया ॥
५. जगत यथारथ रूप दिखाओ, भ्रम जग का मिट जाय ।
जब तक गांठ खुले न भ्रम की, न कोई मुक्त कराया ।।
६. अब तो शरण प्रभु मैं तुमरी, जगत स्वरूप दिखाओ ।
तब मारग तुमरा खुल जाय, भूले मित्र पराया ॥
७. प्रभु तुम अपनारूप दिखाओ, बंद द्वार को खोलो।
जब तक मनवा राग मुक्त न, जग से बच न पाया ॥
८.मनवा जग से दूर हटाओ, मैं यह कर न पाता ।
तुमरी कृपाशक्ति का बल ही, बंधन मुक्त कराया ॥
९. अहंकार ममता को तज कर, शरण प्रभु की आया।
जगत विरक्ति मन में भर दो, मारग है खुलवाया ॥
१०.विष्णु तीर्थ प्रभु किरिपा ही से, माया प्रभु का अन्तर ।
तीर्थ शिवोम् समझ मन माही, संशय रहित बनाया ||

(८)

१. हे प्रभु तेरे सिवा, और मैं जाऊं कहां ।
तेरी शरण को छोड़कर, मैं शरण पाऊं कहां ॥
२. जगतकी हर चीज में, तू ही चमकता हर जगह ।
तू खोजने तेरे लिए, दीपक जला पाऊं कहां ॥
३. हर जगह व्यापक तू है, हर जगह मौजूद है।
पूजने तुझ को भला, मैं पूजने जाऊं कहां ॥
४. पुष्प में रम कर सुगंधित, कर रहा उस को तुम्हीं ।
भगवान पर फिर मैं भला, कैसे चढ़ाऊं मैं कहां ॥
५. सूर्य, अग्नि चन्द्र में, तुम ही प्रकाशित हो प्रभो
तेरे आगे फिर भला, बाती जलाऊं मैं कहां ॥
६. वायु, जल, में हो प्रवाहित, तुम प्रकट हो, हो रहे ।
फिर तुम्हारे सामने, पंखा डुलाऊं मैं कहां ॥
७. और दिखता है नहीं, तेरे सिवा मुझ को कोई ।
पूजा चढ़ाऊं मैं जिसे, चंदन लगाऊं मैं कहां ॥
८.सब तरफ से मन समेटा, तेरे चरणों में लगा ।
बिन तुम्हारे कौन है, मन को लगाऊँ मैं कहां ॥
९. अब तेरे दर्शन बिना, मुझ को न पड़ता चैन है।
तेरे चरणों में ही मिलता, चैन मैं पाऊं कहां ।।
१०.हे प्रभु किरपा करो, मैं शरण तेरी हूं पड़ा।
चरणों को तेरे छोड़कर, और पकडूं मैं कहां
११. शिवोम् करता है विनय, हो आर्त्त भक्ति भाव से

अपना प्रभु मुझ को बना, ठौर मैं पाऊं कहां ॥

(९)

१. प्रभु तुम प्रकट होत नहीं काहे ।
रोम रोम औ अंग-अंग में, फिर दीखत न काहे ॥
२. करूं भावना, रहत बुलावत, अंग भावना करता।
व्यापक तुम सर्वत्र समाना, तुम्हें बुलाऊं काहे ॥
३. हो कर हिरदय हर दम व्यापक, अनुभव होत नहीं है।
जब तक होत प्रकट हो नाहीं, प्रभु भावना काहे ॥
४. तुमरी कृपा बिन हे प्रभुजी, भेद किसी न पाया।
गुरुदेव प्रभु शरण तुम्हारी, वृत्ति चंचल काहे ॥
५. प्रभु आओ मोहे दर्शन दीजो, मो सो रहा न जाय ।
हो कर प्रकट सामने फिर भी, दीखत नाहीं काहे ।
६. सद्गुरुदेव कृपा बिन, किरिपा, जीव न तुमरी पाता ।
किरिपा परापत हुई मोहे गुरुजी, फिर आवत न काहे ।।
७. तीर्थ शिवोम् है आकुल व्याकुल, हिरदय चैन न पावै ।
मेरी ओर निहारो स्वामी, कृपा करत न काहे ॥

(१०)

१. प्रभु ! मेरी उमरिया बीतत जाए ।
अजहूं दर्शन दिए न तुमने, यूं ही उमर विहाय ॥
२. सुनते तुम हो सर्व व्यापक, दर्शन मुझे नहीं दीनो ।
मुझ से चूक भई क्या प्रियतम, मुझ पर नहीं रिझाए ।।
३. मैं जग छोड़ दीवानी तुमरी, तुम ही सब कुछ मेरे ।

फिर भी ध्यान नहीं है मो पर ऐसे क्यों रिसियाए ।।
४. मुझ पर तरस खाओ मेरे प्रभुजी, मैं तुमरी ही दासी ।
आवन करत हो, बार बार तुम, पर अब तक ना आए ।।
५. विष्णु तीर्थ प्रभु मेरे स्वामी, प्रेम दीवानी तुमरी ।
जगत त्याग तेरी हुई बैठी, करत प्रयत्न रिझाए ।।
६. तीर्थ शिवोम् सुनो प्रभु मोरे, अब न सुनोगे मोरी ।
जीवन यूं ही व्यर्थ जात है, नैया जात डुबोए ।।

(११)

१. राम तूने लीला अजब रचाई। क्या - क्या रूप बनाई ।
देखत देखत चकित है मनवा, मन माहीं मुस्कराई ॥
२. ऊपर है आकाश अनन्ता, जल थल पृथ्वी माहीं ।
भाँति भाँति के पुष्प बनाए, वर्णन किया न जाई ॥
३. जौं लगि मनवा भ्रमित रहत है, त्यों लगि लीला तुमरी ।
जहां लीला नहीं, वहां भी तुम हो, यह गुरु भेद बताई ।।
४. लीला को लीला कर देखों, माया नहीं न सतावे ।
गुरु मारग से ही यह सम्भव, राम चरन चित्त लाई ॥
५. माया मोहे भ्रमित करत है, मन को चंचल करती ।
तुमरी शरण ही एको मारग, यह गुरु ज्ञान जताई ॥
६. विष्णु तीर्थ प्रभु मारग दीजो, माया से छुटकारा ।
सर्व जगत में लीला देखूं, माया देयो हटाई ।।
७. तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, माया आप समेटो ।
लीलानन्द मेरा मन भर दो, लीला ही दर्शाई ॥

प्रार्थना

(१)

१. प्रभु जी ! तुम बिन सब अंधयारो ।
डूबत जात रही तम भीतर, आन पड़ी मंझधारो ॥
२.नाव भी मोरी टूटी फूटी, माझी भी को नाहीं ।
कैसे भव जल पार मैं उतरूं, नहीं दिखत उजियारो ।।
३.नैया मोरी भंवर में अटकी, घूमत एक ठिकाने ।
कैसे निकलूं, पार मैं उतरूं, न कोई काढ़न हारो ॥
४. अन्तर में ही भवसागर है, सभी विघ्न मन माहीं ।
अन्तर में ही, राह मैं भटकी, अन्तर में अंधयारो ।।
५. अन्तर मेरा शुद्ध करो प्रभु, भव सागर तर जाऊं ।
अन्तर्मन हो जब परकाशित, दूर रहे अंधयारो ॥
६. तीर्थ शिवोम् प्रभु चरणों में, हर लो मोरी दुविधा ।
जगत द्वन्द्व में ऐसी उलझी, सभी और अंधयारो ।।

(२)

१. यह जीवन है बहुत ही दुखमय, कोई सुख सांस नहीं आता।
यदि कृपा तुमरी हो जाए, कोई दुख पास नहीं आता ।।
२. चारों ओर अंधेरा दीखत, राह का कोई पता नहीं।
फिर भी चलता जात रहा मैं, कहीं प्रकाश नहीं है आता ।।
३. कदम भी मेरे डोल रहे हैं, शक्ति हीन हुआ जाता ।

हाथ बढ़ाओ मेरे प्रभुजी, चला नहीं अब जाता ।।

४. कई युग, कई जनम हैं बीते, चलता जाता हूं फिर भी ।

अब तो गिरा, सम्भालो मुझ को, खड़ा हुआ न जाता ||

५.सुनो तो टेर मेरे हे प्रभु जी, छुड़वा दो चलना मेरा ।

तेरे भजन में बीते जीवन, और न कुछ भी मुझे सुहाता ॥

६. याचक बन पड़ा द्वारे, तीर्थ शिवोम् पुकार रहा ।

कृपा करो इस दीन हीन पर, तुमरा बिगड़ नहीं जाता ॥

प्रकीर्ण

(१)

१.कामना पूरी होत नहीं ।

जब तुम पूरण एक करत हो, उभरत एक नई ॥

२. मन भण्डार अखण्ड है ऐसा, रहते काम अनेकों ।

एक के पीछे एक चलत है, निकलत नई-कई ॥

३. मुझे कामनाओं ने घेरा छूट न सकता इन

कौन उपाय करूं, यह मन में, समझ न आत भई ॥

४. मैं ही कर्म हैं संचित कीने, मैं ही कारण इन का ।

कर्म चक्र यह कैसे टूटे, उभरे नहीं नई ॥

५. सद्गुरु एक सहारा तुमरा, कर्म चक्र छुड़वा दो ।

काम मुक्त हो मनवा मेरा, आवे नहीं नई ॥

६. तीर्थ शिवोम् तू राम भजन कर, यह ही एक उपाय ।

नहीं तो समय निकलता जाए, उमरिया जात भई ॥

(२)

१. मनवा ऐसे बने न बात।

आवागमन भी बना रहत है, कर्म चक्र न जात ॥

२. तू भरमाया जग भोगों में, राम भजन नहीं जाने।

फिर छुटकारा कैसे होए, जात न झंझावात ॥

३. तू आसक्ति छोड़त नाही, माया में लिपटाना।

माया तोहे बहुत नचाए, तू जाता भरमात ॥

४. राम भजन बिन मुक्ति नाहीं, निर्मल कर्म करे जो।

ताही शरण पड़े छुटकारा, भव बंधन कट जात ॥

५. तीर्थ शिवोम् समझ तू मनवा, मानुष जनम अमोलक।

अब भी लग जा राम भजन में, राम पार ले जात ॥

(३)

१. मोहे कोई राम का गाम बता दे।

राम मिले बिन मन नहीं धीरज, राम का धाम बता दे ।।

२. राम मेरा जीवन आधारा, राम ही सब कुछ मेरा।

राम बिना मन थिर न रहता, राम का धाम बता

३. राम को खोजत- खोजत हारी, राम न मिला कहीं भी।

राम की लगन लगी मन माहीं, राम का धाम बता दे ॥

४. राम ही राम रटत है मनवा, राम ही मनहि बिराजे

राम बिना कछु सूझत नाहीं, राम का धाम बता दे ॥

५. सतिगुरु कृपा बिना न पाऊं, राम नाम मन माहीं।

तभी राम अन्तर परकाशित, राम का धाम बता दे ॥

६. तीर्थ शिवोम् दया गुरुदेवा, शरण तुम्हारी आई ।

राम पाए बिन कल न पड़त है, राम का धाम बता दे ॥

(४)

१. नदिया देखे इधर-उधर न, बही जात है पीव मिलन को ।

मैं ही रही जगत में उलझी, कुछ न कीना पीव मिलन को ।

२. जलधि पीव बना नदिया का, करत प्रतीक्षा हिरदय खोले

नदिया मगन भई है ऐसी, सूझत न कुछ पीव मिलन को ॥

३. मति हीन मैं होई ऐसी, पी का भाव उठे न मन में ।

अब तो भाव है जागा अन्दर, तड़पत मनवा पीव मिलन को।।

४. सतिगुरु देव बिना न होवत, अन्तर मारग खुलता तब ही ।

कृपा बिना न किरिपा होती, यत्न अनेकों पीव मिलन को ।।

५. तीर्थ शिवोम् मगन हुई ऐसी, पीव बिना कछु सूझत नाहीं ।

अब तो आन मिलो मेरे सजना, जागी तृष्णा पीव मिलन को ।।

(५)

१. प्रभु अनन्त माया अनन्त, कोई न जानन हारा।

कहन कथन से है वह न्यारा, कोई न समझन हारा ॥

२. जहां जहां प्रभु जगत बनाया, माया भ्रम फैलाया ।

लोक अनेक प्रभु प्रकटाए, माया का विस्तारा ॥

३. प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना, आदि अन्त नहीं कोई ।

माया ऊपर परदा डाला, ढाक दिया विस्तारा ॥

४. घट-घट माहीं प्रभु प्रकाशित, कोई न जानत भेदा।
माया गुप्त किया प्रभु ऐसा, न कोई देखन हारा ॥
५. जानन का जो यत्न करत है, हाथ नहीं कछु आता ।
प्रभु अनन्त, कोई जान न पाए, माया अपरम्पारा ।।
६. भेद यह खुलता गुरु कृपा से, दूजा नहीं उपाय ।
गुरु की शरण गहे जो प्राणी, भेद खुलेगा सारा ॥
७. तीर्थ शिवोम् कृपा कर मो पर, प्रभु माया परकाशित ।
मैं तो इस को जान न पाऊं, है यह भेद अपारा ॥

(६)

१. जब चिन्ता मन में उठती है, रहता है ध्यान वहीं हरदम ।
मन नहीं हटाए हटता है, बस रहता बना वहीं हरदम ॥
२. है राग ही चिन्ता का कारण, मन को विक्षिप्त बना देता ।
मन चिन्ता में डूबा रहता, हो चिन्ता रूप बना हरदम ॥
३. है चिन्ता चिता समान बनी, इक तन जलता इक मन जलता ।
चिन्ता से जब छुटकारा हो, तब मन है मस्त बना हरदम ॥
४. गुरुदेव छुड़ाए चिन्ता से, मन रागमुक्त वह कर देते ।
मन, मन ही मन में मस्त रहे, तब आतम रूप बने हरदम ।।
५. तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणी, गुरुदेव मुक्त चिन्ता कर दो।
तेरे चरणों में ध्यान रहे, आनन्दित बना रहे हरदम ।।

(७)

१. कण-कण में व्यापक मेरा प्रियतम, कौन कहत कि दीखत नाहीं ।
जीव बना माया के अन्दर, ता ते प्रभु है दीखत नाहीं ॥

२. हुई अमावस चन्द्र न दीखत, पर वह है वैसे का वैसा ।
जीव ही आया परदे माहीं, ता ते चन्द्र है दीखत नाहीं ॥
३. जब तक मुंह न फेरे जग से, भासित होते भोग तभी ।
मोह त्यागा परदा हट जाए, फिर प्रभु कैसे दीखत नाहीं ॥
४. अभी संभल तू मेरे भाई, प्रभु चरणों में मन को लगा ।
५. कण कण व्यापक राम मेरा है, बिन गुरु किरपा दीखत नाहीं ॥
है तीर्थ शिवोम् शरण तेरी, अपना अनुभव मुझ को दीजो ।
बिन किरिपा निर्मलता नाहीं, बिन निर्मलता दीखत नाहीं ॥

(८)

१. रंगारंग यह जगत बनाया, खूब किया विस्तार है ।
वन पर्वत दरिया उपजाए, समझ न पाए पार
२. सूरज तारे चांद बनाए, अनंत किया आकाश है।
भांति भांति के जीव बनाए, न कोई पारावार है ॥
३. काले गोरे पीले नीले, बने अनेकों पुष्प हैं ।
ऐसा जगत अनन्त भया है, लीला अपरम्पार है ।
४. फिर माया उपजाई तूने, भ्रमित जीव को कीना ।
दुख सुख के चक्कर में डाला, नहीं कोई उपचार है ।
५. भूले फिरता जीव बेचारा, मारग नहीं वह है पाता ।
कष्ट सहन है करत अनेकों, नहीं पारावार है ॥
६. सुन्दर जगत बना दुखदाई, सभ कोई छूटन चाहे ।
अमृत में विष घोला तूने, किया यह अत्याचार है ।

७. तीर्थ शिवोम् कृपा प्रभु मोरे, अजब तेरी यह माया है।
मैं तो भर पाया माया से, न कोई आर न पार है।

(९)

१. जगत में भीड़ ही बढ़ती जाए।
जहां देखो तहां लोग ही दीखत, समझ न कोई पाए।।
२. मारग चलना कठिन हो रहा, इक दूजा टकराए।
रगड़ा कर टकरा कर ही तो, जीव चलत है पाए।
३. कहां से आए लोगन एते, कहां वह बैठ बनाए।
कहां से है सामान जुटाता, कहां बैठ कर पाए।
४. दिन पर दिन यह जात बढ़त है, कमी कहीं न आवे।
प्रभु जी अब तो आप समेटो, जीय रहा अकुलाए।
५. प्रभु का झाड़ू अजब अनोखा, करत साफ जब फिरता।
ता की गति कही न जावे, लोगन साफ हो जावे॥
६. तीर्थ शिवोम् मगन है मन में, करत राम का सिमरन।
जाकी की माया, वही देखत है, यूं ही जीव भ्रमाए॥

(१०)

१. जब भूख लगे है खाने की, तब जीव भागता भोजन को।
तब तक है भूख न शान्त बने, कर लेता नाहीं भोजन को॥
२. जब तृष्णा जागे विषयों की, मन को भटकाती भरमाती।
तब होवत व्याकुल भोग लिए, तब धावत जीव है विषयन को
३. है जीव भटकता सुख पीछे, है तृष्णा मन में बनी हुई।

सुख मिलता नाही है जग में, जाए विषयन में खोजन को ॥
४. भोजन विषयन में ही जीवन, है बीता जाता मानुष का ।
बस भोगों पीछे रहत पड़ा, जाय न आतम खोजन को ॥
५. अब तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर, यह जनम न ऐसे जाय कहीं ।
है बीता सो तो बीत गया, कुझ विषयन में, कुछ भोजन को ॥

(११)

१. तू सिमरत राम है नाहीं, तेरी उमरिया बीतत जाई ।
राम भजन तू नाहीं कीना, मन में सुख न पाई ॥
२. विषय भोग में तू भरमाया, बहु परिवार जमाया।
सुख का मुंह तू देख न पाया, टयां ही उमर गंवाई |
३. जग के पीछे लग कर तूने, अपना समय निकाला।
अब भी चेत अरे मन मूरख, समझ तुझे न आई ॥
४. मद में चूर है भूला फिरता, क्रोध लोभ मन माहीं ।
अन्त समय जब सिर पर आवे, रहत यूं ही पछताई ॥
५. मनवा तेरा ऐसा चंचल, राह भटका ज्यों प्राणी ।
अब तो थिर मन हो बैठे तू, थिरता राम समाई ||
६. तीर्थ शिवोम् राम जप मनवा, तोही सुख पावेगा ।
नहीं तो जीवन जात है विरथा, माखन ज्यों विष जाई ।।

(१२)

१. जग भी है बंधन का कारण, जगत ही मुक्ति भी देता ।
दो धारी तलवार जगत है, बंधन मोक्ष सभी देता ।
२. जब जग में आसक्ति होवे, जग बंधन का कारण है।

अनासक्त जब होवे मनवा, जगत मोक्ष ही है देता ||

३. जब आसक्ति हो मन माहीं, जग बन जाता बाधक है

आसक्ति हो रहित जभी मन, जगत रास्ता दे देता ।।

४. आसक्ति सब को भरमावे, आसक्ति मन शिथिल करे ।

आसक्ति जब नाहीं मन में, जगत है दूर चला जाता ॥

तीर्थ शिवोम् मोह त्याग कर, जग की चिन्ता मत कर तू ।

आसक्ति ही विघ्न है तेरा, जग तो बदनामी लेता ।।

(१३)

१. भारत से हूं दूर मैं बैठा, भारत में मैं रत भा था ।

अब तो भा तम में परिवर्तित, मूढ़ बना बैठा हूँ मैं ।।

२. जब होता भा मन परकाशित, मन है शान्त बना रहता ।

भा होता विलीन मन माहीं, तम अन्दर बैठा हूं मैं ।।

३. भा ही भा सुख देता मन को, भा संयत सब कोई करे ।

भा विन घोर अंधेरा जग में, सुख विहीन बैठा हूं मैं ॥

४. रत भा स्थिति अनूप अलौकिक, करे महान् वह भारत ।

रत भा से ही भारत बनता, भा बिन दुख पाता हूं मैं ।

५. करो कृपा हे मेरे स्वामी, भारत को रत भा कर दो।

रत भा हो कर सुखी हो भारत, रत भा दूर बना हूं मैं ।

६. करे शिवोम् विनय प्रभु आगे, मेरा भारत रत भा हो ।

क्रोध लोभ तम में ही अब तक, लीन बना बैठा हूं मैं ।

(१४)

१. मैं फिसलता फिसलता चला ही गया।
कूप अंधे में गिरता चला ही गया ॥
२. कुछ न सोचा न समझा न परखा कहीं ।
बस अंधेरे में बढ़ता चला ही गया ।
३. मुंह को खोले खड़ा है जगत सामने ।
बंद आंखें उतरता चला ही गया ॥
४. मुझ में बुद्धि नहीं, न ही अनुभव कोई ।
बेखटक हो पिघलता चला ही गया ॥
५. न कोई भी रास्ता दिखाए मुझे ।
मैं तो विषयों में गलता चला ही गया ।
६. यह है हालत शिवोम्, अब में जाऊं कहां ।
बिन गुरू के भटकता चला ही गया।

(१५)

१.जो प्रियतम साथ नहीं मेरे, दुनिया जो मिली तो कुछ न मिला ।
प्रियतम को छोड़ के भोगों को, जो पाय लिया तो कुछ न मिला ॥
२. प्रियतम को छोड़ के दीवाने, जो होते सुख भोगों के लिए।
दुख में व्यतीत जीवन होता, जग के सुख पाय कुछ न मिला ॥
३. दिखलाए कुछ और कुछ देता, वह पापी अत्याचारी है ।
जो सुख दिखला के दुख देता, ऐसा जग पाए कुछ न मिला ।।
४. इस जग से ऊब गया हूं मैं, मुझ को अब चाहिए कुछ नाहीं ।
कुछ पाए लिया तो फिर भी क्या, कुछ पाए कर भी, कुछ न मिला ॥
५. सब दुख का कारण मोह बना, जग में उलझाता फिसलाता ।

है मोह से कुछ भी पाए लिया, जो पाए लिया तो कुछ न मिला ||
६. यह माया लेयो समेट प्रभु, है विनय शिवोम् की चरणों में ।
यदि जीव ने सब कुछ पाए लिया, तुम न पाया कुछ न मिला ॥

(१६)

१. भटक भटक मैं भटकत हारा, मिला न कोई सहारा।
भटकत भटकत आयु बीती, भटकत फिरा बेचारा ।।
२. यहां भी भटका, वहां भी भटका, भटकन छूटत नाहीं ।
और कहां मैं कितना भटकूं, भटक फिरा जग सारा ॥
३. ऊपर भटका, नीचे भटका, सूरज चांद सितारे ।
सारी सृष्टि में मैं भटका, भटकत भटकत हारा ।।
४. दायें भटका, बाएं भटका, भटका सभी दिशाएँ।
भटकन मेरा छूटत नाही, मिला न कहीं किनारा ॥
५. मन भी भटकत, तन भी भटकत, भटके सारी काया ।
भटकत भटकत भटक गया मैं मारग नहीं हमारा ।।
६. भटकत भटकत ऊब गया हूं, भटकन मेरा छूटे।
और न भटका जाए मुझ से, करता यही विचारा ॥
७. गुरुदेव की किरिपा ही से, भटकन से हो मुक्ति ।
नहीं तो भटक भटक थक जाऊं, भटकन ही में मारा ॥
८. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, कब तक भटक रहूं मैं ।
अब न भटका जाए मो सों, पकडूं चरण तुम्हारा ॥

(१७)

१. वन पर्वत और झरने देख, देखे नगर अनेक हैं।

भांति-भांति के जन्तु देखें, पर तुम सा नहीं एक है

२. सुन्दर पक्षी, सुन्दर मानव रंगा रंग यह खेल करें।

हंसते गाते रोते चलते, पर तुम सा नहीं एक है।

३. सुन्दर दृश्य जो मधुर अलौकिक, कर लें मन को आकर्षित।

फिर भी मन रमता है नाहीं, जो तुम सा नहीं एक है।

४. हर क्षण बदले, हर क्षण टूटे, जगत रूप है बदलावे।

नित्य एक रस रहे निरन्तर, सो तुम सा नहीं एक है॥

५. सारा जग जड़ता में व्यापे, अपना बल कोई नाहीं।

चेतनता के एक ही स्वामी, सो तुम सा नहीं एक है॥

६. दुख ही दुख सर्वत्र समाना, सुख न कहीं दीखता है।

पर तुम हो आनन्द स्वरूपा, सो तुम सा नहीं एक है॥

७.सीमित अल्प बुद्धि जग माहीं, न समझे कोई बात कहीं।

तुम सर्वज्ञ हो प्रतिभाशाली, सो तुम सा नहीं एक है।।

८. मल निर्मल से परे रहत हो, मल तुम को छूता नाहीं।

जग तो मल निर्मलता में ही, सो तुम सा नहीं एक है।

९. इतने सारे गुण हैं तुम में, बाकी मुझ को पता नहीं।

ऐसे गुण दूजे में नाहीं, सो तुम सा नहीं एक है।।

१०. अपने गुण परकाशित मुझ पर कृपा करो मेरे स्वामी।

तुझ सा कोई दीखत नाही, सो तुम सा नहीं एक है॥

११. तीर्थ शिवोम् शरण में आया, तुम ही मुझे संभालो।

तेरे बिना न कोई मेरा, बस तुम सा नहीं एक है ॥

(१८)

१. वासना जगत है बहुत नचाया।
मैं भी नाच नाच थक हारा, माया ने भरमाया ॥
२. यह पाऊं यह खाऊं मनवा, करत है बहुत विचारा ।
धावत रहत है जग विषयन को, भोगों ने उलझाया ।।
३. धरत वासना रूप अनेकों, बहुत ही स्वांग बनाए ।
जीव बेचारा उतरत गहरा, माया का भरमाया ||
४. बांधे जीव जगत को ऐसी, रूप न समझत कोई ।
है यह बनी बहुत दुखदायी, उलटा जीव कराया ॥
५. न ही छूटत है यह मुझसे, कर कर मैं थक हारा।
मुझे बचाओ इस से प्रभु जी मैं इस में भरमाया ॥
तीर्थ शिवोम् विनति है यह ही, मैं न इस में उलझें ।
नहीं तो यह है बहुत सतावत, पार किसने पाया ॥

(१९)

१. बिना दर्शन मैं प्राण न राखूं, दर्शन से तर जाऊं ।
ऐसी भई है हालत मेरी, दर्शन ही सुख पाऊं ॥
२. दर्शन बिना जिया न लागे फिरत बावली जैसी ।
दर्शन पाए सुखी हो मनवा, मन की थिरता पाऊं ॥
३. लोग कहे पागल है होई, जाने कोई न पीरा ।
लोगन तो कछु जानत नाहीं, मैं बदनाम हो जाऊं ॥

४. मन हरदम है रहता तड़पत, चैन न पलभर आवे ।
चैन कहां बिन दर्शन बाझों, दर्शन मन सुख पाऊं ॥
५.तीर्थ शिवोम् सुनो हे गिरधर, मुझ को दर्शन दीजो।
दर्शन ही है औषध मेरी, तब आनन्द मनाऊं ॥

(२०)

१. नयना देखे बहिर जगत में, अन्तर देख सकत न ।
कान सुनत हैं जग की वाणी, अन्तर नाद सुनत न ॥
२. मन सोचे जग के विषयों को, अन्तर गति न ताकी ।
रसना रस भोजन का लेवे, अन्तर पाए सकत न ॥
३. अन्तर जगत विशाल अनन्ता, इन्द्रिन गति न ताही ।
करता- वार विलीन हुए बिन, पाए तोए सँकत न ॥
४. जब तक कृपा गुरु न होती, चेतन नाहीं जागृत ।
तब तक करता-भाव न जाता, चेतन पाए सँकत न ।
५. चेतनता ही गुरु रूप है, चेतनता सुख उपजे ।
चेतनता ही मन निर्मल हो, नहीं तो पाए सकत न ॥
६. तीर्थ शिवोम् यह अन्तर नयनां, खुले अन्तर में देखें ।
अन्तर ज्योति अन्तर परगट, नयना देख सकत न ॥

(२१)

१.प्राणों का पंछी पिंजरे में, वह सांस की किरिया करता है ।
पिंजरे में जब तक है पंछी, करता अभिमान है जीव सभी ।।
२. जब पिंजारा छोड़ वह उड़ जाता, होता न कर्म कोई इस से ।
तब देह पड़ी रह जाती है, हैं रुकते जीव के कर्म सभी ॥
३. जो सांस चलाता पंछी है, वह ही है कर्म सभी करता।
अभिमान है मिथ्या जीव करे, न शक्ति उसके पास कभी ।।
४. पंछी का उड़ना निश्चित है, यह एक दिन होने वाला है।
जब देह को छोड़ पंछी चला, है होवत वह निष्प्राण तभी।।
५. पिंजरे के दस दरवाजे हैं, किस रास्ते वह उड़ जाएगा ।
इस की कुछ खबर नहीं तुझको, तू सोवत लम्बी तान अभी ॥
६.हो जा सचेत तू ऐ मनवा, है समय निकलता जाय रहा।
फिर रहता पछताएगा, तू अभी अभी तू जाग अभी ।।
७.गुरुदेव तुम्हारी हो किरिया, हो सावधान मेरा मनवा ।
प्रभु चरणों में ही लगा रहे न दूजे जाए कहीं कभी ।।
८. है तीर्थ शिवोम् विनय करता, पंछी से परिचय हो जाय ।
चरणों में ध्यान रहे हर दम, चाहे हो विपदा कहीं कभी ॥

(२२)

१. जो जन हैं होते प्रिय तुम्हें, तुम करत कृपा उन पर भारी ।
हम पर भी दया तुम्हारी हो, हम दीन हीन हैं दुखयारी॥
२. ज्यों पाथर पानी में डूबे, हम डूबत जात रहे अघ में ।
हम हैं पाथर प्रभु पार करो, हैं जलत जात ज्वाला भारी ॥

३. तुमरा गुण जो मैं कह न सकूं, तुम दीनन के रखवारे हो।
प्रभु हमरी ओर भी नजर करो, हम आए आस लिए भारी ॥
४.तुम अवगुण हमरे न देखो, इस जोग नहीं जग में कोई।
तब किस को पार करोगे तुम, है जीव कोई न अधिकारी।
५.हौं कपटी कुटिल मूढ़ मन हूं, जप तप साधन नाहीं कीना ।।
बस एक भरोसा तुमरा है, अब कृपा करो हम पर भारी ॥
६.है तीर्थ शिवोम् शरण तुमरी, अब मुझे सम्भालो मेरे प्रभु।
माया संकट से पार करो, हम पड़े हैं विपद अति भारी ॥

(२३)

१.पतित हुआ मोहकूप में, मैं देख न पाऊं।
विषय भोग का भ्रम हुआ, मैं देख न पाऊं ॥
२. अन्दर बाहर घोप अंधेरा, सूझ पड़त कछु नाहीं।
हो परकाशित मेरे प्रभु जी, मैं देख न पाऊं ॥
३. मात-पिता तुम मेरे स्वामी, रहा पुकार मैं तुम को।
हरण करो आविपदा मोरी, मैं देख न पाऊं ॥
४. अनंत अगम अपार तुम, मैं अध-राशि रूप।
अपनी विद सम्भालो प्रियतम मैं देख न पाऊं ॥
५. हे जगदाधार मेरे प्रभु जी, मुझे और सहारा नाहीं।
दीना नाथ मुझे अपनाओ, मैं देख न पाऊं ॥
६. तीर्थ शिवोम्, हे मेरे प्रभुजी, मैं करत पुकार रहा।
अब तो हाथ बढ़ाओ प्रियतम, मैं देख न पाऊं ॥

(२४)

१. मोहे मीठा लागे राम नाम, जग से कोई भी नहीं काम ।
मुझ को दो मेरा राम नाम, नाहीं कुछ चाहिए कोई दाम ।।
२. मैं प्रभु प्रेम रंग राती हूं, कुछ लेना है न देना है ।
यदि तुम को राम से नेह नहीं, तुम चाहे बचा लो अपना चाम ॥
३. रोवत बीती है मेरी उमर, पर राम न दर्शन मिले मुझे ।
जब कृपा प्रभु की मैं पाई, तब मिल गया मोहे राम धाम
४. जब राम प्रभु का मिलन हुआ, दुख की रातें सब बीत गईं।
सुख दुख कुछ नहीं बाकी, न शीत रहा अब नाही घाम ।।
५. हो उठा आनन्दित मन मेरा, अन्तर के संशय दूर हुए।
अब जग दीखत है प्रेम भरा, मेरे तेरे का नाहीं काम ॥
६. मस्त शिवोम् मेरा मनवा, रसलीन हुआ प्रभु प्रेम में वह ।
अब मेरा हृदय है मगन हुआ, न याद कोई भी काम ॥

मन

(१)

१. मेरो मन जग देखत ललचावे ।
उस को मिलता दुख बहुत है फिर भी जग को धावे ।।
२. सुन्दरता है माया छाया, बहुत लुभावत मन को ।
जब देखे जग की सुन्दरता, मोहित होता जावे ॥
३. सुख साधन बहु भलो लगत हैं, देखत मनवा धावे ।
सुख का रूप धार दुख आवत, मानव दुख ही पावे ||

४. माया नगरी जगत बना है, देखत मन भरभावे ।
माया छाया खूब रिझाया, जिवड़ा मस्ती पावे ॥
५. अपनी माया आप समेटो, तुमरो कारज है यह ।
जीव बेचारा माया माही, काहे को उलझावे ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो प्रभु मोरे, माय बहुत नचावत ।
किरपा कर के मुझे उबारो, माया बहुत भरमावें ॥

(२)

१. मेरा प्रियतम कण कण वास करे, मैं उसे निहार न पाती हूँ।
है मन मलीन तो अपना ही, न दीखत प्रियम कहीं मुझे ।।
२.खुशबू वह ही पुष्पों में, और बरसे मेघ बना वहीँ ।
पर खोज नहीं उस को पाती, न दीखत प्रियतम कहीं मुझे ।।
३. बाहर जग में वह खेल रहा, है मन अंदर बैठा वह ही ।
माया का परदा मनवा पर, न दीखत प्रियतम कहीं मुझे ।।
४. जब माया परदा दूर हटे, तब प्रियतम कण कण में परगट ।
मैं कैसे परदा दूर करूं, न दीखत प्रियतम कहीं मुझे ।।
५.गुरु किरपा से परदा हटता, मन निर्मल होता तब ही ।
तब तक नाहीं वह है प्रकटे, न दीखत प्रियतम कहीं मुझे ।।
६. है तीर्थ शिवोम् पुकार रहा, प्रियतम मेरा दर्शाओ मुझे ।
जब तक न किरिपा होत प्रभु, न दीखत प्रियतम कहीं मुझे ।।

(३)

१. जो मन में मेरे लागी है, दुनिया बात वह क्या जानें।
वह तो हैं अपनी मस्ती में, यह पीरा कोई क्या जानें ॥
२. है रामवियोग की पीरा से, हिरदय मेरा आकुल व्याकुल ।
यादें उठती हर दम मन में, यह आहें कोई क्या जाने ॥
३. बिरह की अगन लगी मन में, कोई न आगन बुझाय सके।
इक राम बुझावनहारा है, इस अगन को कोई क्या जाने ॥
४. मैं रोती और बिलखती हूं, मुझ को कोई समझाय क्या ।
मन राम में ही थिरता पाए, अब इस को कोई क्या जाने ॥
५. जब राम मिलें पीरा जाय, अब राम समाया मन माही ।
हे राम बिना औषध नाहीं, औषध को कोई क्या जानें ।।
६. है तीर्थ शिवोम् मेरा मनवा, तड़पत है राम मिलन ताईं ।
मैं राम का पता कहां पाऊं, इस जग में कोई क्या जानें ।।

(४)

१. जब लगि नाम जपे तू नाहीं तीनों ताप न जाहीं ।
मन उपराम न जग विषयन से, छूटत काल है नाहीं ॥
२. जो जग्य जप तप हठ कीनो, पार परत तू कैसे।
जग तृष्णा में घिरे रहत है, मन सुख पावे नाहीं ॥
३. गुरु से सत्य नाम हो परापत, सिमरत अंतर मन में
तो लगि जगत वासना मन की, नाश होत है नाहीं ॥

४. उठत बैठत सोवत खावत, सुख न परापत तो को।
राम भजन सुख पावे मनवा, नाहीं तो सुख नाहीं ॥
५. राम भजन सों मन निर्मल हो, राम करत उपकारा।
राम नाम की शरण गहो तुम, सुख जावत है नाहीं ॥
६. तीर्थ शिवोम् राम सुख सागर, सुख हे देत अनन्ता ।
जीव हे बीच चौरासी भटकत, मुक्ति पावत नाहीं ॥

(५)

१. जा मन लागे प्रेम की अग्नि, सो जानत है प्रेम अगन को ।
जग नहीं जानत प्रेम की अग्नि, जग क्या जाने प्रेम अगन को ॥
२. जलती बिरहन प्रेम अगन में, निकसत धुंआ भी नाहीं ।
सोई जाने जा की अग्नि, जग क्या जाने प्रेम अगन को ॥
३. धधकत छाती प्रेम अगन में, पथराई देखत हैं अखियां ।
मुंह से निकलत वचन नहीं है, जग क्या जाने प्रेम अगन को ||
४. प्रेम दीवानी डोलत फिरती, तन की खबर भी नाहीं उस को ।
अंदर अगन जले विरह की, जग क्या जाने प्रेम अगन को ॥
५. जल से बुझती न यह अग्नि, अधिक अधिक बढ़ती ही जाय ।
प्रियतम मिले, अगन हो शीतल, जग क्या जाने प्रेम अगन को ॥
६. कोई वैद न औषध इसकी, नहीं उपचार है इस का कोई ।
प्रियतम वैद है औषध इस की, जग क्या जाने प्रेम अगन को ॥
७. तीर्थ शिवोम् अगन में झुलसी, जलता जाय तन मन सब ही ।
गुरु ही जानत राह प्रियतम का, जग क्या जाने प्रेम अगन को ॥

(६)

१. मनवा ! अब नहीं धीर धरत है, अजहूं राम नहीं आए।
मेरा अविरल नीर बहत है, राम नहीं दर्श दिखाए ।।
२. नयना सूजे राह निहारत, हिरदय हर दम धड़कत ।
मोरे प्रियतम तरस न खायो, राम नहीं दर्श दिखाए ।
३. जब घिरता सावन घनघोरा, प्रियतम याद दिलाए ।
मैं साजन ताकत रह जाऊं, राम नहीं दर्श दिखाए ।।
४. करत जिया पी खोजन ताई, पर उस को मैं खोज न पाती ।
अपनी इच्छा पीव प्रकट हो, राम नहीं दर्श दिखाए ।।
५. यदि राम को पाऊ मैं, काहे धारण प्राण करूं मैं ।
तड़पत तड़पत जीवन त्यागूं, राम नहीं दर्श दिखाए।।
६. राम प्यारा प्रियतम मेरा, मेरी आंखों का तारा ।
देखे बिन धीरज न आवे, राम नहीं दर्श दिखाए ।।
७. तीर्थ शिवोम् राम प्रभु मोरे, तरस खाओ अबला पर ।
अब तर रास्त देखत हारी, राम नहीं दर्श दिखाए ।।

(७)

१. मेरो मन ! हुआ अति आनंद ।
झूमत झूमत मस्त हुई मैं, पाऊ निज आनंद ॥
२. गुरु किरिया भई मो पर ऐसी, गाँठ खुली मेरे मन की ।
चेतन अब हे सर्व व्यापक, लीन भई आनंद ।
३. मोह शोक गत् व्यथा हुई मैं, जगत मोह सब छूटा।

उतरत अंतर ही अंतर में, नया नया आनंद ।।

४. गौण दृश्य है मेरे मन में, अंतर सुख उपजाता ।

नाचत गावत मगन हुई मैं, उदित हुआ आनंद ॥

तीर्थ शिवोम् तुम्हारी किरिपा, हे मेरे गुरुदेवा ।

ऐसो मनवा बना रहे अब, हर दम ही आनंद ॥

(८)

१. जगत में दुख का सकल पसारा ।

ज्ञानी ध्यानी और संसारी, डूबे सब अंध्यारा ॥

२. माया मोह में भीगा मनवा, सुख के पीछे धावे ।

दुख ही दुख पावत बेचारा, नहीं दीखत उजियारा ॥

३. पशु पक्षी और मानव दानव, सब अंध्यारे माहीं ।

दुख को सुख समझे हैं प्राणी, दुखी होय बेचारा ॥

४. जग में तो सुख है ही नाहीं, जीव को दुख भरमावे ।

जीव भोगता दुख ही रहता, करता नहीं विचारा ॥

५. जग भोगों के पीछे लग कर, अपना जनम गवावे ।

न समझे सुख कहाँ मिलेगा, सहता अत्याचारा ॥

६. दुख सागर से मुझे निकालो, मैं विनति यह करता ।

तीर्थ शिवोम् शरण में आया, दूर करो अंध्यारा ॥

(९)

१. मन से लड़ते जीवन बीता, पर हारा न मन मेरा ।
अब तो विषय भोग के कारण जीर्ण हुआ है तन मेरा ।।
२. तन ने भोगों को न भोगा, भोगा तन को भोगों ने ।
तन ने मन के पीछे लग कर दुखी किया जीवन मेरा !!
३. मन को दाबो जितना भी तुम, दुगुणा उछल के आता
विजय न पाया मैं इस को, जगदामुखी है मन मेरा ॥
४. अब तो आशाएं सब छूटी, अब तो जीवन बीत चला।
पर बलवान बना बैठा वह, नहीं मरा है मन मेरा ॥
५. अब तो जीवन जैसा बीता, बीत गया सो बीत गया।
पर मनवा है नाहीं छीजा, छीज गया है तन मेरा ॥
६. अन्त समय अब आन पुकारे, जग छोड़न की वेला है ।
मैं कुछ इस का कर न पाया, दुख का कारण मन मेरा ॥
७. अब भी कृपा से सब है सम्भव, छूट जाय मन का पीछा ।
मन के मारे जगत दुखी है, अब भी तगड़ा मन मेरा ॥
८. मनवा दुखी आप भी होता, दुखी करत सारे जग को ।
दुख देना ही लीला इसकी, खेल करत है मन मेरा ॥
९. तीर्थ शिवोम् तू क्या पछताए, मन के खेल निराले हैं।
मैं बी मन से जूझत हारा, विजय हुआ न मन मेरा ॥

(१०)

१. राम मोहे मन दुख देत बहुत है।
कैसे मैं समझाऊं उस को, हठ से नाहीं हटत है।
२. अब तो आशा टूट गई है, मानत सीख नहीं वह।
विषयन पीछे भागत फिरता, भोग से नाहीं हटत है
३. भय और क्रोध लोभ से भी वह, सुनत भले की नाहीं।
कोई उपाय सूझत नाही, अपनी ही वह करत है॥
४. अब मैं आई शरण तुम्हारी, मन से मुझे बचाले।
कृपा बिना तो मनवा नाहीं, चाल से नहीं हटत है।
५. जब तक प्राण बहिर्मुख होता, मन भी चंचल रहता।
प्राण शक्ति से शक्ति पाता, अपने मन की करत है॥
६. कृपा बिना न शक्ति होती, अन्तर आतममुख वह।
तब तक मन निर्मल न होता, नाहीं भोग तजत
७. चरण पड़ी हूं अब मैं तुमरी, कृपा वृष्टि बरसा दो।
मन मेरा होवे अन्तर्मुख, भ्रम को नाहीं तजत है॥
८. अन्तर्मुखता में ही सुख है, चंचलता दुख देती।
राम भजन में मन रमता जब, तब ही सुखी बहुत है।
९. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, मन विश्राम न पाता।
भजन कृपा से ही मन होता, सुख आराम अघट है।

(११)

१. मेरो मन, मोरे वश में नाहीं ।

भागत जात है तुमरे पासा, रहत तुम्हीं घर माहीं ॥

२. लोग कहत तू भई बावरी, पर मैं समझ न पाती ।

मनवा तो वश में है नहीं, जावत प्रभुहि पाहि ॥

३. ध्यान भजन में मन को लगाऊं, पर मन मानत नाहीं ।

प्रभु माही थिर रहना चाहे, जावत दूजे नाहीं ॥

४. लोग करत अभ्यास बहुत ही, एकागरता मन ताई ।

मेरा मनवा सहज स्वाभाविक, होवत तब घर माहीं ॥

५. मेरा मनवा बहुत भलो है, आनंद रहत वह लूटत ।

ता पर भी वह तुमरे दर्श को, मचले पल पल माहीं ॥

६. तुमरे दर्शन बिन नहीं मनवा, चैन सकत है पाए ।

दूजे पास चैन नहीं है, चैन तेरे घर माहीं ॥

७. तीर्थ शिवोम् विनती प्रभु मोरे, अपने पास ही राखो ।

सुख तो तुमरे घर ही माही, जग में तो सुख नाहीं ॥.

(१२)

१.मैं मन के हाथों बहुत दुखी ।

मन से पिण्ड छुड़ाओ प्रभुजी, कर दो मुझे सुखी ॥

२. तुमरी कृपा बिना प्रभु मोरे, यह सम्भव है नाहीं ।

मनवा तो चंचल हुई बैठा, करता बहुत दुखी ॥

३. योगी, जपी, तपी सब हारे, फिर मेरी क्या गिनती ।

लड़ते लड़ते हार गई मैं, हो गई बहुत दुखी ॥

४. मन के मारे चैन न पाती, जप तप कर थक हारी ।

तुम ही कृपा करो तो माने, अब तो बहुत दुखी ॥

५. मनवा भी दुख भोग रहा है, मोहे भी दुख देता ।

कौन उपाय करूं मैं जिस से, करे न मुझे दुखी ॥

६. जब तक मन में कर्म हैं संचित, तब तक मन है चंचल ।

मन मेरे को निर्मल कर दो, करती विनय दुखी ॥

७. तीर्थ शिवोम् यह मन है ऐसा, पीछा छोड़त नाहीं ।

मन से मुक्त करो मेरे प्रियतम, दुखिया होय सुखी ।।

उर्दू

(१)

१. बढ़े जा रहे हैं, उड़े जा रहे हैं,

न जाने किधर को चले जा रहे हैं।

बिना यह भी जाने कि मन्जिल कहां है,

कहां को किधर को चले जा रहे हैं ।।

२.यह माना कि मन्जिल कहीं पर तो होगी,

कहीं रास्ता होता तो होगा ।

यह जाने बिना कि रास्ता है,

बिना सोचे समझे चले जा रहे हैं ।।

३. नहीं कोई रहबर, नहीं अक्ल मुझ में,
नहीं समझने का कोई ढब भी आता।
बिना जाने बूझे, बिना कोई पूछे,
अंधेरे में बढ़ते चले जा रहे हैं।
४. रहे हम हैं रह आलिमे रंजो गम में,
नहीं कोई सूरत अमन की नजर में।
रहे आरजुओं में फिर भी जहां में,
तरसते तड़पते चले जा रहे हैं।।
५.हो नजरो करम मुझ पह ए मेरे मुर्शिद,
न मन्जिल नजर मैं कहीं न कहीं भी।
है जाना कहां और किधर को कदम हैं,
मगर तरफे मन्जिल चले जा रहे हैं।
६. है शिवोम् तेरे कदमों में ही मुर्शिद,
निकालो मुझे आलिमें बेबसी से।
७. कि जाहिर मेरे सामने भी हो मन्जिल,
पता हम को यह हो किधर जा रहे हैं।

(२)

१. हो कर निराश हर जगह, घबरा के आ गया हूं।
देख ली दुनिया तेरी, शरमा के आ गया हूं॥
२. देखा जगत में जा बजा, स्वारथ का खेल है।
दुनिया की महफिलों को, बिसरा के आ गया हूं।

३. क्यों आ गया यहां पर, अपना नहीं है कोई ।
मुंह है चिढ़ाते सब ही, पछता के आ गया हूं ॥
४. लौटा फरेब का कभी, होता सफल नहीं ।
लोटे को देख खाली, लुढ़का के आ गया हूं ॥
५.इस फिकर में हैं हर बशर, चूना किसे लगाए ।
अब अपने आप को ही, लगवा के आ गया हूं ॥
६. बनना बनाना दुनिया में, इक आम बात है ।
मैं भी बनाते बनते, बनवा के आ गया हूं ॥
७. शिवोम् अब नहीं है, रहने की और ताक़त
ताकत जहां में हर जगह, अजमा के आ गया हूं ॥

(३)

तेरी सूरत देख कर, मैं तो तुम्हारा हो गया ।
दिल तो तुम को दे दिया, मैं तो तुम्हारा हो गया ।
२. यूं तो जमाने में हजारों ही हंसी भरपूर हैं ।
पर तेरे जैसा नहीं कोई, तुम्हारा हो गया ।
३. मैं दुआ हूं मांगता, मुझ को मिले मेरा प्रभु ।
तुम मिलो या न मिलो, मैं तो तुम्हारा हो गया ।।
४. तुम पयालाये- शराबे -हक, मुझे दो या नहीं ।
मैं तो शराबी हो गया, मैं तो तुम्हारा हो गया ।।
६. तुम सहारा अपने दामन का, मुझे अब दे ही दो ।
मैं ने दामन अब है थामा, मैं तुम्हारा हो गया ॥

अब मेरे तुम ही तो हो, तुम ही तो हो, तुम ही तो हो।
अब मेरा कोई नहीं, अब मैं तुम्हारा हो गया।।
७. शिवोम् की फरियाद यह, मुझ को न छोड़े जाओ तुम।
पकड़ लो या छोड़ दो, पर मैं तुम्हारा हो गया।

(४)

१. तू आता नहीं, पर है करता इशारे।
पड़े हम यहां हैं, तुम्हारे सहारे॥
२. छुपा बैठा तू हो, नकाबे निहां है।
बना बीच परदा हमारे तुम्हारे॥
३. मिलाए नज़र से नज़र न तो तू ही।
हमें कहता देखो तो तर तुम्हारे॥
४. है जख्मी हुआ दिल तुम्हारे लिए ही।
सितमगर तू ऐसा कि टुकड़े हमारे॥
५.मैं खोजूं कहां, तुझ को पाऊं कहां पर
नज़र में न आता, नज़र में हमारे।
६.यह डाला है परदा तुम्हीं ने हमीं पर
गिला हम पर ही है, हुए न तुम्हारे
७.शिवोम् अब बिना तेरे है मुश्किल जीना
भरोसा नहीं कुछ, मिले बिन तुम्हारे

(५)

१.मैं करता खता, तू अता करने वाला
गुनहगार मैं हूं, दुआ करने वाला।
२.यह रहमत तेरी से बशर हो के क़ायल
कि बनने लगा वह ख़ता करने वाला।

३. बयां मैं कहां तक करूं तेरी ताकत
खता मआफ करता, अता करने वाला।
४. जहां सारा तेरे ही ज़ेरे असर है
५. तू मुर्शिद जहां का, अता करने वाला।
शिवोम् बख्श दे, बन्दा को अपनी रहमत
खतागार मैं तू, अता करने वाला

(६)

१. प्रभु तुम ने गम दिया जो, मुझे (साजग़ार) है।
वह बन गया है दिल में, अब उस्तवार है॥
२. तुमने सताया मुझ को, मैं सह गया सभी कुछ।
तुमने सितम किया जो, मुझे उस से प्यार है॥
३. आंखें बनी हैं पुरनम, तड़पे कलेजा मेरा।
मुझे तड़पने का हर दम यह इख्तयार है।
४. मुझे दे के गम के बदले, ठण्डा किया है दिल को।
आशिक बनाया मुझ को, तू बेनयाज है।।
५. तूने मुझे बनाया, गुनाह करने वाला।
बन्दा तो पहले से ही गुनाहगार है।।
६. गुनाह माफ करना, तू ने ले लिया है जुम्मा।
मेरे गुनाह का फिर, क्योंकर गुनाह है।
७. शिवोम् आशिकी में, हैं मुश्कले बहुत ही।
मगर उसमें इक मजा है, जो बेशुमार है॥

(७)

१. तेरा खयाल जो यादों में बना रहता, तो गम नहीं होता।
मेरी सांसों में तेरा नाम बसा रहता, तो गम नहीं होता ।।

२. रवां किया मेरे दिल को, तुम्ही ने, तालिबे दुनिया ।
अगर यहां भी मुझे सुख अता किया होता, तो गम नहीं होता ।।

३. लगा रहा मैं बनाने में दुनिया अपने लिए
खुदा के वास्ते ग़र यह किया होता, तो गम नहीं होता ।।

४. फरेब खल्क ने बेहद किया मुझे रुसवा
अगर असर नहीं दिल ने लिया होता, तो गम नहीं होता ।

५. यह सारी इल्लतें मुर्शिदबिना हुईं, नाज़िल,
कबूल रहबरे हक जो किया होता, तो गम नहीं होता

६. शिवोम् लाजमी मुर्शिद है आदमी के लिए
मुरीदे हक बना इन्सान जो होता, तो गम नहीं होता ।।

पंजाबी

(१)

१. हे मेरे मालिका ! तू ही तू रह जावे ।
न कोई इच्छा बाकी रहवे, न ही मैं रहजावे ॥
मैं मेरा, ते तू ही तेरा, माया रूप है सारा ।
तू दा भाव जगत तो हट के, तेरे विच समावे ॥

३. जद तक मैं है चित्त दे अन्दर, तद तक मैं, मैं नाहीं ।

जदों विलीन मैं तेरे अन्दर, शुद्ध रूप हो जावे ॥

४. मै तू तो छुटकारा मिलदा, मैं ते तू न रहन्दा

तू ही दिस्से सारे जग बिच, जगत तू ही रह जावे ॥

५. मैं तू दी गल्ल मुक्कन लई, मुर्शिद ही इस रस्ता ।

सतिगुरु मेहर करे ते ताही, मैं दी फाही जावे ॥

६. जेहड़ा मुर्शिद पैरी पैंदा, हुकम नू मत्थे रखदा ।

दिल है साफ ओहनां दा होन्दा, मैं तू गल्ल मुक्क जावे ॥

७. मेहर करो सतिगुरु मेरे ते, मैं हां चरणीं लग्गा ।

बुकल दे विच चोर है छुपया, ओह परकट हो जावे ॥

८. तेरी शरण छड़ के मुर्शिदा, शरण कित्थे में भालां ।

हुन ते कृपा करो मेरे दाता, माया गंड खुल जावे ॥

९. तेरे लई मेरे सतिगुरु स्वामी, कुछ भी मुश्किल नाहीं ।

मेहर होवे ते सभे सिधे, मुश्किल दा हल होवे ॥

१०. करे पुकार शिवोम् है चरणी अर्ज़ सुनो मेरे मालिक ।

हो सहारे सारे छड्डे, मैं तू खतम हो जावे ॥

(२)

१. मेरे हाल तेवी कुझ तक लैं तूं, केहड़े राह उत्ते मैं चल रही हां।

मेरे कदम वददे हन वल तेरे, या हनेरे मैं भुल्ली जा रही हां ॥

२. योग ज्ञान ते भक्ति कुझ न जाना, पूजा पाट बी मैंनू आबंदा नहीं ।

इक तेरा लड़ फड़ के ही, राह यार दे टुरदी जा रही हां ॥

३. तेरा लड़ न किदरे छुट जावे, मेरी बांह अपने हाथ लै लै तू ।

कोई जोर ते अकल न कोल मेरे, बस तेरे भरोसे ही जा रही हां ॥

४. पैण्डा है औखा ते ऐड़ा तेरा, राह दस्सन वाला कोई नाल नहीं ।
भुल्ली पैन जावा, एह डरदी हां, मैं डर दी डर दी ही जा रही हां ।।
५. तीर्थ शिवोम् है चल्या राह तेरे, रख भरोसा ही तेरा मन अन्दर ।
मेरे मन इरादे दी लाज रखीं, राह छड्ड सारे, इक्को राहपई हां ॥

(३)

१. नी मैं की करां, मेरा दिल नहीं मनदा।
दौड़ दौड़ के पी वल्ल जावे, ओथे ही सुख मनदा ॥
२. घड़ी घड़ी मैं ओहनूं मोड़ा, भोगां दे वल्ल लावां ।
हथ छुड़ा के पी वल्ल भज्जे, आंखें नाहीं लगदा ॥
३. कदे नजारे सोहने दस्सां, शक्लां ध्यान लगावां ।
मुंह दा स्वाद वधावन करदी, कोई गल्ल न मनदा ॥
४. छुट्टी जांदी दुनिया हथ्थों, भोग वासना ओझल ।
५. दिल ते एनू छड़ के नसया, एथे सुख न मनदा ॥
तीर्थ शिवोम् मैं दिल दे पिच्छे घर प्रीतम दे चल्लां ।
ओथे ही सुख लभदा होवे, ताहीं दिल नहीं मनदा ॥

(४)

१. जिस दिल विच तेरी चाह नहीं, ओह दिल ते कोई दिल नाहीं ।
जिस घर विच तेरा चानन न, ओह घर ते कोई घर नाहीं ॥।
२. जिस मुंह न निकले नाम तेरा, ओह मुंह ते कोई मुंह नाहीं ।
जिन होठां तेरी गल्ल नहीं, ओह होठ ते कोई होठ नहीं ।।
३. मैं अक्खी तैं नू तकदी हां, ते कन्नी तैं नू सुनदी हां।

तेरा तकन सुनन नहीं होवे, ओह अक्ख नहीं ओह कन्न नहीं ॥
४. शिवोम् तू ही हर शै अन्दर, हर नाद तेरी आवाज ही है।
जद मन दी हालत एह होवे, फिर दाद नहीं फरियाद नहीं ॥

(५)

१. दिल्बर न किदरे वी लब्भे, नी मैं किन्नूं पुच्छां ।
मेरा यार न किदरे दिस्से, नी मैं किन्नू पुच्छां ॥
२. पहलों ओहनूं में भुल्ल बैठी, दुनिया विच मन नू ला बैठी ।
हुन में ओहनू लब्धी फिरदी, नी मैं किन्नू पुच्छां ॥
३. मन्दिर मस्जद समना थाई, लबदी फिर दी थाई थाईं ।
किदरे यार नज़र न आवे, नी मैं किन्नु पूंच्छां ॥
४. सुनदे यार बुकल विच बैठा, लुकया होया घर विच बैठा।
पर मैं नूं ओह लभदा नाहीं, नी में किन्नू पुच्छां ॥
५. सतिगुरु कोल राह पुच्छन आई,पता ठिकाना जप्पन आई ।
सतिगुरु मेहर करे ते पावां, नी मैं किन्नू पुच्छां ॥
६. पीर फकीरां फिरदी डोलां, अपना यार मैं लभदी डोलां ।
अज तक यार न परगट होया, नी में किन्नू पुच्छां ॥
७. तीर्थ शिवोम् किरिपा मेरे मालिक, सारी दुनिया दा तू मालिक।
मैं नूं मेरा यार मिला दे, नी मैं किन्नं पुच्छां ॥

(६)

१. कौन गली माही दा डेरा, कोई न दस्सन वाला ।
जिस नूं पुच्छों, ओह हसदा, जग है हस्स्न वाला ॥

२. माही बिना दुख चारे पासे, दुख ही दुख सतावे ।
जग दा सुरत्र ते ऐंवे लगदा, फाही कस्सन वाला ॥

३. जेहड़ी था मेरा यार वसेन्दा, सभना थाई पैलां ।
अजब नजारे ओथे दिसदे, ते दुख है नस्सन वाला ॥

४. माही नाल है सुख घनेरा, माही सेज सुहानी ।
यार मेरा कद मिलसी मैं नूं जगत ते डस्सन वाला ॥

५. खड़ी उड़ीकां यार दे ताईं, मन दूजे न जावे ।
मन नू रोक यार ते लावां, मन है नस्सन वाला ॥

६. दिल अन्दर माही दा चानन जिन्ही मन बिच दिसदा ।
माही दा सुख लभ्भे ओहना, हर पल हस्सन वाला ॥

७. अन्दरों मेरा दिल रोंदा है, बाहरों अक्खियां गिल्ली ।
यार वियोग है दुखड़ा मेरा, दिल नू डिस्सन वाला ॥

८. धीरज मन नूं बहुत बंधारन, उपदेश क बहुतेरे ।
राही पावन मिलदा नाहीं, दिल्बर दस्सन वाला ॥

९.तीर्थ शिवोम् मैं कित्थे जावां, कित्थों जा के लोंड़ा।
बिना मेहर मुर्शिद दी पायां, यार न दिस्सन वाला ||

(७)

१. आँगन भरया है पिण्डा मेरा,
ते शिंगार वी में कुझ कीता नाहीं ।
रीत वी प्रीत दी जानदी नहीं मैं,
मेरा प्रीतम क्योंकर मिलसी मैं नं ॥
२. पिया दा वास मेरे घर अन्दर,
मन लग्या मेरा घर दे कम्मी ।
घड़ी इक संगत पी नाल न कीती,
मेरा प्रीतम क्योंकर मिलसी मैं नूं ॥
३. पिया दा डेरा है उच्ची थाई,
पंछी जित्थे जा न सक्कन ।
किस मारग तों मैं जावां ओथे,
मेरा पीतम क्योंकर मिलसी मैं नूं ॥
४. जग सारा स्वारथ दा भरया,
प्रेम दा नाता, किस नाल जोड़ा।
इक्को प्रीतम मेरा सच्चा साथी,
मेरा प्रीमत क्योंकर मिलसी मैं नूं ॥
५. मुर्शिद मेहर दा इक भरोसा,
दिल विच चानन दी चिंगारी ।
प्रीतम नू ओह मन विच दस्से,
मेरा प्रीतम क्योंकर मिलसी मैं नू ॥

६. तीर्थ शिवोम् मेहर जे होवे,
मुर्शिद ही रब्ब बन खलोबे ।
तद एक करन दी लोड़ेन रहन्दी
मेरा प्रीतम क्योंकर मिलसी मैं नू ॥

(८)

१. एह मन्त्र के तेरे दर ते आए,
जेहड़े भाग बिगड़े ओह बन जानगे ।
जे यार ने वी मुंह मोड़ लीता,
फेर एह बन्दे किधर जान गे ॥
२. तेरे तक्कन लई हां होए दीवाने,
झुंड चुक लै रुख तो जरा लाई ।
जे चेहरा छुपया अन्दर रह्या,
एक बन्दे घुट-घुट के मर जानगे ।।
३. मुसीबता लक्खां मेरे सामने आइयां,
पर मन विच इक भरोसा बनया ।
जिन्हों ने लड़ तेरा पकड़ लीता
इक दिन बन्दे उभर जानगे ।।
४.जग बिच कोई अपना नाहीं,
एह फरियाद लयाए तेरे सामने ही।
तूं वी मेहर न कीति, तेदा तेही,
तेरा नां लै लै के मर जानगे ।।
५. तेरे दीदार दी भाख पए मंगदे हां,

हुन रब दी सौं तू मना वी जा
खाली हथ जे गए तेरे दर उत्तों,
जग देवेगा ताने, किधन जानगे ।।
६. तेरे बिना नहीं होर सहारा कोई,
इक्कों तेरे ही लड़ दी आस मैं नूं ।
जे ओह वी शिवोम् तोड़ न चढ़ी,
कोई होर नहीं था, जित्थे ओर जानगे ।।

अन्त का पश्चाताप

(१)

१. अवसर यह भी बीत गयो ।
जनम अमोलक युहीं गंवाया, असफल वृया गयो ॥
२. कर किरिपा प्रभु जनम यह दीना, कीमत समझ न पाया।
बिन कारज के कारज कीना, हाथ न कछु पयो ॥
३. जीवनासक्ति में मैं उलझा, माया मोह भरमावे ।
प्रभु मारग नाहीं अपनायों, असफल जनम गयो ॥
४. अब न सुनत चलत न देखूं, फिर भी मनवा चंचल ।
मनवा मारे दुखी भयो मैं, जग में लटक रह्यो ।
५. दम्भी कुटिल नीच में पापी, पाप में समय गवाया।
अब जब मृत्यु आन खड़ी है, मिथ्या रोए रह्यो ।
६. आवागमन चक्र न छूटा, भम्रत फिरा जग माहीं ।

अब तो कोई मारग नहीं, मारग भटक रह्यों ॥
७. तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, मेरी ओर निहारो ।
मुझ को जग छोड़त है नाही, जग में भटक रह्यो ॥

(२)

१. मैं मृत्यु ओर बढ़ा जाता, पर देखत जग हूं जाए रह्या ।
मैं जाता किधर, कहाँ हूं देखत, फिसलत जाए रह्या ॥
२. हैं जगत पिपासा हैं मन मांही, जी न चाहे जगत छोड़न को ।
पर अबतो जीवन बीत चला, क्यों भरमाए रह्या ॥
३. जब जग में मैं मन को दीना, तब जगत बड़ा मीठा लागा।
जब जग अनुभव पास है मेरे, मन जग लाए रह्या ॥
४. आयु बीत गई हैं सारी, परमारथ ध्यान नहीं कीला ।
क्या खाक लगे अब मन मेरा, विषयों में है जाए रह्या ॥
५. कल से ही मैं राम जपूंगा कहते कहते बीत गई ।
राम जपान जपा जपने से कतराये रह्या ।।
६. यमदूत पड़ा जब दृष्टि में, तब राम जपन की याद भई ।
कब तक का देगा दूत-समय, यह समझ में नाहीं आए रह्या ।।
७. शिवोम् निराश भई भारी, अब भी मानत है मन नाहीं ।
अब भी जग में भरमाए रह्या, और जग विषयन में जाए रह्या ॥

T

(३)

१. क्या मैं करूं, किस को पुकारूं, कोई अपना हैं नहीं ।
किस पर भरोसा मैं करू ? कोई अपना है नहीं ॥

२. उमर तो मैंने गुजारी, देखता जग को रहा।
अब जो मेरा वक्त आया, कोई अपना है नहीं ॥

३. हर कोई है लग रहा, दुनिया बना अपने लिए।
पूछता कोई किसे न कोई अपना है नहीं ।।

४. अब रहा पछताएं मैं, है वक्त बीता फालतू ।
हैं समझ आई मुझे यह कोई अपना है नहीं ।
५. कर कृपा गुरुदेव हे, मैं हू तेरे चरणों पड़ा।
अच्छी तरह देखा, जगत को, कोई अपना है नहीं ॥

(४)

१. जो जल नदिया का निकल गया, फिर लौट नहीं वह पाता है
ऐसे जीवन मेरा बीता, नहीं गया लौट के आता है |
२.जो पेड़ से गिरता फल पक कर, फिर डाली पर वह लगे नहीं
जो देह गिरी, वह फिर न उठी, न जीवन वापिस आता हैं ।
३. पहले इस बात को न समझा, अब समझन बेला बीत चली
अब होत भला क्या पछताए, पल बीता, बीत ही जाता है |
४. विषयों में रमन करे मनवा, जाना तो उस को या याद नहीं।
पर जाना टल न पाएगा, वह मौत से छूट न पाता है ।
५. अब तो चलने की बेला है, अब भी तैयारी कर ले तू ।
जब पूंजी पास नहीं तेरे, तू फिर पीछे पछताता है ॥

६. तू राम भजन में अब लग जा, जो जीवन तेरा शेष बचा।
जल्दी कर, समय गंवा न तू, यह समय निकलता जाता है।
७. गुरु किरिपा एक सहारा है, है तीर्थ शिवोम् चरण लागा।
तेरा सम्बल मेरा जीवन, जीवन तो बीता जाता है|

(५)

१. उमर ऐसी आ गई परला किनारा दिख रहा।
धर्म राजा बैठ कर, अगला किनारा लिख रहा॥
२. पिछला किनारा दिख रहा, गिरता हुआ, ढहता हुआ।
अगला किनारा हाथ में, आते हुए अब दिख रहा॥
३. इस किनारे से चला मैं उस किनारे पहुंचता।
मुझ को किनारा न मिला, बस घूमता मैं फिर रहा॥
४. आवागमन से छूटना हो, काम मानुष जनम का।
पर नहीं वह कर मैं पाया, चक्र खाता फिर रहा।
५. कर्म लेखा न मिटा कर, कर्म संचय ही किए।
वासना जब तक है मन में, जीव फिरता ही रहा।
६. दो किनारे छूट कर, असली किनारा कब मिले।
इस की चिन्ता ही नहीं की, व्यर्थ कामों में रहा।
७. अब नहीं आशा कोई भी, बलबले सब चुक गए।
दुनिया तमाशा देख कर, उत्साह बाकी न रहा।
८. गुरुदेव किरिपा अब करो, शिव ओम् चरणों में पड़ा।

आवागमन का चक्र छूटे, बार बार मैं फिर रहा ॥

(६)

१. जब मैं होता शान्त अकेला, स्मृति पटल पर उभर के आता ।
बीता जीवन, बीती यादें, व्यथित ह्रदय मेरा हो जाता ॥
२. क्या खोया, क्या पाया मैंने, जब विचार हूं करता इस पर ।
जीवन में खोया ही खोया, साफ यह मुझ पर हो जाता है ।।
३. जो करना था, सो न किया, नहीं करना ही करत रहा।
ऐसा अंधा मूढ़ बना मैं, जीवन व्यर्थ चला जाता ॥
४. दभी पापी अत्याचारी, जीवन में, क्रम यही रहा ।
भोग वासनाओं में डूबा, कर्म कुकर्म किए जाता ॥
५. जब आता अतीत है. सन्मुख, कांप तभी मैं जाता हूं ।
मन से मैं विचलित हो जाता, मुख मलीन तब हो जाता ||
६. अब तो बीता जीवन सारा, चलने की अब वेला है ।
अब पछताए होत भला क्या, जगत छोड़ के मैं जाता ॥
७. तीर्थ शिवोम् है मन घबरावन, अपने पास नहीं कुछ भी ।
अब तो कोई रस्ता नाहीं, मन मसोस के मैं जाता ॥

(७)

१. चलने की बारी आ गई, जल्दी चलो चलो ।
साथी तो कूच कर गए, जल्दी चलो चलो ॥

२. न खेप मेरा लद सकी, न मैं हुआ तैयार ही ।
आवाज यह है आ रही, जल्दी चलो चलो ॥
३. अब मुंह छुपाए होत क्या, सोने का वक्त है नहीं ।
छुपने से क्या है फायदा, जल्दी चलो चलो ॥
४. मैं देखता हूं घर कभी, हूं देखता जगत कभी ।
न घर न जगत जा सके, जल्दी चलो चलो ॥
आगे का गम किया नहीं, छूटा भी जाय हाथ का ।
अब सोचने से होय क्या, जल्दी चलो चलो ॥
६. जाना कहाँ है, घर कहां, कुछ भी खबर नहीं ।
अब क्या, कहाँ, कैसे भी हो, जल्दी चलो चलो ||
७. शिव ओम सारे जगत में, सुनता न कोई कुछ ।
अब एक ही तो बात है, जल्दी चलो चलो ॥

(८)

१. मैं लंगड़ा लंगड़ा चलता, देह में जोर नहीं है।
मैं कानों से कम सुनता, मन में शोर नहीं है ।
२. काय करूं, कहाँ को जाऊं, मैं किस को जाय पूछूं ।
आयु तो है बीती जाती, अब कुछ भी होड़ नहीं है ।
३. मैं रहा. बनाता दुनिया, अपने ही सुख के कारण ।
पर सुख न मिला कहीं भी, आशा का मोड़ नहीं है ।
४. मैं भजन भी नाहीं कीना, सतकर्म भी न कर पाया।
यह समय निकलता यूं ही, इस का अब तोड़ नहीं है ॥

५. गुरु देव कृपा हो मो पर, इस अन्तिम समय सम्भालो ।
कुछ भी है कर न पाया, अब मन में जोर नहीं है |
६. अब मेरी ओर निहारो, यह बालक शरण तिहारी ।
शिव ओम् पुकार रहा है, वाणी में जोर नहीं है ।

(९)

१. मैं लड़त लड़त मन से हारा, पर जीन न उस को मैं पाया।
अब तो आयु है बीत चली, पर मनवा वश मेंन आया ॥
२. मनवा धावत है विषयों को, हो चंचल बना अधीर है वह ।
मानत कुछ भी वह बात नहीं, उपराम न जग से हो पाया ॥
३. अब अन्तिम क्षण है जीवन का, अब मन से युद्ध न हो पाता ।
है सूझत नहीं उपाय मुझे, जिससे मन वश में हो पाता ॥
४. समझाया मुझ को लोगों ने, पर मन तो समझ नहीं पाया।
अब जीवन बीत चला पल में, है दर्शन राम नहीं पाया ॥
५. है जग में सुख भी नाहीं मिला, और राम मिलन भी हुआ नही ।
है आशाएं सब विफल हुई, कुछ भी मैं नाहीं कर पाया ॥
६. अब एक भरोसा गुरुवर का, अगला जीवन सुधरे मेरा ।
बस राम भजन में मन लागे, अब के तो भजन न कर पाया ॥
७. है तीर्थ शिवोम् यही इच्छा, मन प्रभु चरणों में लगा रहे ।
मन माने इच्छा पूर्ण तभी, अब तक मन मान नहीं पाया ॥

(१०)

१. जिस देह में अब तक घर छीना, उस देह को छोड़ चला अब मैं।
फिर भी हैं आशाएँ मन में, सब आशा छोड़ चला अब ।।
२. फिरता घमण्ड में मैं फूला, कुछ समझा नहीं किसी को कुछ।
पर आया अन्त समय जब है, सब कुछ हूं छोड़ चला अब मैं ॥
३. दुनिया में किस का कौन हुआ, इस बात को नाहीं समझ सका।
पर अब यह बात प्रकट मन में, तन मन से छोड़ चला अब मैं ।।
४. यह देह भी अपनी है नाहीं, यह यहीं धरी रह जायेगी।
न साथ चले यह भी मेरे, इस को भी छोड़ चला अब मैं ।।
५. हैं आगे की चिन्ता मुझ को, अब अगला जन्म कहां होगा।
यह जन्म तो सिमटा जाता है, दुनिया को छोड़ चला अब मैं ।।
६. दुनिया वालो ! आबाद रहो ! तुम को भी इक दिन जाना है।
अपना तो काम है बतलाना, बतला कर छोड़ चला अब मैं ॥
७. हे तीर्थ शिवोम् सचेत रहो, दुनिया से क्या लेना देना।
मिथ्या जग में अब रहना क्या, मिथ्या जग छोड़ चला अब मैं ॥

(११)

१. अब बुलावा आ गया, चलने की तैयारी करो।
इनकार का अन्दर नहीं, चलने की तैयारी करो ॥
२. अब तू क्या सोचे भला, पहले तो कुछ समझा नहीं।
है समय वह आ गया, चलने की तैयारी करो ॥

३. न किया सतकर्म तू ने, फिर रोय है तू क्यो रहा ।
अब कर्म का अवसर नहीं, चलने की तैयारी करो ॥
४. साथ तू ने कुछ लिया न, अब कहां क्या खाएगा।
बात मानी तू नहीं, चलने की तैयारी करो ।।
५. जो समय है बीतता वह, लौट कर आता नहीं ।
उमर यूं ही दी बिता, चलने की तैयारी करो ।।
६. अब क्यों पछताए हैं, शिवोम् तीरथ घर चलो।
अब घर तुम्हारा यह नहीं, चलने की तैयारी करो ॥

(१२)

१. अब किस को, कुछ, क्या कहना, जब बीत चला जीवन ही ।
कुछ लेना क्या है देना, जब बीत चला जीवन ही ॥
२. अब आगे की सुध ले तू है जीवन यूं ही गंवाया ।
अब क्या सोचे तू जग की, जब बीत चला जीवन ही ॥
३. कुछ किया न तू ने आ कर, बरबाद तू हर पल कीना ।
अब समय क्या वापिस आए, जब बीत चला जीवन ही ॥
४. अब अन्त समय है आया, और अब है तू पछताया।
कुछ होत नहीं पछताए, जब बीत चला जीवन ही ॥
५. कुछ शुभ भी न कीना, कुछ सेवा कर न पाया।
क्या साधन भजन करेगा, जब बीत चला जीवन ही ॥
६. अब तो जाना है जाना, कुछ करना है न बाकी ।

न कर पाएगा कुछ भी, जब बीत चला जीवन ही ॥

७. तुम को समझाय रहा मैं, पर तू कुछ समझ न पाया ।
अब क्या समझाऊं तुझकों, जब बीत चला जीवन ही ॥
८. है विनय शिवोम् की यह ही, गुरुदेव सम्भालों मुझ को ।
अब कुछ भी हो न पाए, जब बीत चला जीवन ही ॥

विविध

(१)

१. दिन आता है, दिन है जाता, यूं ही जीवन बीता जाता ।
बीतत जीवन को न देखत, दिन पर दिन है बीता जाता ।।
२. मानव बना पशु की भाँति, विषयासक्त बना है वह ।
परमारथ को जानत नाहीं, समय बीतता जाता है ॥
३. सन्त उसे समझाए थके हैं, सुनत तनिक वह ही नाहीं ।
मन अपने की बात मानता, मन जग में ही भरमाता ॥
४. अब तो जीवन बीत चला है, सोच ले मन में तू भाई ।
पर तू जगत विषय में लागा, अजहूं समझ नहीं पाता ।।
५. मनवा चंचल बना है ऐसा, चैन उसे क्षण भर नाहीं ।
स्थिर बुद्धि हो बैठ जरा तू, अपना मन क्यों भरमाता ।।

६. विष्णु तीर्थ प्रभु शरण गहे तू, तो मारग कल्याण मिले ।
नहीं तो भटक भटक कर यूं ही, दुख सुख में तू भरमाता ॥
तीर्थ शिवोम् समय जो बाकी, सद् उपयोग करे उसका ।
जीवन तेरा सफल बने तब, जीवन में न तू भरमाता ॥

(२)

१. माया फेर पड़ा तू मानव, भटक भटक मर जावेगा।
जीवन यूं ही चला जात हैं, अन्त समय पछतावेगा ॥
२. तू रहा जगत में भरमाता, सुख दुख को जान नहीं पाया ।
राम भजन बिन मेरे मनवा, तड़प तड़प मर जावेगा ||
३. चंचल मन हो दुखी रहा तू, राम में थिर मन न कीना ।
जब तक तू विश्राम न पावे, दुख में समय गँवावेगा ॥
४. जब तक जल परवाहित रहता, लहरें उठती रहती हैं।
मनवृत्ति न जब तक रुकती, मन विक्षेप तू पावेगा ॥
५. राम भजन ही केवल मारग, राम भजन से सुख उपजे
राम भजन से ही मन थिर हो, अन्तर थिरता पावेगा ॥
६. तीर्थ शिवोम् तू राम भजन कर, त्यागे चंचलता मन की ।
राम भजन ही एक सहारा, जग से मुक्ति पावेगा ॥

(३)

१. मैं करत प्रतीक्षा तेरी, पर तुम अंजहूं नहीं आए।
मैं राह निहारत तेरी, पर नाहीं दर्श दिखाए ।।
२. पल पल क्षण क्षण जाए बीतत, उमरिया सारी निकसी जाय ।
कब तक आशा मन में राखूं पर तुम अजहूं नहीं आए ।।
३. गई बीत बरसातें कितनी कितने दिन और रातें कितनी ।
कितने पतझड़ बीते अब तक, पर तुम अजहूं नहीं आए ।।
४. भाँति भाँति के साधन कीने, कई नाम और मारग लीने ।
नाक पकड़ कर प्राण चढ़ाए, पर तुम अजहूं नहीं आए ।।
५. तीरथ भटकी, मन्दिर खोजे, सतसंगत में समय बिताए ।
पुस्तक में भी तुम को खोजा, पर तुम अजहूं नहीं आए ।।
६. चिन्तन मनन बहुत ही कीना, ध्यान लगा कर तुम को चीहा ।
तरह तरह के वेश बनाए, पर तुम अजहूं नहीं आए।।
७. कहां खोजूं और किस को पूछूं, तेरा पता कहां से खोजूं ।
क्या क्या मैं ने कर्म कमाए, पर तुम अजहूं नहीं आए ॥
८. जब तक गुरु कृपा न मिलती, तब तक तेरी खबर न होवे ।
होते प्रकट नहीं तुम अन्तर, पर तुम अजहूं नहीं आए ।।
९. तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, सुध लो स्वामी मेरी ।
राह निहारत मैं थक हारी, पर तुम अजहूं नहीं आए ।।

(४)

१.मैं कब की रही पुकार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ।
मैं कर रही हाहाकार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ॥
२. बुरा हाल है मेरे मन का, लड़ भी मैं न पाती इससे ।
अब सुन लो मेरी पुकार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ॥
३. जग माया में गहरी उतरी, तैर न पाती अपने बल से ।
अबला की सुनो पुकार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ॥
४. मन से मैंने तुम्हें भुलाया, उस का दण्ड भी मैंने पाया ।
तुम करो न अधिक विचार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ॥
मैं प्रमाद में पड़ी हुई हूं, विषयों में मैं रमी हुई हूं ।
मेरा कर तो बेड़ा पार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ॥
मैं आई हूं तुमरे द्वारे, आशा ले कर तुमरे द्वारे ।
अब करो मेरा उद्धार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ॥
७. तीर्थ शिवोम् शरण में आई, मैं दुखियारी शरण में आई।
मोरी नैया कर दो पार, प्रभु तुम सुनत नहीं काहे ॥

(५)

१. जब नाम हुआ अन्तर जाग्रत, वह होता इक चिंगारी है।
करता है भस्म वह कर्मों को, ज्यों आग बनी चिंगारी है ॥
२. जब गुरुकृपा से नाम मिले, शक्ति से युक्त वह होता है।
हो अन्तर्मुखी प्रकाशित वह, बनता वह इक चिंगारी है।
है नाम नहीं केवल अक्षर, अन्तर शक्ति ही नाम कहो ।
३. जब जगती शक्ति अन्तर में होती वह इक चिंगारी है ||

४. संकल्प गुरु से अगन जले, होता परकाशित नाम तभी ।
और होवत कर्मों के ताई, जैसे अग्नि चिंगारी है ।
५. ईश्वर ही सङ्घा सद्गुरू है, और वही जलाता अग्नि है ।
ईश्वर ही स्वामी अग्नि का, बनता वह ही चिंगारी है

(६)

१. ऐसा क्या मुझ से कुछ होया, एक बार प्रभु झांक न पायो ।
मन का थाल परोसे बैठी, एक बार न आ कर खायो ।।
२. मन की दशा भई है ऐसी, गान ध्यान कुछ सूझत नाहीं ।
करत प्रयास मैं गुण गावन को, न अब मुझ से जात है गायो ॥
३. प्रेम दीवानी मस्त हुई मैं, पूजा पाठ भी होवत नाहीं ।
प्रियतम फिर भी नहीं पसीजा, एक बार मुख नाहीं दिखायों ॥
४. प्रियतम ऐसो मन में बैठा, ध्यान छुड़ाए, छूटत नाहीं ।
हर दम आस लगी दर्शन की, आवन से प्रभु काय लजायो ॥
५. बार बार मैं रही बुलावत पर प्रभु आवत नाहीं ।
किस से उलझ गयो मेरा प्रियतम, जो अब उस से जात न आयो ।
६. मैं तो हट न सकूं तेरे द्वारे, तुमहिं संग मन लागा ।
क्यों बिसरायों तुम ने मुझ को, मन से कैसे हटायो ।
७. तीर्थ शिवोम् मगन भई ऐसी, दे जे मन न जाए।
अब तो प्रियतम चरणों में ही, घर है लिया बनायो ।

(७)

१. पीव मोरे ! मोरा सौहाग लौटा दो।
मैं दर्भागिन बन बन भटकत, मोरा सौहाग लौटा दो ।।
२.दूजे पुरुष की सेवा करती, वह कहलाती कुलटा नारी ।
तुम्हें छोड़ जग में हूं डूबी मोरा सौहाग लौटा दो ॥
३. तुम्हें भुलाकर, मैं दुखियारी, चैन नहीं है पाया मैं ने ।
अब तो कृपा करो मेरे प्रभुजी, मोरा सौहाग लौटा दो ॥
४. तुमरी दर्श बिन भई बावरी, मन को पल विश्राम नहीं है
राह तुम्हारा देखत हारी, मोरा सौहाग लौटा दो ||
५. माया का परदा हट जाय, पीव मेरा मुझ को मिल जाय ।
सेज पिया का मैं सुख पाऊं, मोरा सौहाग लौटा दो ॥
६. हाथ जोड़ विनती तुम आगे, करो अनुग्रह मो पर प्रियतम ।
पश्चाताप अगन में जलती, मोरा सौहाग लौटा दो ॥
तीर्थ शिवोम् जगत दुखियारी, पापिन कुलटा हूं मैं नारी ।
७. प्रभु तुम अपनी बिरद सम्भारों, मोरा सौहाग लौटा दो ॥

(८)

१. प्रभु तुम आय, मोहे संभारो ।
काय करूं कछु सूझत नाहीं, चारों और अंध्यारो ।।
२. आवत चाहूं, आय सकूं न, ऐसी दुर्बल नारी ।
करना चाहूं, कर न पाऊं, आशा एक तुम्हारो ॥
३. मुझ को एक भरोसा तुमरा, और भरोसे त्यागे

आई आशा लिए तेरे द्वारे, लीजो मोहे उबारो ॥

४. साधन पर अभिमान नहीं है, अपने पर भी नाही.

तुम ही सब पुरुषारथ कारण, शरणी आई तुम्हारो ॥

५. तीर्थ शिवोम् पड़ी चरणों में, प्रभु जी मुझे सम्भालों ।

आगे जैसी मौज तुम्हारी, मारो चाहे तारो ॥

(९)

१. हरे कृष्ण बोल मनवा, हरे कृष्ण बोल तू ।

राम सिमर ले प्यारे, हरे कृष्ण बोल तू ।।

२. बाहर लक्ष्य हटाय कर, अन्तर लक्ष्य तू देय ।

राम नाम हिरदय बसे, हरे कृष्ण बोल तू ॥

३. आया था हरि नाम को, लगा जगत के काज ।

हरि नाम मन देय कर, हरे कृष्ण बोल तू ॥

४. लूटा जाय जो तुझे, हरि नाम तू लूट ।

नहीं तो पछताना पड़े, हरे कृष्ण बोल तू ॥

५. मानव सोता तू रहा, जनम अकारथ कीन ।

राम नाम सम्मुख रहे, हरे कृष्ण बोल तू ।।

६. माया मरती न कभी, मरता सदा शरीर ।

आशा तृष्णा त्याग कर, हरे कृष्ण बोल तू ॥

७. मानुष तन जो पाया तूने है दुर्लभ यह देह ।

ममता मैं तू क्यों रमा, हरे कृष्ण बोल तू ॥

८. जो आया थिर न रहा, गए अन्त तज देह ।

मनवा-जनम सुधार तू, हरे कृष्ण बोल तू ॥

९. विरला जाने भेद यह, माया छाया एक।
तू मन इस में न लगा, हरे कृष्ण बोल तू ॥
१०. नहीं भरोसा देह का, जाय पल में एक।
काहे जग मन देत है, हरे कृष्ण बोल तू ॥
११. बिनस जात सारा जगत, न विनसे इक राम।
ता गति पावन के लिए, हरे कृष्ण बोल तू ॥
१२. तीर्थ शिवोम् कहत रहा, समझाय समझाय।
आसक्ति का त्याग कर हरे कृष्ण बोल तू ।।

(१०)

१. जगत में सब कोई दुख पावे।
राम न चिह्नित अन्तर्मन में, दुख में जनम गवावे ॥
२. सब जग धावत सुख के पीछे, जीवन दुख में जावे।
अन्तर्सुख है, बाहर खोजे, क्योंकर सुख को पावे ॥
३. गुरु कृपा बिन समझ न आवत, कृपा से शक्ति पावे।
सुख दुख दोनों सम कर जाने, तब आतम सुख पावे ||

(११)

१. प्रभु मैं, तुम को कैसे पाऊं कैसे विषय हटाऊं।
भोगों से छुटकारा नाही, सम्मुख कैसे आऊं॥
२. मनवा आशाओं में उलझा, मन से निकलत नाहीं।
चंचल चपल बना है ऐसा, कैसे समझा पाऊं॥
३. कैसे खोजूं, मैं आराधूं, कुछ भी सोच न पाता।
राम ही मेरे प्राण अधारा, राम ही में चित्त लाऊं॥
४. राम ही मेरे आगे पीछे, वही सम्भालन हारा।
उठत, बैठत, हर दम मनवा, राम नाम सुख पाऊं॥
५. तृष्णा मोहे राम राम नाम की, राम ही में मन लागा।
राम नाम बिन कछु न सुहावे, राम तजि अन्य न जाऊं॥
६. तीर्थ शिवोम् राम मन रंग्या, राम रंग अजब अनूठा।
राम नाम की लटक लगी मोहे, राम ही अनंद मनाऊं॥

(१२)

१. कण कण में व्यापक मेरा प्रियतम, कौन कहत कि दीखत नाहीं।
जीव बना माया के अन्दर, ता ते प्रभु है दीखत नाहीं॥
२. हुई अमावस चन्द्र न दीखत, पर वह है वैसे का वैसा।
जीव ही आया परदे माहीं, ता ते चन्द्र है दीखत नाहीं॥
३. जब तक मुंह न फेरे जग से, भासित होते भोग तभी।
मोह त्याग कर परदा हट जाए, फिर प्रभु कैसे दीखत नाहीं॥
४. अभी संभल तू मेरे भाई, प्रभु चरणों में मन को लगा।

कण कण व्यापक राम मेरा है, बिन गुरु कृपा दीखत नाहीं ॥
५. है तीर्थ शिवोम् शरण तेरी, अपना अनुभव मुझ को दीजो ।
बिन किरिपा निर्मलता नाहीं, बिन निर्मलता दीखत नाहीं ॥

(१३)

१. केशव जगत ने बहुत सतायो ।
बारम्बार उठा कर ऊंचे, फिर नीचे पटकायो ॥
२. अपना स्वारथ सब ने कीनो, समय पड़े छिटकाए ।
मीठा-मीठा बन कर मोसे, अपना काम करायो ।।
३. जब मैं मन का दुखड़ा रोती, तब सुनता न कोई ।
उल्टे लांछन मुझे लगावें, मनवा बहुत दुखायो ॥
४. जब मैं तेरा नाम सुनाती, न कोई सुनने हारा ।
पागल कह कह मुझे पुकारें, मूरख मुझे बनायो ॥
५. केशव तेरा जगत अनोखा, जो भी इस में आया ।
दुख ही पाया उस ने आ कर दुख ही गले लगायो ।।
६. तीर्थ शिवोम् संभालो जग को, तू ने इसे बनाया ।
अजब अनोखी माया इस की, माया ने उपजायो

(१४)

१. जगत में भीड़ ही बढ़ती जाए।
जहां देखो तहां लोग ही दीखत, समझ न कोई पाए ।
२. मारग चलना कठिन हो रहा, इक दूजा टकराए।
रगड़ा कर टकरा कर ही तो, जीव चलत है पाए ।
३ कहां से आए लोगन एते, कहां वह बैठ बनाए ।
कहां से है सामाना जुटाता, कहां बैठ कर पाए ।

४परदिन जात बढ़त है, कमी कहीं न आवे ।
अब तो आप समेटो, जीय रहा अकुलाए ।
झाड़ू अजब अनोखा, करत साफ जब फिरता ।
मत कही न जावे, लोगन साफ हो जावे ॥
मगन है मन में, करत राम का सिमरन ।
बाकी की माया, वही देखत है, यूं ही जीव भ्रमाए ।

(१५)

१.तू सिमरत राम है नाहीं, तेरी उमरिया बीतत जाई ।
राम भजन तू नाही कीना, मन में सुख न पाई ॥
२.विषय भोग में तू भरमाया, बहु परिवार जमाया।
सुख का मुंह तू देख न पाया, यूं ही उमर गंवाई ॥
३. जग के पीछे लग कर तूने, अपना समय निकाला।
अभी चेत अरे मन मूरख, समझ तुझे न आई ॥
४.मद में चूर है भूला फिरता, क्रोध लोभ मन माहीं ।
अन्त समय जब सिर पर आवे, रहत यूं ही पछताई ॥
५.मनवा तेरा ऐसा चंचल, राह भटका ज्यों प्राणी ।
अब तो थिर मन बैठे तू, थिरता राम समाई ॥
६.शिवोम् राम जप मनवा, तोही सुख पावेगा ।
नहीं तो जीवन जात है विरथा, माखन ज्यों विष जाई ॥

(१६)

१.है मानुष जन्म हुआ प्रापत, तुझे अवसर यह अनुपम दीनो ।
छूटन की तेरी बारी है, यह कृपा अपार प्रभु कीनो ॥
२.इस जोगा तेरा मन था ही नहीं, पर प्रभु किरिपा कर दे ही दिया ।
अब चूक न जाए यह अवसर, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ॥
३. मन तेरा जाय न भोगों में, बस लगा रहे प्रभु चरणों में ।
इस बात को भुला न तू मन से, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ॥
४. भव सागर पार उतर जाना, यह ही कारज है प्रथम तेरा ।
हरि सिमरन पार लगाए तुझे, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ॥
५. हरि सेवा समझ तू कर्म करे, और जीवों का उपकार करे ।
इस से ही नैया पार लगे, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ।।
है विनय शिवोम् प्रभु आगे, है वृथा न जाय जनम कहीं ।
प्रभु प्रेम मुझे अपना दीजो, उपकार प्रभु अनुपम कीनो ।।

(१७)

१. जब भूख लगे है खाने की, तब जीव भागता भोजन को ।
तब तक है भूख न शान्त बने, कर लेता नाहीं भोजन को ॥
२. जब तृष्णा जागे विषयों की, मन को भटकाती भरमाती ।
तब होवत व्याकुल भोग लिए, तब धावत जीव है विषयन को ॥
३. है जीव भटकता सुख पीछे, है तृष्णा मन में बनी हुई ।
सुख मिलता नाहीं है जग में, जाए विषयन मे खोजन को ॥
४. भोजन विषयन में ही जीवन, है बीता जाता मानुष का ।

बस भोगों पीछे रहत पड़ा, जाय न आतम खोजन को ॥

अब तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर, यह जनम न ऐसे जाय कहीं ।

है बीता सो तो बीत गया, कुछ विषयन में, कुछ भोजन को ||